



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग III — खण्ड 4

PART III—Section 4

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 95]

नई दिल्ली, शुक्रवार, जून 2, 2006/ज्येष्ठ 12, 1928

No. 95]

NEW DELHI, FRIDAY, JUNE 2, 2006/JYAISTHA 12, 1928

पंजाब विश्वविद्यालय

अधिसूचना

चण्डीगढ़, 30 मई, 2006

सं. 2-2006/जीआर

केन्द्रीय सरकार (मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शिक्षा-विभाग) ने अपने पत्रांक फा. सं. 2-5/2005 यू.-II, दिनांक 13-9-2005 के द्वारा निम्नलिखित विनियमों को अनुमोदन प्रदान कर दिया है :-

1. 'कम्प्यूटर के अनुप्रयोग में स्नातकोत्तर' उपाधि (एम.सी.ए.) (सेमेस्टर पद्धति) परीक्षाओं के विनियम, जिसे सत्र 2001 से लागू कर दिया है और जिसका उल्लेख पंजाब विश्वविद्यालय के कैलेंडर के खण्ड-II, 2002 में है, विश्वविद्यालय के विभिन्न निकायों/भारत सरकार/भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशन की प्रत्याशा में किया गया संशोधन

1. 'कम्प्यूटर के अनुप्रयोग में स्नातकोत्तर उपाधि' के पाठ्यक्रम की अवधि के तीन शैक्षणिक सत्र होंगे जिनमें छह सेमेस्टर समाहित होंगे।

विभिन्न सेमेस्टरों की परीक्षाएं उन तिथियों पर होंगी जिनको सिडिकेट समय-समय पर तय करेगी।

2.1. प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए न्यूनतम योग्यता होगी—

(i) पंजाब विश्वविद्यालय की 10 + 2 + 3

पद्धति की किसी भी अनुशासन की स्नातक परीक्षा में न्यूनतम 50 प्रतिशत प्राप्तांक हों।

(ii) पंजाब विश्वविद्यालय के द्वारा उपर्युक्त परीक्षा के समकक्ष घोषित किसी भी परीक्षा में न्यूनतम 50 प्रतिशत प्राप्तांक हों।

2.2. प्रवेश प्रथम वर्ष के प्रथम सेमेस्टर में ही होगा। इसके लिए वही नियम लागू होंगे जिनको समय-समय पर सिडिकेट बनाएगी।

3. प्रत्येक विद्यार्थी को एम.सी.ए. पाठ्यक्रम में प्रवेश पाने और प्रत्येक वर्ष की प्रत्येक सेमेस्टर परीक्षा के लिए शुल्क के रूप में सिडिकेट/सीनेट के द्वारा समय-समय पर तय की गई राशि देनी पड़ेगी।

परीपक्षीया देने वाले किसी भी अभ्यर्थी को प्रति प्रश्न पत्र के हिसाब से परीक्षा दिए जाने वाले प्रश्न पत्रों के लिए वह परीक्षा शुल्क देना होगा जो अधिकतम पूरे सेमेस्टर का हो सकता है, जिसे सिडिकेट/सीनेट ने समय-समय पर तय किया होगा तथा यह परीक्षा शुल्क सेमेस्टर परीक्षा शुल्क, यदि कोई हो के अतिरिक्त होगा।

4. प्रत्येक सेमेस्टर परीक्षा के आरंभ होने से पहले कम्प्यूटर विज्ञान तथा अनुप्रयोग विभाग का अध्यक्ष उन अभ्यर्थियों की सूची परीक्षा नियंत्रक को भेजेगा जिनके विषय में वह संतुष्ट हो गया होगा कि वे सभी नियमों और विनियमों को पूरा करते हैं और परीक्षा देने के योग्य हैं।

5. प्रत्येक सेमेस्टर की समाप्ति पर प्रत्येक अभ्यर्थी को पूरी परीक्षा में अथवा उन प्रश्न पत्रों में परीक्षा देनी होगी, जिनको समय-समय पर पाठ्यक्रम समिति ने पाठ्यक्रम/लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए तय किया हो तथा जिन्हें विश्वविद्यालय के अधिकारियों से अनुमोदन प्राप्त हो गया हो। शिक्षा और परीक्षा का माध्यम अंग्रेजी भाषा होगी।

6.1. पहले और दूसरे सेमेस्टर परीक्षा में वे नियमित अभ्यर्थी

(i) सम्मिलित हो सकेंगे जो परीक्षा से पहले और दूसरे सेमेस्टर में कम्प्यूटर विज्ञान और अनुप्रयोग विभाग में नियमित विद्यार्थी रहे हैं।

(ii) जिस अभ्यर्थी ने प्रथम एवं द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षा के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम के प्रत्येक विषय की

प्रयोगात्मक वर्ग में कम से कम 75 प्रतिशत उपस्थिति प्राप्त की है। दिए गए व्याख्यान और प्रयोगात्मक कक्षाओं से 10 प्रतिशत की कमी को विभागाध्यक्ष की संस्तुति पर पाठ्यक्रम समिति माफ कर देगी।

6.2. वही विद्यार्थी पहले और दूसरे सेमेस्टर की परीक्षा दे सकेंगे जो नियमित विद्यार्थी रहे होंगे तथा—

- (i) जो परीक्षा से ठीक पहले वाले पहले और दूसरे सेमेस्टर में कम्प्यूटर विज्ञान तथा अनुप्रयोग विभाग का नियमित विद्यार्थी रहा हो,
- (ii) जो पहले और दूसरे सेमेस्टर की परीक्षा के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम के प्रयोगक विषय को सैद्धांतिक और प्रायोगिक कक्षाओं में कम से कम 75 प्रतिशत उपस्थित रहा हो, किंतु विभाग के अध्यक्ष की संस्तुति पर बोर्ड ऑफ स्टडीज के द्वारा कुल दिए गए व्याख्यानों और कुल किए गए प्रयोगों के 10 प्रतिशत की अनुपस्थिति को माफ किया जा सकता है।
- (iii) जिस विद्यार्थी ने प्रत्येक विषय के आंतरिक मूल्यांकन में कम से कम 40 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हों।

6.3. तीसरे तथा चौथे सेमेस्टर की परीक्षा देने के लिए वही विद्यार्थी अधिकृत होगा—

- (i) जो विद्यार्थी परीक्षा से ठीक पहले वाले क्रमशः तीसरे और चौथे सेमेस्टर में कम्प्यूटर विज्ञान तथा अनुप्रयोग विभाग में नियमित विद्यार्थी रहा हो;
- (ii) जिसने पहले और दूसरे सेमेस्टर की परीक्षा को उत्तीर्ण कर लिया हो अथवा जो विनियम 9 में दिए गए प्रावधान के अनुसार तीसरे और चौथे सेमेस्टर की परीक्षा देने का अधिकारी हो;
- (iii) जो तीसरे और चौथे सेमेस्टर की परीक्षा के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम के प्रत्येक विषय के कुल दिए गए सैद्धांतिक व्याख्यानों और प्रयोगों में कम से कम 75 प्रतिशत उपस्थित रहा हो, इस प्रावधान के साथ कि विभाग के अध्यक्ष की संस्तुति के आधार पर बोर्ड ऑफ स्टडीज कुल दिए गए सैद्धांतिक व्याख्यानों तथा प्रयोगों की 10 प्रतिशत कमी को माफ कर सकता है;
- (iv) जिसने प्रत्येक विषय के आंतरिक मूल्यांकन में कम से कम 50 प्रतिशत अंक प्राप्त कर लिए हों।

6.4. वही अभ्यर्थी पांचवें और छठे सेमेस्टर की परीक्षा देने का अधिकारी होगा—

- (i) जो परीक्षा से ठीक पहले वाले पांचवें और छठे सेमेस्टर में कम्प्यूटर विज्ञान तथा अनुप्रयोग विभाग में नियमित विद्यार्थी रहा हो;
- (ii) जिसने पहला, दूसरा, तीसरा तथा चौथा सेमेस्टर उत्तीर्ण कर लिया हो या विनियम 9 के प्रावधानों के अधीन पांचवें तथा छठे सेमेस्टर की परीक्षा देने के सर्वथा योग्य हो;
- (iii) जिसने तीसरे वर्ष की परीक्षा के लिए पांचवें तथा छठे सेमेस्टर के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम के सभी विषयों के व्याख्यानों तथा प्रयोगों में अलग-अलग रूप से कम से

कम 75 प्रतिशत उपस्थित रहा हो, साथ ही यह भी प्रावधान है कि विभाग के चेयरमैन की संस्तुति पर पाठ्यक्रम समिति वास्तविक रूप में दिए गए कुल व्याख्यानों तथा किए गए कुल प्रयोगों में उपस्थिति की 10 प्रतिशत कमी को क्षमा कर सकती है;

(iv) जिसने प्रत्येक विषय के आंतरिक मूल्यांकन में कम से कम 40 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हों।

7. प्रत्येक मामले में पहले, दूसरे, तीसरे, चौथे, पांचवें तथा छठे सेमेस्टर में परीक्षा देने तथा उसे उत्तीर्ण करने के लिए कम से कम आवश्यक के अंक इस प्रकार होंगे :

- (i) परीक्षा के प्रत्येक विषय के आंतरिक मूल्यांकन में स्वतंत्र रूप से, चाहे सैद्धांतिक भाग हो या प्रयोगात्मक भाग परियोजनापरक कार्य आदि को सम्मिलित करते हुए 40 प्रतिशत प्राप्तांक अवश्य होने चाहिए, तभी पहले, दूसरे, तीसरे, चौथे, पांचवें तथा छठे सेमेस्टर की परीक्षा देने की अनुमति मिलेगी; तथा
- (ii) पहले, दूसरे, तीसरे, चौथे, पांचवें तथा छठे सेमेस्टर की परीक्षा देने की अनुमति के लिए, विश्वविद्यालय के द्वारा आयोजित परीक्षा के प्रत्येक विषय में स्वतंत्र रूप से, चाहे वह सैद्धांतिक हो या प्रायोगिक (परियोजना-कार्य आदि को सम्मिलित करते हुए) कुल आंतरिक मूल्यांकन के 50 प्रतिशत प्राप्तांक;

यदि कोई परीक्षार्थी पहले, दूसरे, तीसरे, चौथे, पांचवें तथा छठे सेमेस्टर में, प्रत्येक विषय में स्वतंत्र रूप से आंतरिक मूल्यांकन में 40 प्रतिशत अंक प्राप्त नहीं कर पाता है, तो उसे आगामी सत्र में वह विषय फिर से पढ़ना होगा, फिर से एसाइनमेंट्स देने होंगे, कक्षा में टेस्ट देने होंगे तथा सेमिनार देने होंगे, जिनका प्रावधान उस सेमेस्टर के लिए बोर्ड ऑफ स्टडीज के द्वारा किया गया हो, तभी वह विश्वविद्यालय की परीक्षा दे सकेगा। इसके साथ शर्त यह है कि विद्यार्थी को कोर्स की सभी आवश्यक शर्तों को पूरा करना होगा तथा निर्धारित अधिकतम अवसरों में तथा निर्धारित अकादमिक पांच सत्रों के भीतर ही हो, जो कोर्स में उसके मूल रूप में उसके प्रवेश की तिथि से गिने जाएंगे, सभी निर्धारित परीक्षाओं को उत्तीर्ण करना होगा, तभी वह उपाधि को प्राप्त करने का अधिकारी होगा;

(iii) यदि किसी विद्यार्थी के लिए परीक्षा पुनः एक प्रश्न-पत्र/प्रश्न पत्रों में देय हो जाती है तो उसे वह परीक्षा अन्य नियमित विद्यार्थियों के साथ ही पुनः परीक्षार्थी के रूप में देनी होगी। इस संदर्भ में कोई विशेष परीक्षा उसके लिए आयोजित नहीं की जाएगी।

8. पहले, दूसरे, तीसरे, चौथे, पांचवें और छठे सेमेस्टर की परीक्षाओं में, स्थिति के अनुसार सभी विषयों के अंकों के कुल योग के एक प्रतिशत अंक कृपांक के रूप में दिए जाएंगे। कोई भी परीक्षार्थी अपने लाभ की दृष्टि से इन कृपांकों का उपयोग प्राप्तांकों के कुल योग में या अलग-अलग प्रश्न पत्रों के प्राप्तांकों में कर सकता है। ध्यान रहे कि कृपांकों का उपयोग केवल परीक्षा को उत्तीर्ण करने के लिए या उच्चतर श्रेणी को प्राप्त करने के लिए ही किया जा सकता है, आंतरिक मूल्यांकन को और अच्छा बनाने तथा परीक्षा को विशेष योग्यता के साथ उत्तीर्ण करने के लिए नहीं।

9. कोई भी विद्यार्थी उपाधि प्राप्त करने का अधिकारी तभी बनेगा जब वह इस पाठ्यक्रम की सभी शर्तों को पूरा कर लेगा और निर्धारित सभी परीक्षाओं को अधिक से अधिक पांच शैक्षणिक सत्रों में, इस पाठ्यक्रम में प्रवेश की तिथि से, उत्तीर्ण कर लेगा। इसके साथ शर्त यह भी है कि निम्नलिखित प्रावधानों के अनुसार किसी भी विद्यार्थी को एक या एक से अधिक विषयों में पुनः परीक्षा देने की अनुमति दी जा सकती है :

- (i) यदि कोई विद्यार्थी विनियम 7(i) के प्रावधानों के अनुसार पहले और दूसरे सेमेस्टर की परीक्षा में प्रत्येक विषय के आंतरिक मूल्यांकन में वांछनीय अंक प्राप्त कर लेता है, पहले और दूसरे सेमेस्टर की परीक्षा को देता है और विनियम 7 (ii) के प्रावधान के अधीन परीक्षा को उत्तीर्ण नहीं कर पाता है तो उसे दूसरे वर्ष के तीसरे सेमेस्टर की पढ़ाई करने की अनुमति होगी। तथा पहले और दूसरे सेमेस्टर की परीक्षा में सभी विषयों या कुछ विषयों में पुनः परीक्षा, तीसरे और चौथे सेमेस्टर की परीक्षा के विषयों के साथ देनी होगी। विद्यार्थी को उन्हीं विषयों में पुनः परीक्षा देने के लिए अधिकृत माना जाएगा, जिनमें उसने विश्वविद्यालय के द्वारा आयोजित परीक्षा वाले भाग तथा आंतरिक मूल्यांकन वाले भाग के अंकों के कुल योग के कम से कम 50 प्रतिशत अंक प्राप्त कर लिए हों (आंतरिक मूल्यांकन को अंक पहले वाले ही माने जाएंगे, दुबारा आंतरिक मूल्यांकन नहीं होगा।) यदि वह पहले और दूसरे सेमेस्टर की परीक्षा को उत्तीर्ण नहीं कर पाता/पाती है, तो उसे तीसरे वर्ष के पाठ्यक्रम के पांचवें सेमेस्टर में पढ़ाई करने की अनुमति नहीं मिलेगी तथा तीसरे और चौथे सेमेस्टर की परीक्षा का उसका परिणाम तब तक रोका रखा जाएगा, जब तक वह पहले और दूसरे सेमेस्टर की परीक्षा के लिए निर्धारित सभी विषयों में उत्तीर्ण नहीं हो जाता/जाती।
- (ii) यदि कोई विद्यार्थी विनियम 7(i) के प्रावधानों के अनुसार दूसरे वर्ष की परीक्षा के लिए तीसरे और चौथे सेमेस्टर के सभी विषयों के आंतरिक मूल्यांकन में अनिवार्य अंक नहीं प्राप्त कर पाता है, और विनियम 7(ii) के प्रावधान के अधीन दूसरे वर्ष में तीसरे और चौथे सेमेस्टर की परीक्षा देता है और उसमें उत्तीर्ण नहीं हो पाता है तो उसे तीसरे वर्ष में पांचवें सेमेस्टर की पढ़ाई जारी रखने की अनुमति होगी और उसकी पांचवें और छठे सेमेस्टर की परीक्षा के सभी विषयों के साथ-साथ तीसरे और चौथे सेमेस्टर की परीक्षा के सभी या कुछ विषयों की फिर से परीक्षा देने की अनुमति होगी।

विद्यार्थी उन्हीं विषयों की फिर से परीक्षा दे सकेगा, जिन विषयों में विश्वविद्यालय की परीक्षा वाले भाग तथा आंतरिक मूल्यांकन वाले भाग के कुल अंकों के पच्चास प्रतिशत अंक उसे प्राप्त हुए हों (आंतरिक मूल्यांकन के अंक पहले वाले ही माने जाएंगे, ये अंक दुबारा नहीं दिए जाएंगे)। यदि वह तब भी तीसरे और चौथे सेमेस्टर की परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो पाता/पाती है तो पांचवें और छठे सेमेस्टर की परीक्षा का उसका परिणाम तब तक रोककर रखा जाएगा, जब तक

कि वह तीसरे और चौथे सेमेस्टर की परीक्षा में निर्धारित सभी विषयों में उत्तीर्ण नहीं हो जाता/जाती।

- (iii) यदि कोई विद्यार्थी विनियम 7(i) के प्रावधान के अधीन तीसरे वर्ष के पांचवें और छठे सेमेस्टर के सभी विषयों के आंतरिक मूल्यांकन वाले भाग में निर्धारित अनिवार्य अंक प्राप्त कर लेता है, विनियम 7(ii) के अधीन पांचवें और छठे सेमेस्टर की परीक्षा देता है लेकिन अनुत्तीर्ण रहता है, तो उसे पांचवें और छठे सेमेस्टर के सभी विषयों में फिर से परीक्षा देने की अनुमति मिल सकती है। वह उन्हीं विषयों में फिर से परीक्षा देने के लिए अधिकृत होगा/होगी, जिनमें उसने विश्वविद्यालय की परीक्षा वाले भाग तथा आंतरिक मूल्यांकन वाले भाग के कुल योग के 50 प्रतिशत अंक प्राप्त कर लिए हों (आंतरिक मूल्यांकन के अंक पहले वाले ही रहेंगे, ये अंक दुबारा नहीं दिए जाएंगे।)

10. एम.सी.ए. के विषयों के लिए कुलपति, बोर्ड ऑफ स्टडीज की संस्तुति पर प्रश्न-पत्र निर्माताओं की नियुक्ति करेगा।

11. सभी विषयों के परीक्षक, वे चाहे बाह्य हों या आंतरिक, बोर्ड ऑफ स्टडीज की संस्तुति के आधार कुलपति के द्वारा नियुक्त किए जाएंगे। परियोजना कार्य का मूल्यांकन कुलपति के द्वारा नियुक्त तीन आंतरिक परीक्षकों की एक समिति के द्वारा किया जाएगा।

12. परीक्षाओं का परिणाम परीक्षा के द्वारा तैयार और प्रकाशित किया जाएगा।

13. उत्तीर्ण परीक्षार्थियों का श्रेणी-विभाजन निम्नलिखित रूप में होगा।

- (i) सभी पहले, दूसरे, तीसरे, चौथे, पांचवें और छठे सेमेस्टर की परीक्षाओं के पूर्णांकों के योग के 75 प्रतिशत या इससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले परीक्षार्थियों को विशेष योग्यता के साथ प्रथम श्रेणी में रखा जाएगा, लेकिन शर्त यह है कि परीक्षार्थियों को पहले प्रयास में ही सभी विषयों/परीक्षाओं को उत्तीर्ण कर लेना होगा।
- (ii) सभी पहले, दूसरे, तीसरे, चौथे, पांचवें और छठे सेमेस्टर की परीक्षाओं के कुल अंकों के योग के 60 प्रतिशत या उससे अधिक और 75 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने वाले परीक्षार्थियों को प्रथम श्रेणी में रखा जाएगा।
- (iii) सभी पहले, दूसरे, तीसरे, चौथे, पांचवें और छठे सेमेस्टर की परीक्षाओं के कुल अंकों के योग के 60 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने वाले सभी परीक्षार्थियों को द्वितीय श्रेणी में रखा जाएगा।

2. एम. बी. ए. (अंशकालीन) के नाम में एम. बी. ए. (कार्यकारी) के रूप में सत्र 2002-2003 ई. से परिवर्तन, जिसे विश्वविद्यालय के विभिन्न निकायों/भारत सरकार के अनुमोदन/भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशन की प्रत्याशा में प्रभावी बनाया गया।

3. वाणिज्य-स्नातक परीक्षा (सामान्य तथा प्रतिष्ठापूर्ण) से संबंधित तथा पंजाब विश्वविद्यालय के कैलेंडर, भाग-II, 2000 ई. के पृष्ठ 305 पर दिए गए (सत्र 2002 ई. से प्रभावी) विनियम सं. 26 में परिवर्द्धन, जिसे पंजाब विश्वविद्यालय के विभिन्न निकायों/भारत सरकार के अनुमोदन/भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशन की प्रत्याशा है।

26. किसी भी संबद्ध महाविद्यालय का कोई भी नियमित विद्यार्थी किसी ऐसे विषय को चुन सकता है, जिसमें ऑनर्स भी सम्मिलित है, जिसमें उसका महाविद्यालय मान्यता प्राप्त या संबद्ध नहीं है, जिसे वह किसी अन्य संबद्ध महाविद्यालय में पढ़ रहा है; इस दशा में उस दूसरे महाविद्यालय का प्राचार्य यह प्रमाणित करेगा कि वह विद्यार्थी उस विषय में आवश्यक संख्या में व्याख्यानों आदि में उपस्थित रहा है। जिस महाविद्यालय में उस विद्यार्थी ने प्रवेश प्राप्त किया है, उस महाविद्यालय का प्राचार्य इसकी संपुष्टि के लिए परीक्षा नियंत्रक को सूचित करेगा।

4. पंजाब विश्वविद्यालय के कैलेंडर, खंड-II, 2000 ई. के पृष्ठ 127-128 पर दिए हुए एम.एस-सी. (द्वि-वार्षिक) (सेमेस्टर पद्धति) के प्रवेश से संबंधित विनियम सं. 2 में परिवर्द्धन (सत्र 2001-2002 ई. से प्रभावी), जिसे पंजाब विश्वविद्यालय की विभिन्न निकायों/भारत सरकार के अनुमोदन/भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशन की प्रत्याशा है।

2. जिस व्यक्ति ने निम्नलिखित में से किसी एक परीक्षा को उत्तीर्ण कर लिया है, वह एम. एस-सी. (सेमेस्टर पद्धति) में प्रवेश पाने का पात्र होगा।

X X X

जंतु विज्ञान

पंजाब विश्वविद्यालय की, जंतु विज्ञान विषय के साथ, बी.एस-सी. उपाधि, या इसके सिडीकेट के द्वारा मानी हुई किसी अन्य विश्वविद्यालय की समकक्ष उपाधि, जिसमें कम से कम 50 प्रतिशत प्राप्तांक हों।

5. पंजाब विश्वविद्यालय के कैलेंडर खंड-II, 2000 ई. के पृष्ठ 78-80 पर दिए हुए विनियम 3.1, जिसका संबंध मास्टर ऑफ आर्ट्स परीक्षा से है, में निम्नलिखित रूप में संशोधन, जिसे विश्वविद्यालय की अनेक निकायों/भारत सरकार के अनुमोदन/भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशन की प्रत्याशा है।

- 3.1 एम. ए. (भाग-I) के प्रथम वर्ष में वही विद्यार्थी प्रवेश ले सकता है, जिसने लाहौर स्थित पंजाब विश्वविद्यालय से 1948 ई. से पूर्व, या किसी अन्य विश्वविद्यालय से निम्नलिखित परीक्षाओं में से कोई परीक्षा उत्तीर्ण कर ली हो, जिसे पंजाब विश्वविद्यालय ने अपनी परीक्षा के समकक्ष मान लिया हो :-

X X X

एम. ए. भाग-I (फ्रेंच) में वही विद्यार्थी प्रवेश पा सकता है :-

- (i) जिस विद्यार्थी ने बी.ए./बी.एस-सी./बी.कॉम./बी.बी.ए./बी.सी.ए. या ऑनर्स (10+2+3 शिक्षा पद्धति से) परीक्षा उत्तीर्ण कर ली हो तथा पंजाब विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय से न्यूनतम 45 प्रतिशत प्राप्तांकों के साथ फ्रेंच में एडवान्स डिप्लोमा कर लिया हो।
या
(ii) जिस विद्यार्थी ने पंजाब विश्वविद्यालय या किसी अन्य विश्वविद्यालय से बी.ए./बी.एस-सी./बी.कॉम./बी.बी.ए./बी.सी.ए. (10+2+3 शिक्षा पद्धति से) परीक्षा फ्रेंच के ऐच्छिक विषय या फ्रेंच में आनर्स के साथ कम से कम 45% प्राप्तांकों के साथ उत्तीर्ण कर ली हो।

- (iii) जिस किसी विद्यार्थी ने बी.ए./बी.एस-सी./बी.कॉम./बी.बी.ए./बी.सी.ए. या ऑनर्स (10+2+3 शिक्षा पद्धति के अधीन) तथा फ्रेंच नेशनल मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन के प्रदत्त एप्रोफॉन्डी लैंग्वेज फैंकाइज (डी.ए.एल.एफ. एडवांस्ड फ्रेंच लैंग्वेज डिप्लोमा) उत्तीर्ण कर लिया हो।

इसके अतिरिक्त धारा 2.1 के अधीन यह भी प्रावधान है कि -

कोई भी विद्यार्थी फ्रेंच विषय में एम.ए. के पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए तभी आवेदन कर सकता है कि जब उसे धारा 3.1(1) की शर्तों के अनुसार फ्रेंच भाषा का ज्ञान हो।

6. विश्वविद्यालय के विभिन्न निकायों/भारत सरकार के अनुमोदन/भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशन की प्रत्याशा में विनियम 2(2) में संवर्द्धन तथा एक वर्षीय उच्चतर वैज्ञानिक कम्प्यूटिंग (डी.ए.एस.सी.) (सत्र 2002-2003 से प्रभावी) से संबंधित विनियम।

2. इस डिप्लोमा में प्रवेश के लिए न्यूनतम योग्यता निम्नलिखित होगी -

- (i) पंजाब विश्वविद्यालय की विज्ञान के विषयों के साथ स्नातक उपाधि

या

- (ii) बी.ई./बी.टेक.

या

- (iii) कोई अन्य परीक्षा, जिसे पंजाब विश्वविद्यालय ने ऊपर लिखी हुई परीक्षाओं के समकक्ष मान लिया हो।

एक-वर्षीय उच्चतर वैज्ञानिक कम्प्यूटेशन (डी.ए.एस.सी.) डिप्लोमा से संबंधित विनियम सेमेस्टर पद्धति, जुलाई, 2002 के प्रवेश से

अवधि

1. उच्चतर वैज्ञानिक कम्प्यूटेशन (डी.ए.एस.सी.) डिप्लोमा के पाठ्यक्रम की अवधि एक वर्ष की होगी जिसमें दो सेमेस्टर रहेंगे। पहले सेमेस्टर की परीक्षा दिसंबर के महीने में और दूसरे सेमेस्टर की परीक्षा अप्रैल/मई के महीने में विश्वविद्यालय के सक्षम अधिकारियों के द्वारा समय-समय पर तय की गई तिथियों पर होगी।

प्रवेश

2. इस डिप्लोमा में प्रवेश के लिए न्यूनतम योग्यता होगी-

- (i) पंजाब विश्वविद्यालय की विज्ञान के विषयों के साथ स्नातक उपाधि

या

- (ii) पंजाब विश्वविद्यालय के द्वारा उपर्युक्त उपाधि के समकक्ष मानी गई कोई अन्य परीक्षा

3. प्रवेश डी.ए.एस.सी. में पहले सेमेस्टर में दिया जाएगा। प्रवेश उन्हीं नियमों के अधीन होगा जो विश्वविद्यालय के अधिकारियों के द्वारा समय-समय पर अनुमोदन प्राप्त होंगे।

4. डी.ए.एस.सी. में प्रवेश लेने वाले प्रत्येक विद्यार्थी को प्रत्येक शैक्षणिक सत्र के प्रत्येक सेमेस्टर में विश्वविद्यालय को वह प्रवेश तथा शिक्षा शुल्क देना होगा जो समय-समय पर विश्वविद्यालय के द्वारा तय किया गया होगा।

परीक्षा और मूल्यांकन

5. भौतिक विज्ञान विभाग का बोर्ड ऑफ कंट्रोल कुलपति के पास अनुमोदन के लिए एक समिति बनाने का प्रस्ताव भेजेगा, जिसका कार्यकाल दो वर्षों का होगा और जिसका संयोजक इस डिप्लोमा पाठ्यक्रम का संयोजक रहेगा।

भौतिक विज्ञान विभाग का अध्यक्ष इस डिप्लोमा पाठ्यक्रम के संयोजक की संस्तुति के आधार पर परीक्षा नियंत्रक के पास ऐसे विद्यार्थियों की सूची भेजेगा जो सभी नियमों को पूरा करते हैं और परीक्षा देने के लिए जिनकी पात्रता ठीक हो।

समय-समय पर भौतिक विज्ञान-विभाग का बोर्ड ऑफ कंट्रोल पाठ्यक्रम को परिवर्तित करता रहेगा।

6. वही विद्यार्थी पहले और दूसरे सेमेस्टर की परीक्षा दे सकेगा —

- (i) जो परीक्षा से ठीक पहले वाले इस डिप्लोमा पाठ्यक्रम के पहले या दूसरे सेमेस्टर में भौतिक विज्ञान विभाग का नियमित विद्यार्थी रहा हो।
- (ii) जो पहले और दूसरे सेमेस्टर के पाठ्यक्रम के प्रत्येक विषय की सैद्धांतिक और प्रायोगिक कक्षाओं में कम से कम 75% उपस्थित रहा हो। उपस्थिति में कमी को विश्वविद्यालय के नियमानुसार क्षमा किया जा सकता है।

7. उसी विद्यार्थी को डिप्लोमा में उत्तीर्ण होने का प्रमाण-पत्र मिलेगा जो अपने प्रवेश से आरंभ दो शैक्षणिक सत्रों में तय सही परीक्षाओं को उत्तीर्ण कर लेगा, लेकिन प्रावधान यह भी है कि किसी भी विषय में 40 प्रतिशत से कम अंक पाने वाले विद्यार्थी को उस विषयों में फिर से परीक्षा देने की अनुमति दी जा सकती है।

8. (i) सभी सैद्धांतिक प्रश्न पत्रों में आंतरिक मूल्यांकन होगा। प्रायोगिक पाठ्यक्रमों के लिए मूल्यांकन पूरी तरह आंतरिक परीक्षकों के द्वारा या बाह्य परीक्षकों को सम्मिलित करते हुए किया जा सकता है। इस पाठ्यक्रम के संयोजक की संस्तुति पर भौतिक विज्ञान विभाग का बोर्ड ऑफ कंट्रोल बाह्य परीक्षक की नियुक्ति करेगा।
- (ii) संयोजक/अध्यापक संबद्ध विषय/प्रश्न पत्र में वांछित स्तर बनाए रखने के लिए और विद्यार्थियों की निष्पादन-क्षमताओं का उस विषय/प्रश्न पत्र में मूल्यांकन करने के लिए उत्तरदायी होगा।
- (iii) सैद्धांतिक विषय/प्रश्न पत्र में 25% अंक सेमेस्टर के अंदर तथा 75% अंक सेमेस्टर के बाद की परीक्षा के लिए निर्धारित हैं।
- (iv) किसी भी प्रश्न पत्र की, सेमेस्टर के उपरांत की परीक्षा की, उत्तर पुस्तिका परीक्षार्थी उस समय देख सकते हैं जो समय विभाग/उसके अध्यापक ने तय किया होगा।
- (v) प्रयोगशाला-विषयक पाठ्यक्रम में 50% अंक सेमेस्टर के दौरान निर्धारित रहेंगे, जो निम्नलिखित बातों पर आधारित होंगे।
 - (अ) प्रयोग में वांछित परिणाम प्राप्त करने में विद्यार्थी के द्वारा दिखाई गई अपनी निष्पादन क्षमता।
 - (आ) प्रयोग पर आधारित मौखिक परीक्षा।
 - (इ) प्रयोग पर आधारित लिखित आख्या।

9. किसी भी प्रोजेक्ट वर्क का मूल्यांकन एक समिति करेगी, जिसमें कम से कम दो परीक्षक होंगे जो डिप्लोमा कोर्स के संयोजक की संस्तुति के आधार पर बोर्ड ऑफ कंट्रोल के द्वारा नियुक्त किए जाएंगे। विद्यार्थी को अपने प्रोजेक्ट वर्क को एक सेमिनार में प्रस्तुत करना होगा।

10. परीक्षा परिणाम परीक्षा नियंत्रक के द्वारा तैयार और घोषित किया जाएगा।

11. डिप्लोमा कोर्स के विद्यार्थियों को पूर्णकालिक विद्यार्थियों की तरह ही यूनिवर्सिटी में छात्रावास की सुविधाओं के लिए, जो विश्वविद्यालय के नियमानुसार होंगी, अधिकृत माना जाएगा।

12. परीक्षा में उत्तीर्ण विद्यार्थियों का श्रेणी-विभाजन निम्नलिखित रूप में होगा :

- (i) सभी सेमेस्टर के कुल अंकों के 75% या इससे अधिक अंक पाने वाले विद्यार्थियों को विशेष योग्यता के साथ प्रथम श्रेणी में रखा जाएगा बशर्ते कि उस विद्यार्थी ने पहले प्रयास में ही सभी परीक्षाओं/विषयों को उत्तीर्ण कर लिया हो।
- (ii) सभी सेमेस्टर के कुल अंकों के कम से कम 60% तथा 75% से कम अंक पाने वाले विद्यार्थियों को प्रथम श्रेणी में रखा जाएगा।
- (iii) पहले सेमेस्टर और दूसरे सेमेस्टर के कुल अंक के योग के 60% से कम अंक पाने वाले विद्यार्थियों को द्वितीय श्रेणी मिलेगी।

पुनर्परीक्षा

13. सभी पुनर्परीक्षाएं मुख्य परीक्षाओं के साथ ही दिसंबर, अप्रैल में या विश्वविद्यालय के नियमानुसार बोर्ड ऑफ कंट्रोल के द्वारा तय की गई तिथियों पर होंगी।

7. विश्वविद्यालय के विभिन्न निकायों/भारत सरकार के अनुमोदन/ भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशन की प्रत्याशा में (सत्र 2002-2003 ई. से प्रभावी) पत्राचार अध्ययन-विभाग/संबद्ध महाविद्यालयों के लिए स्वास्थ्य, परिवार कल्याण तथा जनसंख्याविषयक शिक्षा से संबंधित स्नातकोत्तर डिप्लोमा के विषय में विनियम :

1. स्वास्थ्य, परिवार कल्याण तथा जनसंख्याविषयक शिक्षा से संबंधित स्नातकोत्तर डिप्लोमा की पढ़ाई की अवधि एक शैक्षणिक सत्र होगी।

2. इसकी परीक्षा सामान्यतः अप्रैल/मई के महीने में या सिंडीकेट के द्वारा तय की गई तिथियों पर होगी।

3. परीक्षा के आरंभ होने तथा प्रवेश के लिए फॉर्म लेने की अंतिम तिथि और शुल्क निम्नलिखित रूप में होगा :

(अ) विलंब शुल्क के बिना, तथा

(आ) उस विलंब शुल्क के साथ जिसे सिंडीकेट समय-समय पर तय करेगी और जिसे परीक्षा नियंत्रक पंजाब विश्वविद्यालय के पत्राचार अध्ययन-विभाग के अध्यक्ष को/संबद्ध महाविद्यालय के प्रचार्यों को अधिसूचित करेगा।

4. विद्यार्थियों से लिए जाने वाले परीक्षा शुल्क की धन-राशि समय-समय पर सिंडीकेट के द्वारा तय की जाएगी।

5. इस पाठ्यक्रम में वही विद्यार्थी प्रवेश लेने के लिए सुयोग्य माना जाएगा;

- (i) जिसने पंजाब विश्वविद्यालय की स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण कर ली हो अथवा उसके पास ऐसी अन्य कोई योग्यता हो जिसे सिंडीकेट ने इसके समकक्ष मान लिया हो; या
- (ii) पैरा-मेडिकल स्टाफ, जिसके पास पांच वर्ष का कार्य करने का अनुभव हो।

6. प्रवेश पाने वाले प्रत्येक विद्यार्थी को पत्राचार अध्ययन-विभाग/संबद्ध महाविद्यालयों का नियमित विद्यार्थी होना पड़ेगा तथा उसे सिडीकेट के द्वारा समय-समय पर तय किए गए प्रवेश शुल्क तथा अन्य शुल्कों को देना होगा।

7. इस पाठ्यक्रम के लिए एक बोर्ड ऑफ स्टडीज का गठन किया जाएगा, जिसका संयोजक पत्राचार अध्ययन-विभाग का अध्यक्ष होगा और कुलपति चार-पांच व्यक्तियों को इसके सदस्य के रूप में नामित करेगा।

8. प्रत्येक परीक्षार्थी को समय-समय पर बोर्ड ऑफ स्टडीज के द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार विषयों की परीक्षा देनी होगी।

9. शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी या पंजाबी या हिंदी भाषा होगी।

10. वही विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम की परीक्षा दे सकेगा जिसका नाम पत्राचार अध्ययन-विभाग के अध्यक्ष/संबद्ध महाविद्यालयों के प्राचार्य के द्वारा निम्नलिखित शर्तों के आधार पर ऊपर भेजा जाएगा।

(i) जो परीक्षा से ठीक पहले वाले शैक्षणिक वर्ष में पत्राचार अध्ययन-विभाग/संबद्ध महाविद्यालयों के नियमित विद्यार्थी रहा हो।

(ii) जो संबद्ध महाविद्यालयों की कक्षाओं के व्याख्यानों में निर्धारित संख्या में उपस्थित रहा हो।

(iii) जिसने पत्राचार अध्ययन विभाग को कम से कम 50 प्रतिशत उत्तर पुस्तिकाएं (रेशोनेन्स शीट्स) प्रस्तुत की हों।

(केवल पत्राचार अध्ययन-विभाग के लिए)

(iv) उत्तर पुस्तिकाओं या व्याख्यानों में उपस्थिति की कमी को, सिडीकेट के द्वारा समय-समय पर तय किए गए नियमों के अनुसार, पत्राचार अध्ययन-विभाग का अध्यक्ष/संबद्ध महाविद्यालयों का प्राचार्य क्षमा कर सकता है।

11. यदि पत्राचार अध्ययन-विभाग/संबद्ध महाविद्यालय में कोई नियमित विद्यार्थी है और वह या तो परीक्षा नहीं दे पाता है या परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो पाता है तो वह विश्वविद्यालय को निर्धारित शुल्क देकर पत्राचार अध्ययन विभाग/संबद्ध महाविद्यालय के पूर्व विद्यार्थी के रूप में परीक्षा दे सकता है।

12. परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए न्यूनतम अपेक्षित अंक इस प्रकार होंगे :

(i) प्रत्येक प्रश्न-पत्र में 35 प्रतिशत प्राप्तांक

(ii) कुल प्राप्तांक 40 प्रतिशत

उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को निम्नलिखित तीन श्रेणियों में रखा जाएगा :-

(अ) 60 प्रतिशत या इससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी
—प्रथम श्रेणी

(आ) 50 प्रतिशत या इससे अधिक किंतु 60 प्रतिशत से कम कुल अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी
—द्वितीय श्रेणी

(इ) कुल अंकों का 50 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी
—तृतीय श्रेणी

13. विश्वविद्यालय के नियमानुसार सिडीकेट/सीनेट के द्वारा समय-समय पर तय किए गए कृपांग दिए जाएंगे।

14. (i) यदि कोई विद्यार्थी कुल योग के 40 प्रतिशत अंक प्राप्त करता है किंतु एक प्रश्न-पत्र में अनुत्तीर्ण रह जाता है, और उस प्रश्न-पत्र में उसे 25 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त नहीं होते हैं, तो वह उसी वर्ष सितंबर के महीने या परीक्षा नियंत्रक के द्वारा तय की गई तिथियों पर होने वाली पूरक परीक्षा में उस प्रश्न-पत्र की परीक्षा दे सकता है। यदि वह इस परीक्षा को उत्तीर्ण करने में असमर्थ रहता/रहती है या इस परीक्षा में अनुपस्थित रहता/रहती है, तो वह आगामी परीक्षा दे सकता/सकती है। यदि वह विश्वविद्यालय की उस परीक्षा में उस प्रश्न-पत्र में कम से कम 35% अंक प्राप्त कर लेता/लेती है तो उसे उस परीक्षा में उत्तीर्ण घोषित कर दिया जाएगा।

(ii) ऐसे परीक्षार्थी को समय-समय पर सिडीकेट के द्वारा शुल्क को देना होगा और वह पुरस्कार या मेडल के लिए हकदार नहीं होगा/होगी।

15. यदि कोई परीक्षार्थी प्रदत्त दो अवसरों में भी उस प्रश्न-पत्र को नहीं देता है या प्रश्न-पत्र में उत्तीर्ण नहीं कर पाता है तो उसे संपूर्ण परीक्षा में अनुत्तीर्ण घोषित कर दिया जाएगा और यदि वह चाहे तो वह पूरी परीक्षा को फिर से दे सकता/सकती है।

16. यदि कोई परीक्षार्थी तीन लगातार अवसरों में भी इस परीक्षा को उत्तीर्ण नहीं कर पाता है तो उसे इस पाठ्यक्रम की अपनी पढ़ाई करने की अनुमति नहीं होगी।

17. परीक्षा नियंत्रक परीक्षा के समाप्त होने के चार सप्ताह के उपरांत या यथाशीघ्र श्रेणियों को दर्शाते हुए उत्तीर्ण विद्यार्थियों की सूची प्रकाशित करेगा।

18. प्रत्येक उत्तीर्ण विद्यार्थी को स्वास्थ्य, परिवार कल्याण तथा जनसंख्या शिक्षा में स्नातकोत्तर डिप्लोमा दिया जाएगा जिसमें उसकी वह श्रेणी जिसमें उसने वह परीक्षा उत्तीर्ण की है के साथ कुल प्राप्तांकों तथा अंकों के कुल योग के साथ प्रदर्शित होगी।

8. विश्वविद्यालय के विभिन्न निकायों/भारत सरकार के अनुमोदन/भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशन की प्रत्याशा में बैचलर ऑफ इंजीनियरिंग (एग्री-प्रोसेसिंग) के नाम का

बैचलर ऑफ इंजीनियरिंग (फूड टेक्नोलॉजी) के रूप में परिवर्तन (सत्र 2002-2003 से प्रभावी)।

9. विश्वविद्यालय के विभिन्न निकायों/भारत के अनुमोदन/भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशन की प्रत्याशा में पंजाब विश्वविद्यालय की विनियमावली, भाग-II, 2000 ई. के पृष्ठ 264-268 पर दिए गए (सत्र 2002-2003 ई. से प्रभावी) विनियम 2.1 तथा 5.1 में अनुमोदनार्थ संशोधन

2.1 इस पाठ्यक्रम में वही व्यक्ति प्रवेश पा सकेगा, जिसके पास निम्नलिखित में से कोई एक योग्यता हो :-

(अ) बी.ए./बी.कॉम./बी.बी.ए./बी.सी.ए./बी.एस.सी./बी.एस.सी. (आनर्स स्कूल) की पंजाब विश्वविद्यालय से उपाधि या किसी अन्य विश्वविद्यालय की ऐसी ही कोई मान्यता प्राप्त उपाधि जो इनके समकक्ष हो तथा उसमें कम से कम 45 प्रतिशत कुल योगांकों के प्राप्तांक, बशर्ते उसने प्रथम उपाधि स्तर पर कम से कम दो विषय स्कूल-वर्ग के पढ़े हों।

5.1 बी.कॉम./बी.बी.ए./एम.कॉम. उत्तीर्ण विद्यार्थी दो अध्यापन विषय चुन सकते हैं, जिनमें से एक वाणिज्य (कॉमर्स) का अध्यापन होगा और दूसरा विषय निम्नलिखित विषयों में से कोई एक होगा :-

अर्थशास्त्र का अध्यापन या अंग्रेजी, हिन्दी, पंजाबी तथा संस्कृत भाषाओं में से किसी एक भाषा का अध्यापन

बी.सी.ए. उत्तीर्ण विद्यार्थी कम्प्यूटर विज्ञान तथा उसका अनुप्रयोग एक विषय के रूप में चुन सकते हैं। अध्यापन के अन्य विषय गणित हैं। अध्यापन के अन्य विषय गणित का अध्यापन या अंग्रेजी, हिन्दी, पंजाबी या संस्कृति में से कोई एक भाषा हो सकती है।

प्रस्तावित विनियम

बी.एस.सी. (गृहविज्ञान) उत्तीर्ण विद्यार्थी दो अध्यापन-विषयों में एक गृहविज्ञान को तथा दूसरे विषय को निम्नलिखित विषयों में से अध्यापन-विषयों के रूप में, चुन सकते हैं :

विज्ञान का अध्यापन या अंग्रेजी, हिन्दी, पंजाबी तथा संस्कृत भाषाओं में से कोई एक भाषा

बी.एस.सी. (आनर्स स्कूल)/बी.एस.सी. (मेडिकल) स्नातक निम्नलिखित में से कोई दो अध्यापन विषय चुन सकते हैं :

1. विज्ञान का अध्यापन/शारीरिक विज्ञान का अध्यापन
2. जीवन विज्ञान का अध्यापन
3. अंग्रेजी, हिन्दी, पंजाबी तथा संस्कृत में से किसी एक भाषा का अध्यापन

बी. एस.सी. (ऑनर्स स्कूल)/बी.एस.सी. (गैर-मेडिकल) स्नातक निम्नलिखित में से किन्हीं दो विषयों का चयन करेंगे :

1. विज्ञान का अध्यापन/शारीरिक विज्ञान का अध्यापन
2. गणित का अध्यापन/कम्प्यूटर विज्ञान का अध्यापन
3. अंग्रेजी, हिन्दी, पंजाबी तथा संस्कृत भाषा में से किसी एक भाषा का अध्यापन

कला-स्नातक निम्नलिखित में से कोई एक विषय अध्यापन के लिए चुन सकते हैं :

सामाजिक विज्ञान का अध्यापन, इतिहास का अध्यापन, भूगोल का अध्यापन, अर्थशास्त्र का अध्यापन, तथा/अथवा निम्नलिखित भाषाओं में से किसी एक भाषा का अध्यापन, यदि अभ्यर्थी ने स्नातक स्तर पर वह विषय पढ़े हों :

अंग्रेजी भाषा, हिन्दी भाषा, पंजाबी भाषा तथा संस्कृत भाषा

X X X

10. विश्वविद्यालय के विभिन्न निकायों/भारत सरकार के अनुमोदन/भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशन की प्रत्याशा में प्रभावी पंजाब विश्वविद्यालय के कैलेंडर, भाग-I, 2000 ई. के पृष्ठ III पर दिए गए अध्याय V (ए) के विनियम 2 'विश्वविद्यालय के अध्यापक तथा पृ. 44 पर दिए गए विनियम 8' एकेडेमिक कौंसिल में निम्नलिखित संशोधन :-

8. एकेडेमिक कौंसिल के प्रकार्य निम्नलिखित होंगे :-

(अ) विश्वविद्यालय के अध्यापन कार्य तथा नव विकास के लिए प्रस्तावों को तैयार करना,

(आ) विश्वविद्यालय में अध्यापकों के लिए नए पदों के सृजन के लिए सिडीकेट को संस्तुति करना तथा अध्यापकों के पदों की समाप्ति के विषय में सलाह देना

X X X

पंजाब विश्वविद्यालय के कैलेंडर, भाग-I, 2000 ई. के पृ. III पर दिए गए विनियम 2 में संशोधन

2. सीनेट के पास यह अधिकार होगा कि वह समय-समय पर बोर्ड ऑफ फाइनेंस के द्वारा सिडीकेट को भेजी गई संस्तुतियों के आधार पर अध्ययन संबंधी विभागों के बारे में निर्णय करे, जिनमें प्रोफेसर, रीडर तथा लेक्चरर के पद दिए जाने वाले हों।

11. विश्वविद्यालय के विभिन्न निकायों/भारत सरकार के अनुमोदन/भारत सरकार के राजपत्र की प्रत्याशा में प्रभावी 'अभियांत्रिकी तथा प्रौद्योगिकी' संकाय के नाम का 'अभियांत्रिकी, प्रौद्योगिकी, वास्तु शास्त्र तथा नियोजन' के रूप में परिवर्तन।

12. पंजाब विश्वविद्यालय की विनियमावली खंड-II, 2000 ई. के पृष्ठ 45-46 पर दिए गए विनियम 4.1 में संशोधन

4.1 इस विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों में बी.ए. या बी.एस.सी. (सामान्य तथा आनर्स) के स्नातक पाठ्यक्रम में उसी व्यक्ति को प्रवेश मिल सकेगा, जिसने अंग्रेजी विषय को उत्तीर्ण करते हुए निम्नलिखित परीक्षाओं में से कोई एक परीक्षा उत्तीर्ण कर ली हो। यह भी प्रावधान है कि यदि किसी व्यक्ति ने + 2 की परीक्षा को अंग्रेजी विषय के बिना ही उत्तीर्ण किया हो, तो उसे इस शर्त के साथ बी.ए./बी.एस.सी. के प्रथम वर्ष में प्रवेश मिल सकेगा कि वह प्रवेश पाने के बाद दो लगातार अवसरों में कमी वाले अंग्रेजी के विषय को सम्बद्ध बोर्ड/निकाय/कौंसिल/विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण कर लेगा, जिसके अभाव में उसका बी.ए./बी.एस.सी. प्रथम वर्ष का प्रवेश और उसकी परीक्षा स्वतः निरस्त समझी जाएगी।

(i) पंजाब विश्वविद्यालय की बी.ए./बी.एस.सी./बी.कॉम. भाग-1 (पुरानी पद्धति)/प्री मेडिकल/प्री इंजीनियरिंग/इंटरमीडिएट : कला/विज्ञान/कृषि परीक्षा

(ii) किसी मान्यताप्राप्त विश्वविद्यालय/बोर्ड/कौंसिल की 10 + 2 + 3 पद्धति की + 2 परीक्षा

13. पंजाब विश्वविद्यालय की विनियमावली, खंड-I, 2000 ई. के पृष्ठ 33 अध्याय-II (ए X 1) 'द सीनेट' पर दिया गया विनियम संख्या 25

25. किसी भी विनियम को राजपत्र में प्रकाशित होने की तिथि से ही प्रभावी माना जाएगा, जब तक कि उसमें किसी अन्य तिथि से प्रभावी होने का उल्लेख न किया गया हो।

यदि शैक्षणिक मामलों में भारत सरकार के द्वारा लगाई गई किसी आपत्ति की सूचना, जो प्रस्तावित विनियमों/संशोधनों/संबद्धनों/विलोपनों से संबंधित हो, विश्वविद्यालय के कार्यालय में भेजे जाने की तिथि के तीन महीनों के अंदर प्राप्त नहीं होती है, तो यह मान लिया जाएगा कि सरकार को प्रस्तावित विनियमों/संशोधनों/संबद्धनों/विलोपनों पर कोई आपत्ति नहीं है और उनको सीनेट के द्वारा अनुमोदित हो जाने की तिथि से लागू मान लिया जाएगा।

14. विश्वविद्यालय के विभिन्न निकायों/भारत सरकार के अनुमोदन/भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशन की प्रत्याशा में, सत्र 2004-2005 ई. से प्रभावी, अकादमिक कौंसिल के प्रकार्यों से संबंधित, पंजाब विश्वविद्यालय की विनियमावली, खंड-I, 2000 ई. के पृष्ठ 44-45 पर दिए गए, अध्याय 2 (ए X 4) 'एकेडेमिक कौंसिल' के विनियम 8 (एच) में संशोधन

8(एच) विश्वविद्यालय के पुस्तकालय के प्रबंध के लिए, सामान्य तथा वित्तीय नियंत्रण सिंडीकेट के अधीन रहने की शर्त के साथ तथा, इस प्रयोजन के लिए—

(i) अकादमिक कौंसिल के सामान्य नियंत्रण के अधीन, पुस्तकालय के नीतिगत मामलों में सलाह देने के लिए एक समिति का गठन करने के लिए एक पुस्तकालय समिति में निम्नलिखित सदस्य होंगे :

(1) से (5) XXX XXX XXX

(6) पुस्तकालय विज्ञान के अध्यापक-वर्ग में से कोई एक सदस्य (जो रीडर या इससे उच्चतर पद पर हो)

(ii) XXX XXX XXX

15. सीनेट/भारत सरकार/भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशन में प्रत्याशा में प्रभावी, पंजाब विश्वविद्यालय की विनियमावली के भाग-I, 2000 ई. के पृष्ठ 67-68 पर दिए गए, अध्याय-2 (ए बी) के 'सामान्य फेलोज का निर्वाचन' नामक विनियम संख्या 17 (XVII X सी X V) में संशोधन। प्रस्तावित विनियम

किसी भी मतदाता को, नियत समय के अंदर ही उपस्थित न होने पर, निम्नलिखित में से किसी एक भी प्रपत्र के मतदान के समय मतदान अधिकारी के समक्ष पहचान के लिए न प्रस्तुत करने पर, मतपत्र नहीं दिया जाएगा :

(i) मतदाता का चित्र-सहित अपना ताजा पहचान-पत्र, जो किसी मान्यताप्राप्त संस्था के नौकरी प्रदाता अधिकारी के द्वारा दिया गया हो। मान्यताप्राप्त संस्था से अभिप्राय सरकारी संस्था, अर्ध-सरकारी संस्था, स्टेट्यूटरी निकायों, स्वायत्त निकायों, निगमों तथा बोर्डों से है।

(ii) सामान्य निर्वाचन पहचान पत्र

(iii) चित्र-सहित वैद्य डाइविंग लाइसेंस

(iv) वैद्य पासपोर्ट

(v) किसी प्रथम श्रेणी के दंडाधिकारी/उप-न्यायाधीश/पंजाब विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालय के प्राचार्य का चित्र सहित प्रमाण-पत्र

(अ) आयकर विभाग के द्वारा जारी किया गया स्थायी खाता संख्या (पी.ए.एन.)

(इ) ऐसा कोई अन्य प्रपत्र, जिस पर मतदाता का चित्र भी हो और जिसे पंजाब विश्वविद्यालय ने पहचान करने के लिए दिया हो।

(vi) बैंक/डाकघर के द्वारा दिया गया निकट भूतकाल में दी गई कोई पासबुक, जिस पर चित्र भी लगा हो

(vii) किसी मान्यता प्राप्त शिक्षा-संस्था के द्वारा दिया गया पहचान पत्र, जिस पर चित्र लगा हो

(viii) कोई चालू राशनकार्ड, जिस पर चित्र लगा हो

(ix) किसी पूर्व-सैनिक का चित्र सहित कोई प्रपत्र : पूर्व-सैनिक की पेंशनबुक/पेंशन-भुगतान का आदेश/पूर्व-सैनिक की विधवा/अवलम्बी होने का प्रमाण-पत्र/वृद्धावस्था-पेंशन का आदेश तथा विधवा-पेंशन-आदेश

(x) सचित्र वरिष्ठ नागरिक कार्ड

(xi) सचित्र स्वतंत्रता-सेनानी कार्ड

(xii) सचित्र सद्यः प्रदत्त हथियार का लाइसेंस

(xiii) सक्षम अधिकारी के द्वारा सद्यः प्रदत्त सचित्र विकलांगता का प्रमाण-पत्र

(xiv) बार कौंसिल/एसोशियशन के द्वारा सद्यः प्रदत्त सचित्र प्रमाण-पत्र।

16. विश्वविद्यालय के विभिन्न निकायों/भारत सरकार के अनुमोदन/भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशन की प्रत्याशा में पंजाब विश्वविद्यालय की विनियमावली भाग-I, 2000 ई. के अध्याय IV (ए), (ii), जिसका संबंध अधिष्ठाता, विद्यार्थी कल्याण (पुरुष)/अधिष्ठाता, विद्यार्थी कल्याण (महिलाएं) से है, पृष्ठ 107 पर लिखे हुए विनियम 2 में परिवर्द्धन।

2.1 अधिष्ठाता, विद्यार्थी कल्याण के कर्तव्य और प्रकार्य निम्नलिखित होंगे—

(i) चंडीगढ़ में रहकर विश्वविद्यालय की कक्षाओं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के आवास की व्यवस्था करना और उनके अनुशासन के लिए पर्यवेक्षण करना, तथा इसके साथ ही परिसर से बाहर रहने वाले विद्यार्थियों के आवास की व्यवस्था को अनुमोदित करना;

(ii) विश्वविद्यालय परिसर में विद्यार्थियों की सांस्कृतिक तथा शिक्षित गतिविधियों का निर्देशन करना।

- (iii) विश्वविद्यालय परिसर में विद्यार्थियों के शारीरिक कल्याण तथा एन.सी.सी. की गतिविधियों का ध्यान रखना।
- (iv) विद्यार्थियों की शिक्षित गतिविधियों के लिए विद्यार्थी कल्याण विभाग को निर्धारित अमलगामेटेड फंड के लेखा को चलाना।
- (v) परिसर में तथा परिसर के बाहर (शिक्षा संबंधी कार्य, जिसे विभिन्न विभागों के अध्यक्ष तथा/अथवा डी.यू. आई. देखते हैं) विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के अनुशासन से संबंधित सभी मामलों की व्यवस्था करना तथा समुचित जांच-पड़ताल के पश्चात् आवश्यक दंड निर्धारित करना;
- (vi) विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक, नैतिक और भावात्मक हित-संपादन के लिए उपाय और साधन तलाश करना, तथा उनमें देश के प्रति निष्ठा, कर्तव्य के प्रति समर्पण तथा सत्य के मार्ग पर प्रमाण जैसे महान आदर्शों के प्रति आदर का भाव जगाना।

2.2. कुलपति तथा सिंडीकेट की संस्तुति पर सेनेट अधिष्ठाता, विद्यार्थी कल्याण (महिलाएं) की भी नियुक्ति उस कालावधि के लिए और उन शर्तों पर कर सकती है, जो अधिष्ठाता विद्यार्थी कल्याण के लिए निर्धारित है और इसका आधार अमलगामेटेड फंड होगा, एकाउंट होगा। अधिष्ठाता, विद्यार्थी कल्याण (महिलाएं) की उस शिकायत समिति की भी अध्यक्ष होगी जो लैंगिक प्रताड़ना के परिहार, अनुशासन तथा आचरण संहिता के निर्वहन के लिए अधिकृत है।

17. विश्वविद्यालय के विभिन्न निकायों/भारत सरकार के अनुमोदन/भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशन की प्रत्याशा में सत्र 2003-2004 ई. के प्रवेश से प्रभावी, पंजाब विश्वविद्यालय की विनियमावली, खंड-II, 2000 ई. के पृष्ठ 46 पर दिए गए, बी. ए./बी. एस. सी. (सामान्य तथा आनर्स) से संबंधित विनियम 7 में संशोधन

7. वही विद्यार्थी पहले/दूसरे/तीसरे वर्ष की परीक्षा दे सकेगा—

(अ) जिसने विनियम 4.1 में उल्लिखित योग्यता दात्री परीक्षा कम से कम एक अकादमिक सत्र के पूर्व उत्तीर्ण कर ली हो/यदि किसी विद्यार्थी को पूरक परीक्षा देनी हो और वह बी.ए./बी.एस.सी. पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए योग्य हो, तो उसके मामले में एक शैक्षणिक वर्ष की गणना उस परीक्षा से होगी जिसमें उसे पूरक परीक्षा देने के योग्य घोषित किया गया हो। यदि किसी विद्यार्थी को पूरक परीक्षा देने वाली श्रेणी में रखा गया हो/ कोई विद्यार्थी+2 की परीक्षा में उस विषय में अनुत्तीर्ण रह गया हो तो उसे निम्नलिखित शर्तों के अधीन बी. ए./बी. एस. सी. प्रथम वर्ष में प्रवेश दिया जा सकता है;

ऐसे अभ्यर्थी का प्रवेश विनियम 4.2 के अधीन सशर्त होगा और उसका प्रवेश तभी संपुष्ट माना जाएगा।

जब वह पूरक परीक्षा वाले विषय में प्रवेश के लिए अपने बोर्ड/निकाय/कौंसिल/विश्वविद्यालय से दो लगातार अवसरों में परीक्षा उत्तीर्ण कर लेगा। यदि वह लगातार दो अवसरों में भी पूरक परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो पाता है, तो उसका बी. ए./बी. एस. सी. भाग-I में सशर्त प्रवेश में निरस्त समझा जाएगा।

यदि पूरक परीक्षा की श्रेणी में आया हुआ परीक्षार्थी प्रवेश की अंतिम तिथि से पूर्व, बोर्ड+2 की परीक्षा उत्तीर्ण कर लेता है, तो उसे अगली कक्षा में प्रवेश के लिए सक्षम माना जाएगा, बशर्ते उसके पास निर्धारित योग्यताएं हों और स्थान सुलभ हो।

(आ) *** **

18. विश्वविद्यालय के विभिन्न निकायों/भारत सरकार के अनुमोदन/भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशन की प्रत्याशा में (सत्र 2002-2003 ई. के प्रवेश से प्रभावी), स्नातक स्तरीय शैक्षणिक कार्यक्रम पर्यवेक्षण तथा कार्यकारी समिति (यू.जी.ए. टी.एम.ई.सी.) के प्रकार्यों से संबंधित बी. एस. सी. (आनर्स स्कूल) (वार्षिक पद्धति) से संबंधित विनियम 12.2 में धारा (vi) का परिवर्द्धन

12.2 बोर्ड ऑफ कंट्रोल स्नातक स्तरीय शैक्षणिक कार्यक्रम पर्यवेक्षण तथा कार्यकारी समिति (यू.जी.ए.टी.एम.ई.सी.) के गठन करेगा जिसका प्रयोजन तीनों वर्षों में शैक्षणिक कार्यक्रमों को पर्यवेक्षण और कार्यान्वयन होगा। इस यू.जी.ए.टी.एम.ई.सी. समिति के प्रकार्य निम्नलिखित होंगे :

(i) से (v) *** **

(vi) यू.जी.ए.टी.एम.ई.सी. समिति प्रश्न-पत्र निर्माण तथा मूल्यांकन के संबंध में यदि कोई शिकायत होती है तो उस संबंध में अपनी सिफारिशें करेगी तथा झगड़े निपटाएगी।

19. सीनेट/भारत सरकार के अनुमोदन/भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशन की प्रत्याशा में लागू (अप्रैल, 2003 ई. की परीक्षा से प्रभावी) पंजाब विश्वविद्यालय के कलेंडर, खंड-II, 2000 ई. के पृष्ठ 69 पर दिए गए बी. एस. सी. (ऑनर्स स्कूल) (वार्षिक पद्धति) परीक्षा से संबंधित विनियम में परिवर्द्धन :

“यदि किसी विद्यार्थी ने पंजाब विश्वविद्यालय से बी. एस. सी. (ऑनर्स स्कूल) की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली हो, तो वह व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में उन विषयों के सैद्धांतिक प्रश्न-पत्रों की परीक्षा फिर से दे सकता/सकती है, जिनमें वह पहले परीक्षा दे चुका/चुकी है, ताकि पहले की उपेक्षा उसके प्राप्तों अच्छे हो जाएं। वह प्रथम वर्ष, द्वितीय वर्ष एवं तृतीय वर्ष की परीक्षा चाहे तो एक साथ या अलग-अलग दे सकता/सकती है।

इसके लिए उसे बी. एस. सी. (ऑनर्स स्कूल) परीक्षा देने के वर्ष के तुरंत बाद के तीन वर्षों के अंतर ही दो अवसर मिलेंगे। उसे वार्षिक/सेमेस्टर परीक्षा में अन्य नियमित विद्यार्थियों के साथ ही परीक्षा देनी होगी।

बी. एस. सी. (आनर्स स्कूल) के विद्यार्थियों की परीक्षा उस समय लागू पाठ्यक्रम के आधार पर तथा उस समय लागू विश्वविद्यालय के नियमों के अधीन होगी।

आंतरिक मूल्यांकन के भाग में सुधार की अनुमति नहीं होगी।

व्याख्यात्मक टिप्पणी :

किसी परीक्षार्थी के द्वारा सुधारे गए परीक्षा-परिणाम का प्रभाव पहले तय की गई मूल परीक्षा की वरिष्ठता सूची को प्रभावित नहीं करेगा।”

20. विश्वविद्यालय के निकायों/भारत सरकार के अनुमोदन/भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशन की प्रत्याशा में लागू बी. एस. सी. (ऑनर्स स्कूल) (वार्षिक पद्धति) परीक्षा से संबंधित औद्योगिक जीव-प्रौद्योगिकी/औद्योगिक कम्प्यूटर विज्ञान तथा अनुप्रयोग के सहायक विषयों के प्रमाण-पत्र देने के लिए विनियम 14 में परिवर्द्धन :

14. वर्ष 1999-2003 ई. के बीच बी. एस. सी. (ऑनर्स स्कूल) परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले उन विद्यार्थियों को अलग से सहायक विषयों के पढ़ने के प्रमाण-पत्र दिए जाएंगे, जिन्होंने औद्योगिक जीव, प्रौद्योगिकी/औद्योगिक कम्प्यूटर विज्ञान तथा अनुप्रयोग के विषय सहायक विषयों के रूप में अपने पाठ्यक्रम में तीनों वर्षों में पढ़े हैं, जिस पर परीक्षा नियंत्रक की मोहर/हस्ताक्षर होने के साथ-साथ बी. एस. सी. (ऑनर्स स्कूल) के तीसरे वर्ष में सहायक विषय के प्राप्तांक भी लिखे होंगे।

21. सीनेट/भारत सरकार के अनुमोदन/भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशन की प्रत्याशा में, अप्रैल 2003 ई. की परीक्षा से प्रभावी, पंजाब विश्वविद्यालय के कैलेंडर खंड-II, 2000 ई. में दिए गए एम. एस. बी. (आनर्स स्कूल) (वार्षिक पद्धति) से संबंधित विनियम 13 में परिवर्द्धन:

“यदि किसी परीक्षार्थी ने पंजाब विश्वविद्यालय से एम. एस. बी. (ऑनर्स स्कूल) (वार्षिक पद्धति) परीक्षा सेमेस्टर पद्धति से उत्तीर्ण की है, तो वह अपने परीक्षा फल को सुधारने की दृष्टि से यदि चाहे तो, व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में फिर से परीक्षा दे सकता/सकती है। इस संदर्भ में उसे अपना पाठ्यक्रम उत्तीर्ण कर लेने के पांच वर्ष के अंदर ही दो अवसर मिलेंगे। उसे मुख्य सेमेस्टर परीक्षा में संबद्ध विषय/विषयों की परीक्षा देनी होगी अर्थात् पहले और तीसरे सेमेस्टर में पढ़े हुए विषयों की परीक्षा नवंबर/दिसंबर तथा दूसरे और चौथे सेमेस्टर में पढ़े हुए विषयों की परीक्षा अप्रैल/मई में परीक्षा देनी होगी। यदि उसके परीक्षा परिणाम में कोई सुधार नहीं हो पाता है तो वह आगामी वर्ष में संबद्ध सेमेस्टर में फिर से परीक्षा दे सकता/सकती है और इसे उसका दूसरा अवसर माना जाएगा। इसके लिए उसे वह शुल्क देना होगा जो प्रत्येक विषय के लिए सिंडीकेट के द्वारा समय-समय पर सेमेस्टर के लिए अधिकतम रूप में तय किया जाएगा।

व्याख्यात्मक टिप्पणी :

किसी भी परीक्षार्थी के द्वारा इस प्रकार सुधारा गया परीक्षा परिणाम मूल परीक्षा में निर्धारित वरिष्ठता सूची को प्रभावित नहीं करेगा।”

22. भारत सरकार के अनुमोदन/भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशन की प्रत्याशा में लागू (2000 ई. की परीक्षा से प्रभावी, पंजाब विश्वविद्यालय के कैलेंडर, भाग-II, 2000 ई. के पृष्ठ 85 पर दिए गए, पत्राचार द्वारा एम. ए. भाग-I (समाजशास्त्र) (वार्षिक पद्धति) से संबंधित विनियम 9.1 में परिवर्द्धन) :

- (i) प्रश्न पत्र-II में वही परीक्षार्थी उत्तीर्ण समझा जाएगा, यदि वह सैद्धांतिक प्रश्नपत्र में अलग से या रिसर्च एसाइनमेंट्स के साथ संयुक्त रूप में 33 प्रतिशत अंक प्राप्त करता/करती है।
- (ii) परीक्षा-परिणाम के पूर्ववत् रहने की स्थिति में कोई भी

परीक्षार्थी केवल सैद्धांतिक प्रश्नपत्र की परीक्षा फिर से दे सकता है और इस संदर्भ में आंतरिक मूल्यांकन के उसके अंक पूर्ववर्ती मुख्य परीक्षा वाले ही रहेंगे। यह बात इस प्रश्नपत्र में अनुत्तीर्ण/अनुपस्थित रहने वाले परीक्षार्थियों पर भी लागू होगी।

- (iii) किसी भी विद्यार्थी को एसाइनमेंट जमा करने के लिए कोई भी अतिरिक्त अवसर नहीं दिया जाएगा।
- (iv) पुनर्मूल्यांकन केवल सैद्धांतिक प्रश्नपत्रों का ही हो सकेगा, एसाइनमेंट तथा आंतरिक मूल्यांकन का नहीं। इस प्रश्नपत्र में किसी भी अभ्यर्थी के आंतरिक मूल्यांकन के अंक अब तक अपरिवर्तित रहेंगे, जब तक कि वह पूरक परीक्षा में या प्रश्नपत्र के सैद्धांतिक भाग को उत्तीर्ण नहीं कर लेता।

23. विश्वविद्यालय के निकायों/भारत सरकार के अनुमोदन/भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशन की प्रत्याशा में लागू (2002-2003 ई. प्रवेश से प्रभावी), स्नातकोत्तर शैक्षणिक कार्यक्रम पर्यवेक्षण तथा कार्यकारी समिति (पी. जी. ए. पी.एम. ई. सी.) के प्रकाशों से संबंधित, पंजाब विश्वविद्यालय के कैलेंडर, भाग-II, 2000 ई. में दिए गए एम. एस. सी. (ऑनर्स स्कूल) (वार्षिक पद्धति) से संबंधित विनियम 10.2 में धारा (XII) का संवर्द्धन : 10.2 बोर्ड ऑफ कंट्रोल स्नातकोत्तर शैक्षणिक कार्यक्रम पर्यवेक्षण तथा कार्यान्वयन समिति (पी. जी. ए. पी. एम. ई. सी.) का गठन करेगा, जो तीनों वर्षों के शैक्षणिक कार्यक्रमों पर नजर रखेगी। इसका गठन और इसके प्रकार्य निम्नलिखित रूप में होंगे।

- (i) से (vi) xxx xxx xxx
- (vii) पी. जी. ए. पी. एम. ई. सी. का कार्य प्रश्नपत्र निर्माण तथा मूल्यांकन से संबंधित शिकायतों यदि कोई हों के विषय में संस्तुति करना तथा उनका समाधान करना होगा।

24. पंजाब-विश्वविद्यालय के कैलेंडर, भाग II, 2000 के पृष्ठ 175-183 पर दिए गए कला, भाषा, शिक्षा, विज्ञान एवं डिजाइन तथा ललित कलाओं के संकायों में पी.एच.डी. उपाधि से संबंधित विनियम 3.4, 3.5, 4.2, 11.1 एवं 13.1 में संशोधन।

3.4 आवेदक एनरोलमेंट की तिथि के एक वर्ष के भीतर ही अपने विश्वविद्यालय के विभाग के चेयरमैन/अध्यक्ष अथवा सम्बद्ध प्रिंसिपल, होमसाइंस कॉलेज के द्वारा रजिस्ट्रेशन (पंजीकरण) के लिए आवेदन करेगा। विश्वविद्यालय का शैक्षणिक डीन विश्वविद्यालय के विभाग के चेयरमैन/अध्यक्ष/प्रिंसिपल होम साइंस कॉलेज की संस्तुति के आधार पर छह महीने तक की अवधि बढ़ा सकता है।

पंजीकरण के आवेदन पत्र में निम्नलिखित बातें होंगी—

- (अ) शोध-प्रबन्ध का सम्भावित शीर्षक या शोध कार्य का व्यापक क्षेत्र; अथवा
- (आ) शोध परियोजना की संभावित रूपरेखा।

यदि कोई आवेदक डेढ़ वर्ष के अंदर अपने शोध प्रबंध की संभावित रूपरेखा और शीर्षक के साथ अपना पंजीकरण का फार्म

प्रस्तुत करने में असफल रहता है तो विभाग का चेयरपर्सन/अध्यक्ष/प्रिंसिपल, होम साइंस कालेज, ज्वाइंट रिसर्च बोर्ड को विशेष कारण सूचित करेगा, जिनके आधार पर डेढ़ वर्ष के अतिरिक्त छह महीने की अवधि का और विस्तार पंजीकरण के फार्म, संभावित शोध-विषय और शोध-प्रबंध की रूपरेखा को जमा करने के लिए स्वीकृत कर सकता है (जो सामान्य एक वर्ष और छह महीने के विस्तार के अतिरिक्त होगा)। इसके लिए उसे वह शुल्क भी देना पड़ेगा जो सिंडिकेट/सीनेट समय-समय पर तय करेगी।

3.5 (अ) किसी भी आवेदक को पंजीकरण का फार्म, शोध-प्रबंध का संभावित शीर्षक और उसकी रूपरेखा को सम्बद्ध विभाग के चेयरपर्सन को प्रस्तुत करना होगा, जो इसकी प्राप्ति से एक सप्ताह के अन्दर ही इसे विश्वविद्यालय के कार्यालय को भेज देगा।

(आ) यदि कोई आवेदक दो वर्ष के अंदर भी पंजीकरण के फार्म और शोध की रूपरेखा को चेयरपर्सन/अध्यक्ष को प्रस्तुत करने में असमर्थ रहता है, तो उसका एनरोलमेंट अपने आप ही केसिल (निरस्त) हो जाएगा। इसके लिए आवेदक को अलग से कोई सूचना नहीं भेजी जाएगी।

4.2 विभाग का अध्यक्ष/प्रिंसिपल, होम साइंस कालेज आवेदन पत्र को अग्रसारित करते हुए किसी उपयुक्त शोध निर्देशक के नाम की भी संस्तुति करेगा जो आवेदक का शोध के क्षेत्र में निर्देशन कर सके। यदि आवश्यकता हो तो वह एक से अधिक संयुक्त शोध निर्देशकों के नाम की भी संस्तुति कर सकता है।

4.3 आवेदक तथा शोध-निर्देशक की प्रार्थना पर संयुक्त शोध-निर्देशकों को विश्वविद्यालय के अध्ययन विभागों, विश्वविद्यालयों के क्षेत्रीय परास्नातक केन्द्रों, जो विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के द्वारा मान्यता प्राप्त हों तथा राष्ट्रीय/स्वायत्त प्रयोगशालाओं से लिया जा सकता है। सम्बद्ध विभाग का अध्यक्ष इस संबंध में इनको प्रमाणित करेगा बशर्ते ये निम्नलिखित शर्तों को पूरा करते हों--

(अ) ये शोध निर्देशक पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त कर चुके हों तथा इनकी प्रकाशित सामग्री हो। जैसे : पुस्तकें, लेख तथा संदर्भित शोध-पत्रिकाओं में शोध-पत्र तथा

(आ) पी-एच.डी. की उपाधि को प्राप्त करने के पश्चात् किए गए शोध का प्रमाण। इस उद्देश्य के लिए सम्बद्ध संस्थाओं आदि से कोई भी शुल्क नहीं लिया जाएगा।

11.1 प्रत्येक आवेदक हर छह महीने की अवधि के बीत जाने पर अपने शोध-निर्देशक को लिखित में सूचित करेगा कि उसने इन छह महीनों में क्या शोध कार्य किया है। शोध-निर्देशक इस रिपोर्ट के आधार पर वह कार्यवाही करेगा जो उचित होगी तथा जिसका आधार यह रिपोर्ट तथा इस मामले की अन्य परिस्थितियाँ होंगी।

प्रगति के इस प्रतिवेदन पर कम से कम एक शोध-निर्देशक/प्रस्तावित शोध-निर्देशक/संयुक्त शोध-निर्देशक हस्ताक्षर करेगा और आवेदक इसे सम्बद्ध विभाग के अध्यक्ष को प्रस्तुत करेगा, जिसे विभागीय अकादमिक समिति के सम्मुख विचारार्थ रखा जाएगा।

अकादमिक समिति की कार्यवाही की एक प्रति रिकार्ड के लिए विश्वविद्यालय के कार्यालय को भेजी जाएगी। विभाग का अध्यक्ष यह सुनिश्चित करेगा कि प्रगति के प्रतिवेदन नियमित रूप से प्रस्तुत किए जा रहे हैं। यदि किसी मामले में लगातार दो प्रगति प्रतिवेदन नहीं मिलते हैं तो यह मामला अकादमिक समिति के समक्ष विचारार्थ रखा जाएगा और संयुक्त शोध बोर्ड (ज्वाइंट रिसर्च बोर्ड) को एनरोलमेंट तथा पंजीकरण के निरस्तीकरण (केसलेशन) के लिए संस्तुति की जाएगी।

13.1 यदि कोई आवेदक इन विनियमों के अधीन दिए गए निश्चित समय के अन्दर अपना शोध-कार्य और शोध प्रबन्ध पूरा नहीं कर पाता तो वह अपने शोध-निर्देशक के माध्यम से सम्बद्ध विभाग के अध्यक्ष को अवधि में विस्तार करने के लिए आवेदन कर सकता है।

बशर्ते कि—

(i) अवधि में विस्तार एक समय पर एक वर्ष से अधिक अवधि का नहीं किया जाएगा।

(ii) अवधि विस्तार के प्रत्येक प्रार्थना-पत्र के साथ वह शुल्क देना होगा जिसे सिंडिकेट/सीनेट समय-समय पर तय करेगी :

यदि शोध प्रबंध निर्धारित पांच वर्ष की अवधि के उपरान्त किया जाएगा, तो इस विलम्ब को निम्नलिखित अधिकारी माफ कर सकेंगे :

(i) तीन महीने तक के लिए

--डीन ऑफ यूनिवर्सिटी इनस्ट्रक्शन।

(ii) एक वर्ष तक के लिए

--ज्वाइंट रिसर्च बोर्ड।

(iii) एक वर्ष से तीन वर्ष की अवधि के लिए कुलपति, ज्वाइंट रिसर्च बोर्ड के द्वारा अभिलिखित विशेष और अपवादस्वरूप परिस्थितियों के आधार पर।

इनरोलमेंट की तिथि से पांच वर्ष की अवधि बीत जाने के बाद पी-एच.डी. के शोध-प्रबंध को प्रस्तुत किए जाने पर, विलम्ब के लिए क्षमादान के लिए एक वर्ष के लिए दो हजार रुपये का शुल्क या समय-समय पर सिंडिकेट/सीनेट के द्वारा तय किया गया शुल्क देय होगा।

यह प्रावधान किया जाता है कि इनरोलमेंट की तिथि से शोध-प्रबंध को प्रस्तुत करने के लिए अधिकतम समय सीमा आठ वर्ष की होगी अर्थात् सामान्य सीमा : तीन वर्ष, समय सीमा में विस्तार : दो वर्ष, तथा क्षमादान समय सीमा : तीन वर्ष, जिसकी समाप्ति पर आवेदक का एनरोलमेंट और रजिस्ट्रेशन स्वतः ही निरस्त समझा जाएगा।

25. पंजाब विश्वविद्यालय के केलेंडर, भाग-II, 2000 ई. के पृष्ठ 233 पर दिए गए विनियम संख्या 3.1 तथा 3.3, जिनका संबंध पंजाब विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों में अनुवाद-डिप्लोमा (अंग्रेजी से हिन्दी/पंजाबी) से है तथा जो सन् 2003-2004 से लागू होगा तथा जिसे विश्वविद्यालय के विभिन्न निकायों/भारत सरकार/भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशन की प्रत्याशा में लागू मान लिया गया है, में संशोधन :--

3.1 वही व्यक्ति इस परीक्षा में सम्मिलित हो सकेगा, जो विनियम 2 में दी गई योग्यताओं से युक्त है और जो

पंजाब विश्वविद्यालय के हिन्दी/पंजाबी विभाग के अध्यक्ष द्वारा या पंजाब विश्वविद्यालय से सम्बद्ध किसी महाविद्यालय के प्राचार्य द्वारा (जैसी भी स्थिति हो) हस्ताक्षरित निम्नलिखित प्रमाणपत्र प्रस्तुत करेगा :

(अ) अच्छे चरित्र का ।

(आ) परीक्षा से ठीक पूर्ववर्ती सत्र में सम्बद्ध विभाग/महाविद्यालय में नियमित विद्यार्थी रहने का, तथा

(इ) कक्षा में दिए गए कुल व्याख्यानों में से कम से कम 66 प्रतिशत में उपस्थिति का;

3.3 यदि कोई विद्यार्थी निर्दिष्ट पाठ्यक्रम में पढ़ाई करने के बाद परीक्षा में भाग नहीं लेता है या परीक्षा में भाग लेता है और अनुत्तीर्ण रह जाता है, तो उसे इस पाठ्यक्रम में पढ़ाई करने के तीन वर्षों के भीतर, यथास्थिति के अनुसार विभाग के अध्यक्ष/महाविद्यालय के प्राचार्य की संस्तुति पर, फिर से परीक्षा देने की अनुमति दी जा सकती है ।

26. पंजाब विश्वविद्यालय के कैलेंडर, भाग-II, 2000 ई. के पृष्ठ 302 पर दिए गए विनियम 4.1(ए), जिसका सम्बन्ध बी. कॉम (सामान्य तथा आनर्स) परीक्षा से है (सन् 2003-2004 के प्रवेशों से प्रभावी माना जाने वाला), जिसे विश्वविद्यालय के विभिन्न निकायों/भारत सरकार/भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशन की प्रत्याशा में लागू कर दिया गया है, में परिवर्द्धन ।

4.1 वही विद्यार्थी प्रथम/द्वितीय/तृतीय वर्ष की परीक्षा दे सकेगा जिसने--

(अ) विनियम 3 में दी गई, कम से कम एक अकादमिक सत्र पूर्व, योग्यता देने वाली परीक्षा उत्तीर्ण कर ली हो । जिन आवेदकों को, जिस + 2 कक्षा की परीक्षा में पूरक परीक्षा देने के लिए स्थान प्राप्त हुआ हो और उसने बोर्ड की पूरक परीक्षा प्रवेश की अंतिम तिथि से पूर्व उत्तीर्ण कर ली हो, तो उनको आगामी उच्चतर कक्षा में प्रवेश दिया जा सकता है बशर्ते कि वे इसके योग्य हों और उनके लिए स्थान सुलभ हो ।

(आ) XXX XXX XXX

27. विश्वविद्यालय के निकायों/भारत सरकार/भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशित होने की प्रत्याशा में, पंजाब विश्वविद्यालय के कैलेंडर, भाग-II, सन् 2000 के पृष्ठ 360-364 पर दिए गए, एल-एल.एम. परीक्षा से सम्बन्धित परीक्षा-परिणाम को बेहतर बनाने से सम्बन्धित संवर्द्धन ।

“एल-एल.एम. के विद्यार्थी, जिन्होंने 55% से कम कुल अंक प्राप्त किए हों/कर रहे हों, तो उन्हें एल-एल.एम. उपाधि प्राप्त करने की तिथि के लिए अवसर दिया जाएगा।”

नोट :--1. बेहतर हो गए परीक्षा-परिणाम से, मूल परीक्षा के द्वारा निर्धारित वरीयता-क्रम पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा ।

2. जिन्होंने एल-एल.एम. की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है, उन्हें इस विनियम-परिवर्तन के प्रभावी होने की तिथि से दो वर्षों के भीतर ही अपना परीक्षा-परिणाम बेहतर करने का अवसर मिलेगा ।

28. यूनिवर्सिटी इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी की अभियान्तिकी में स्नातक-परीक्षा (बेचलर ऑफ इंजीनियरिंग) से सम्बन्धित विनियम 3 (सन् 2003 के प्रवेशों से प्रभावी) और जिसको सीनेट/भारत सरकार/भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशन की प्रत्याशा में लागू किया गया :

3. इस उपाधि की किसी भी विधा में प्रथम समस्तर के पाठ्यक्रम में प्रवेश-परीक्षा के द्वारा ही प्रवेश मिलेगा । वही आवेदक प्रवेश परीक्षा दे सकेगा, जिसने केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् (सी.बी.एस.ई.), नई दिल्ली की, या इसके समकक्ष की किसी परीक्षा को अनिवार्य विषयों के रूप में उत्तीर्ण किया हो तथा निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय को भी लेकर इस परीक्षा को उत्तीर्ण किया हो ।

1. रसायन विज्ञान
2. जैव-प्रौद्योगिकी
3. कम्प्यूटर विज्ञान
4. जीव विज्ञान (बायोलॉजी)

29. पंजाब विश्वविद्यालय के कैलेंडर, भाग-II, सन् 2000 के पृष्ठ 377 पर दिया गया विनियम 3, जिसका सम्बन्ध स्नातक-स्तरीय अभियान्तिकी परीक्षा से है (सन् 2003 के प्रवेश से प्रभावी), तथा जिसे सीनेट के अनुमोदन/भारत सरकार/भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशन की प्रत्याशा में लागू कर दिया गया है :

3. इस पाठ्यक्रम की किसी भी विधा के पहले समस्तर में प्रवेश, प्रवेश-परीक्षा के द्वारा ही दिया जाएगा। वही आवेदक प्रवेश-परीक्षा दे सकेगा, जिसने केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् (सी.बी.एस.ई.), नई दिल्ली की, या इसके समकक्ष की किसी परीक्षा को अनिवार्य विषयों के रूप में भौतिकी तथा गणित लेकर उत्तीर्ण किया हो तथा निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय के साथ भी लेकर इस परीक्षा को उत्तीर्ण किया हो :

- (I) रसायन विज्ञान (केमिस्ट्री)
- (II) जैव प्रौद्योगिकी (बायो-टेक्नोलॉजी)
- (III) कम्प्यूटर विज्ञान (कम्प्यूटर साइंस)
- (IV) जीव विज्ञान (बायोलॉजी)

30. विश्वविद्यालय के विभिन्न निकायों के द्वारा अनुमोदन/भारत सरकार के द्वारा अनुमोदन/भारत सरकार के राजपत्र के प्रकाशन की प्रत्याशा में एम. टैक (ऊर्जा अभियान्तिकी तथा प्रबन्धन) (सन् 2002-2003 के प्रवेश से प्रभावी) विनियम :

1.1 एम. टैक (ऊर्जा अभियान्तिकी तथा प्रबन्धन) के किसी भी नियमित आवेदक के लिए पाठ्यक्रम चार समस्तर (दो वर्ष) का होगा। किसी भी आवेदक को अधिकतम चार शैक्षणिक वर्षों के भीतर ही इस उपाधि के लिए परीक्षा उत्तीर्ण करनी होगी । ऐसा न होने पर उसे इस पाठ्यक्रम को आगे पढ़ने से वंचित होना पड़ेगा ।

2.1 एम. टैक (ऊर्जा अभियान्तिकी तथा प्रबन्धन) के पाठ्यक्रम में उसी आवेदक को प्रवेश मिलेगा जिसके पास निम्नलिखित योग्यताएं हों --

बी. ई/ बी. टैक या इसके समकक्ष की केमिकल, मैकेनिकल, सिविल प्रोडक्शन, इलेक्ट्रिकल, एग्रीकल्चरल, इंजीनियरिंग में कोई उपाधि, भौतिकी, ऊर्जा, रसायन-विज्ञान में पचपन प्रतिशत कुल प्राप्तांकों के साथ एम.एससी. की उपाधि।

2.2 प्रवेश के लिए वही पद्धति लागू की जाएगी जिसका निर्णय समय-समय पर सिंडीकेट ने किया हो।

2.3 यदि किसी आवेदक ने इंडियन इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (कलकत्ता) (ए.एम.आई.ई.) के 'ए' और 'बी' के अनुभाग उत्तीर्ण कर लिए हों या इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ केमिकल इंजीनियर्स (कलकत्ता) (आई.आई.सी.-एच.ई.) के अनुभाग 'ए' और 'बी' की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली हो, तथा इनमें कुल अंक कम से कम पचपन प्रतिशत प्राप्त किए हों, तो उसे एम. टैक (ऊर्जा अभियान्तिकी तथा प्रबन्धन) पाठ्यक्रम में प्रवेश दिया जा सकता है बशर्ते उसने प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण कर ली हो।

3.1 एम. टैक (ऊर्जा अभियान्तिकी) की उपाधि की परीक्षा दिसम्बर/जनवरी तथा मई/जून या सिंडीकेट द्वारा तय की गई तिथियों पर हुआ करेगी।

3.2 परीक्षा के फार्म तथा परीक्षा शुल्क बिना विलम्ब के तथा विलम्ब सहित लेने की अंतिम तिथियां सिंडीकेट तय करेगी।

3.3 विनियम 3.1 के अधीन सिंडीकेट द्वारा तय की गई तिथियों की सूचना परीक्षा नियंत्रक जारी करेगा।

3.4 यदि कोई आवेदक एम. टैक (ऊर्जा प्रौद्योगिकी) के किसी सम्बद्ध समस्तर में विश्वविद्यालय के विभाग में नियमित विद्यार्थी रहा है और उसने ऊर्जा शोध केन्द्र के निदेशक द्वारा हस्ताक्षरित निम्नलिखित प्रमाण-पत्र प्रस्तुत किए हैं तभी वह उस समस्तर की परीक्षा में बैठ सकेगा :

(i) अच्छे चरित्र का प्रमाण-पत्र।

(ii) प्रत्येक प्रश्न-पत्र में दिए गए व्याख्यानों में से कम से कम 75% उपस्थित रहने का तथा सत्रोपकार्य, ट्यूटोरियल कार्य, प्रयोगशाला का कार्य, सेमिनार में कम से कम 75% उपस्थित रहने का प्रमाण-पत्र तथा विश्वविद्यालय के विभाग द्वारा समय-समय पर जो अभ्यास और आवधिक परीक्षाएं हुई हैं उनमें उत्कृष्टता के साथ सुयश अर्जन करने का प्रमाण-पत्र।

4. उपस्थिति में कमी होने की दशा में ऊर्जा शोधकार्य केन्द्र के निदेशक द्वारा दस प्रतिशत तक की कमी को क्षमा किया जा सकता है।

आवेदक द्वारा प्रवेश के लिए दिए जाने वाला शुल्क सिंडीकेट द्वारा समय-समय पर तय किया जाएगा।

6.1 प्रत्येक आवेदक को परीक्षा के लिए निम्नलिखित पढ़ाई करनी होगी :-

(अ) अभियान्तिकी तथा प्रौद्योगिकी के संकाय द्वारा समय-समय पर तय किए गए प्रश्न-पत्रों में से कम से कम दस सैद्धांतिक प्रश्न-पत्र, जिनका चयन ऊर्जा शोध केन्द्र के निदेशक के

परामर्श से होगा। इसके साथ शर्त यह भी है कि इस पाठ्यक्रम के प्रथम वर्ष के प्रथम सत्र के अंत में किसी भी आवेदक को पांच प्रश्न-पत्रों से अधिक की परीक्षा देने की तथा पहले वर्ष की समाप्ति पर दस प्रश्न-पत्रों (जिनमें पहले समस्तर में उत्तीर्ण किए गए पांच प्रश्न-पत्र सम्मिलित रहेंगे) की परीक्षा देने की अनुमति नहीं होगी।

(आ) स्वच्छता के साथ टंकित या मुद्रित शोध-प्रबंध की चार प्रतियाँ, जिन्हें अच्छी तरह संग्रहित किया गया हो, विश्वविद्यालय में जमा करवानी होंगी।

6.2 अध्ययन और परीक्षा का माध्यम अंग्रेजी भाषा होगा।

7.1 आवेदक अपना शोध-प्रबंध उस सम्बद्ध अध्यापक के निर्देशन में तैयार करेगा जो विश्वविद्यालय/विभाग/सहयोगी संस्था से संबंधित होगा तथा एक संयुक्त शोध निदेशक होगा जो किसी अन्य संस्था, उद्योग/निगम/अन्य संगठन से होगा जो ऊर्जा के क्षेत्र के कार्यरत हो। फिर भी यदि ऊर्जा शोध केन्द्र का निदेशक इस बात से सहमत हो कि शोध प्रबन्ध को तैयार करने की सुविधाएं किसी अन्य जगह पर उपलब्ध हैं तो वह उसे अपना शोध प्रबंध वहां तैयार करने की अनुमति दे सकता है और उसका यह समय एम. टैक. (ऊर्जा प्रौद्योगिकी) के लिए आवश्यक कालावधि में जोड़ दिया जाएगा, लेकिन आवेदक को अपना शोध प्रबन्ध पूरा करने के लिए अपने शोध निदेशक के या ऊर्जा शोध केन्द्र के निदेशक के प्रत्यक्ष निर्देशन में कम से कम चार सप्ताह कार्य करना अनिवार्य होगा।

7.2 शोध प्रबंध में क्रमबद्ध तथा आलोचनात्मक रूप में उस विषय के वर्तमान ज्ञान का विवरण होगा, मूल रूप से किए गए अनुसंधान के परिणाम होंगे तथा शोधकर्ता के स्वतंत्र रूप से शोध करने की क्षमता का प्रदर्शन होगा और शोध प्रबन्ध में यह लिखा जाएगा कि उसने स्वतंत्र रूप से क्या शोध-कार्य किया है तथा यह भी बताया जाएगा कि शोध-प्रबन्ध में सन्निहित अन्य सूचनाएं उसे कहाँ से प्राप्त हुई हैं।

7.3 विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम के तीसरे समस्तर की समाप्ति पर शोध प्रबन्ध जमा कर देगा बशर्ते उसने पहले और दूसरे समस्तरों के सभी सैद्धांतिक प्रश्न-पत्रों की परीक्षा दे दी हो। शोध-प्रबन्ध का परीक्षा परिणाम तभी घोषित किया जाएगा जब उसने सभी दस सैद्धांतिक प्रश्न-पत्रों को उत्तीर्ण किया होगा। यदि किसी विद्यार्थी का शोध-प्रबन्ध अस्वीकृत कर दिया जाता है या वह तीसरे समस्तर में अपना शोध-प्रबन्ध पूरा नहीं कर पाता है तो उसे अधिक से अधिक दो वर्षों की अवधि शोध-प्रबन्ध को जमा करवाने या उसे संशोधित रूप में प्रस्तुत करने के लिए मिल सकती है। इसी के साथ यह भी प्रावधान किया जाता है कि स्थिति के अनुसार ऊर्जा शोध केन्द्र के निदेशक की संस्तुति पर इन दो वर्षों की अवधि कुलपति द्वारा दी जा सकती है।

7.4 शोध-प्रबन्ध की विषय वस्तु पर एक मौखिक परीक्षा होगी। यदि परीक्षक चाहें और इसे आवश्यक समझें तो विद्यार्थी की लिखित परीक्षा और प्रायोगिक परीक्षा भी कर सकते हैं।

8.1 किसी भी विद्यार्थी को परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए निम्नलिखित प्रकार से अंक प्राप्त करने होंगे :-

(अ) प्रत्येक सैद्धांतिक प्रश्न-पत्र में 40% अंक।

(आ) प्रत्येक प्रश्न-पत्र के सत्रीय भाग में 50% अंक ।

8.2 यदि कोई विद्यार्थी विनियम 8.1 के अनुसार किसी भी प्रश्न-पत्र/प्रश्न-पत्रों में उत्तीर्ण नहीं हो पाता है तो उसे बाद में होने वाली परीक्षा में उस प्रश्न-पत्र में फिर से परीक्षा देने की अनुमति दी जा सकती है, जिसके लिए उसे प्रत्येक समस्तर परीक्षा में निर्धारित प्रति प्रश्न-पत्र के हिसाब से परीक्षा शुल्क देना होगा, जिसका निर्धारण समय-समय पर सिंडीकेट अधिकतम रूप में करेगी। साथ ही अन्य समस्तरों की परीक्षा के शुल्क का निर्धारण भी समय-समय पर सिंडीकेट द्वारा किया जाएगा जिसमें वह परीक्षा देगा, इस शर्त के साथ कि उत्तीर्ण होने पर उसे विशेष योग्यता वाली कोटि में नहीं रखा जाएगा ।

9. उत्तीर्ण हुए आवेदकों को निम्नलिखित रूप में वर्गीकृत किया जाएगा :

(अ) वे विद्यार्थी जिन्होंने सभी सैद्धांतिक : विशेष योग्यता प्रश्न-पत्रों के पूर्णांक में से 75% के साथ प्राप्तों और सत्रीय सैद्धांतिक प्रश्न-पत्रों के पूर्णांक में से कम से कम 50% प्राप्तों प्राप्त किए हों और इसके साथ ही उसका शोध प्रबन्ध विशेष-योग्यता वाला समझा गया हो, इस शर्त के साथ कि उसने पहले ही प्रयास में परीक्षा के सभी प्रश्न-पत्र उत्तीर्ण कर लिए हों (अर्थात् विश्व-विद्यालय द्वारा आयोजित परीक्षा पहली बार में दी हो)।

(आ) वे विद्यार्थी जिन्होंने सभी सैद्धांतिक : प्रथम श्रेणी प्रश्न-पत्र और सत्रीय प्रश्न-पत्र उत्तीर्ण कर लिए हों लेकिन जो विशेष योग्यता वाली उत्तीर्णता की श्रेणी में रखे जाने योग्य न हों ।

10. प्रत्येक समस्तर की परीक्षा की समाप्ति के बाद चार सप्ताहों के अन्दर या जितनी जल्दी हो सके, परीक्षा नियंत्रक परीक्षा परिणाम को घोषित और प्रकाशित करेगा । प्रत्येक उत्तीर्ण परीक्षार्थी को उस समस्तर को उत्तीर्ण किए जाने संबंधी प्रमाण-पत्र तथा विनियमों के अनुसार उपाधि प्रदान की जाएगी ।

11. यदि किसी व्यक्ति ने सभी सैद्धांतिक प्रश्न-पत्रों को उत्तीर्ण कर लिया हो और वह शोध-प्रबंध को पूरा न कर पाया हो तो उसे ऊर्जा प्रौद्योगिकी में स्नातकोत्तर उपाधि दी जाएगी ।

31. सीनेट/भारत सरकार के अनुमोदन/भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशन की प्रत्याशा में औषधि निर्माण विज्ञान (फार्मसी) में स्नातक परीक्षा से संबंधित (सन् 2003 के प्रवेश से प्रभावी) विनियम 3.1 :

3.1 पहले समस्तर के पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए एक प्रवेश परीक्षा देनी होगी। वही आवेदक इस परीक्षा को दे सकेगा जिसने 10+2 की परीक्षा भौतिक विज्ञान तथा रसायन विज्ञान अनिवार्य विषयों के रूप में पढ़कर तथा

निम्नलिखित विषयों में से किसी और विषय को पढ़कर उत्तीर्ण की हो :

1. गणित
2. जैव प्रौद्योगिकी
3. कम्प्यूटर विज्ञान
4. जीव-विज्ञान

32. सीनेट/भारत सरकार के अनुमोदन/भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशन की प्रत्याशा में विनियम 2. (सन् 2003 से प्रभावी), जिसका संबंध स्थापत्य में स्नातक परीक्षा से है :

2 प्रथम समस्तर में प्रवेश परीक्षा देनी होगी । इस परीक्षा को वही आवेदक दे सकेगा, जिसने 10+2 कक्षा की परीक्षा भौतिक विज्ञान तथा गणित को अनिवार्य विषयों के रूप में तथा निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय को लेकर उत्तीर्ण की हो :

1. रसायन विज्ञान
2. अभियान्त्रिकी रेखांकन (ड्राइंग)
3. कम्प्यूटर विज्ञान
4. जीव-विज्ञान

33. (i) विपणन प्रबन्धन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा; (ii) कार्मिक प्रबन्धन तथा श्रमिक कल्याण में स्नातकोत्तर डिप्लोमा; (iii) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में स्नातकोत्तर डिप्लोमा से संबंधित (2002-2003 के प्रवेश से प्रभावी) विनियम जिनकी प्रत्याशा विश्वविद्यालय के विभिन्न निकायों/भारत सरकार द्वारा अनुमोदित किए जाने/भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशित होने की है ।

- (i) विपणन प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा ।
- (ii) कार्मिक प्रबंधन तथा श्रमिक कल्याण में स्नातकोत्तर डिप्लोमा ।
- (iii) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में स्नातकोत्तर डिप्लोमा ।

1. सभी स्नातकोत्तर डिप्लोमा के अध्ययन की कालावधि एक वर्ष की होगी । परीक्षा दो समस्तरों में विभाजित होगी। सामान्य रूप से पहले समस्तर की परीक्षा दिसम्बर में और दूसरे समस्तर की परीक्षा अप्रैल/मई के महीने में या सिंडीकेट द्वारा तय की गई तिथियों पर होगी ।
2. सम्बद्ध विभाग का अध्यक्ष/महाविद्यालय का प्राचार्य प्रत्येक समस्तर की परीक्षा आरंभ होने के कम से कम पांच सप्ताह पहले परीक्षा नियंत्रक को परीक्षा में प्रवेश के फार्म और परीक्षा शुल्क के साथ ऐसे विद्यार्थियों की सूची भेजेगा जिन्होंने विनियमों के अधीन सभी शर्तों को पूरा कर लिया है और जो परीक्षा देने के लिए सर्वथा योग्य हैं ।

3. पहले समस्तर में प्रवेश के लिए न्यूनतम योग्यताएं निम्नलिखित होंगी :-

(अ) (i) किसी भी विश्वविद्यालय की किसी भी संकाय की स्नातक/स्नातकोत्तर उपाधि, जिसे सिंडीकेट ने समकक्ष

मान लिया हो तथा उसमें कुल प्राप्तांकों का प्रतिशत 45 हो :

शर्त यह है कि यदि किसी आवेदक ने विश्वविद्यालय की उपाधि किसी आधुनिक भारतीय भाषा [हिन्दी/उर्दू/पंजाबी (गुरुमुखी) लिपि] तथा/या प्राचीन भाषा (संस्कृत/फारसी/अरबी) या किसी अन्य विश्वविद्यालय की इसी प्रकार की कोई उपाधि जिसे सिंडीकेट ने मान्यता दे दी हो, 45% कुल प्राप्तांकों के साथ उत्तीर्ण की हो तो उस भाषा के सभी प्रश्न पत्रों के सभी कुल अंकों के प्रतिशत की गणना की जाएगी और इसमें अतिरिक्त ऐच्छिक प्रश्नपत्र तथा अंग्रेजी का प्रश्नपत्र सम्मिलित नहीं रहेगा जो उसने मूल विषयों के साथ-साथ उत्तीर्ण किया है।

अथवा

- (ii) (क) इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया या इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट्स ऑफ वेल्स; या
(ख) इंस्टीट्यूट ऑफ कॉस्ट एवं वर्क्स अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया या इंस्टीट्यूट ऑफ कॉस्ट एण्ड मैनेजमेंट एकाउंटेंट्स इनकापॉरेटेड बाय रॉयल चार्टर, लंदन; या
(ग) इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया की अंतिम परीक्षा में उत्तीर्णता।
- (iii) कम से कम 50% प्राप्तांकों के साथ ए. एम. आई. ई. परीक्षा में उत्तीर्णता।

4. प्रत्येक आवेदक की परीक्षा समय-समय पर पाठ्यक्रम में सम्मिलित किए गए विषयों में होगी।

प्रत्येक प्रश्नपत्र में आंतरिक मूल्यांकन के लिए 30% अंक निर्धारित रहेंगे। इसमें सेमिनार, परियोजना तथा मौखिक परीक्षा सम्मिलित नहीं होगी।

सेमिनार परियोजना तथा कार्यशाला का मूल्यांकन शत प्रतिशत होगा। मौखिक परीक्षा बाह्य परीक्षक और आंतरिक परीक्षक मिलकर लेंगे।

सम्बद्ध विभाग का अध्यक्ष/कॉलेज का प्राचार्य इन आवधिक परीक्षाओं, लिखित कार्यों, प्रकरण परिचर्या, सिंडीकेट सत्र, कार्यक्षेत्र भ्रमण आदि के अंकों को परीक्षा आरंभ होने से कम से कम एक सप्ताह पहले परीक्षा नियंत्रक को भेज देगा।

5. पहले सेमेस्टर की परीक्षा वही विद्यार्थी दे सकेगा :

(i) जो पहले सेमेस्टर की परीक्षा से ठीक पहले वाले सेमेस्टर में विभाग/कॉलेज में नियमित विद्यार्थी रहा हो।

(ii) जिसने प्रत्येक प्रश्नपत्र में व्याख्यानों, परिसंवादों, प्रकरण परिचर्याओं, सिंडीकेट सत्रों, कार्यक्षेत्र में भ्रमण, परियोजना कार्य इत्यादि में कम से कम 75 प्रतिशत उपस्थिति दर्ज की हो।

6. दूसरे सेमेस्टर की परीक्षा में सम्मिलित होने के लिए किसी भी नियमित विद्यार्थी के लिए यह अनिवार्य होगा कि :-

(अ) वह दूसरे सेमेस्टर की परीक्षा आरंभ होने से ठीक पहले वाले सेमेस्टर में विभाग कॉलेज में नियमित विद्यार्थी रहा हो।

(आ) उसने प्रत्येक प्रश्नपत्र में व्याख्यानों, परिसंवादों, प्रकरण परिचर्याओं, सिंडीकेट सत्रों, कार्यक्षेत्र में भ्रमण, परियोजना कार्य इत्यादि में कम से कम 75 प्रतिशत उपस्थिति दर्ज की हो।

(इ) वह प्रथम सेमेस्टर की परीक्षा उत्तीर्ण कर चुका हो या विनियम के अधीन पुनः परीक्षा देने के योग्य घोषित किया गया हो।

7. प्रत्येक सेमेस्टर में परीक्षा उत्तीर्ण करने के निर्धारित अंक निम्नलिखित रूप में होंगे :-

(i) विश्वविद्यालय की परीक्षा में प्रत्येक प्रश्नपत्र में स्वतंत्र रूप से, तथा आंतरिक मूल्यांकन सहित संयुक्त रूप में भी 35% प्राप्तांक।

(ii) सेमिनार, परियोजना तथा मौखिक परीक्षा में 35% प्राप्तांक।

(iii) प्रत्येक सेमेस्टर में कुल 45% प्राप्तांक।

8. प्रत्येक सेमेस्टर में विश्वविद्यालय की परीक्षा में कुल अंकों के एक प्रतिशत अंक कृपांक के रूप में दिए जाएंगे। कोई भी परीक्षार्थी अपने लाभ की दृष्टि से चाहे तो कुल अंकों में या किसी एक या एक से अधिक प्रश्नपत्रों में इन कृपांकों का लाभ उठा सकता है। ध्यान रहे कि ये कृपांक केवल परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए या उच्चतर श्रेणी प्राप्त करने के लिए ही प्रयुक्त हो सकते हैं, विशेष योग्यता के साथ परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए नहीं।

9. (अ) यदि कोई परीक्षार्थी पहले सेमेस्टर में अनुत्तीर्ण रह जाता है और सेमेस्टर में निर्धारित प्रश्नपत्रों में से 50% प्रश्नपत्रों में, स्वतंत्र रूप से तथा आंतरिक मूल्यांकन सहित संयुक्त रूप में कम से कम 35% अंक प्राप्त कर लेता है, तो उसे दूसरे सेमेस्टर में पढ़ाई जारी रखने की अनुमति होगी, लेकिन उसे आगामी अप्रैल/मई की परीक्षा में ऐसे उन सभी प्रश्नपत्रों में फिर से परीक्षा देनी होगी, जिनमें वह दिसम्बर की परीक्षा में अनुत्तीर्ण रह गया था, साथ ही उसे दूसरे सेमेस्टर की परीक्षा भी देनी होगी।

(आ) यदि कोई परीक्षार्थी दूसरे सेमेस्टर की परीक्षा में अनुत्तीर्ण रह जाता है और वह स्वतंत्र रूप से तथा आंतरिक मूल्यांकन के साथ संयुक्त रूप में कम से कम 35% अंक उस सेमेस्टर में

निर्धारित प्रश्नपत्रों में से 50% प्रश्नपत्रों में प्राप्त कर लेता है, तो उसे सेमेस्टर परीक्षाओं के साथ-साथ दो लगातार परीक्षाओं में उन प्रश्नों में फिर से परीक्षा देने की अनुमति होगी जिन्हें वह अप्रैल में हुई परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं कर पाया है।

व्याख्या: पांच प्रश्नपत्रों का 50% दो प्रश्नपत्रों को माना जाएगा तथा सात प्रश्नपत्रों का 50% तीन प्रश्नपत्रों को माना जाएगा। जो इस विनियम के अनुसार है।

(इ) यदि कोई परीक्षार्थी दूसरे सेमेस्टर के लिए ऊपर दिए गए अवसरों का उपयोग करने के बाद भी उत्तीर्ण नहीं हो पाता है तो उसे पढ़ाई छोड़नी होगी।

10. यदि किसी विद्यार्थी को ऐसे प्रश्नपत्र में पुनः परीक्षा देनी हो, जिसमें शतप्रतिशत आंतरिक मूल्यांकन का ही प्रबन्ध हो तो उसे फिर से कक्षा के व्याख्यानों में उपस्थित रहे बिना उस प्रश्नपत्र को उत्तीर्ण करने के लिए एक अवसर और दिया जाएगा। इसके लिए वर्क असाइनमेंट उसे सम्बद्ध विभाग का अध्यक्ष/कालेज का प्राचार्य देगा।

11. यदि कोई परीक्षार्थी पहले और दूसरे सेमेस्टर में अनुत्तीर्ण रहता है और वह 'पुनर्परीक्षा' के विनियमों की शर्तें पूरी नहीं करता है, तो उसे एक बार फिर आगामी नियमित परीक्षा देने की अनुमति, फिर से व्याख्यानों में उपस्थित हुए बिना दी जा सकती है लेकिन उसे पूरी परीक्षा फिर से देनी होगी।

यदि कोई परीक्षार्थी दूसरे अवसर का उपयोग करने के बाद भी किसी सेमेस्टर परीक्षा को उत्तीर्ण नहीं कर पाता है, तो उसे इस पाठ्यक्रम को छोड़ना पड़ेगा।

12. किसी भी सेमेस्टर की परीक्षा में अनुत्तीर्ण रहने वाले परीक्षार्थी के आन्तरिक मूल्यांकन के अंक आगामी परीक्षा के साथ जोड़ दिए जाएंगे।

13. उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को निम्नलिखित श्रेणियों में रखा जाएगा :

(i) सभी सेमेस्ट्रों की परीक्षाओं के कुल अंकों में से 75 प्रतिशत अंक पाने वाले।

..... प्रथम श्रेणी विशेष योग्यता के साथ

(ii) सभी सेमेस्ट्रों की परीक्षाओं के कुल अंकों में से 60% या इससे अधिक तथा 75% से कम अंक पाने वाले।

..... प्रथम श्रेणी

(iii) सभी सेमेस्ट्रों की परीक्षाओं के

कुल अंकों में से कम से कम 50% तथा 60% से कम अंक पाने वाले।

..... द्वितीय श्रेणी

(iv) सभी सेमेस्ट्रों की परीक्षाओं के कुल अंकों में से 50% से कम अंक पाने वाले।

..... तृतीय श्रेणी ।

परीक्षा समाप्त होने के बाद, जितना शीघ्र हो सके, परीक्षा-नियंत्रक उत्तीर्ण हुए परीक्षार्थियों की सूची प्रकाशित करेगा।

34. होम्योपैथिक औषधियाँ तथा शल्यचिकित्सा (बी. एच.एम.एस.*) में स्नातक उपाधि परीक्षा से सम्बन्धित, (सन् 2002-2003 के सत्र से प्रभावी) तथा सीनेट/भारत से अनुमोदित किए जाने तथा भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशित कर दिए जाने की प्रत्याशा में, विनियम :

(अ) होम्योपैथिक औषधियाँ तथा शल्यचिकित्सा (बी.एच.एम.एस.) की स्नातक उपाधि की शैक्षणिक अवधि साढ़े सात वर्ष की होगी, जिसमें एक वर्ष की अनिवार्य इंटर्नशिप सम्मिलित है।

(आ) इसके अन्तर्गत चार परीक्षाएँ होंगी अर्थात् पहली, दूसरी, तीसरी तथा चौथी। पहली परीक्षा 18 महीनों के बाद, दूसरी परीक्षा 30 महीनों की समाप्ति पर, तीसरी परीक्षा 42 महीनों की समाप्ति पर तथा चौथी परीक्षा 54 महीनों की समाप्ति पर होगी।

किसी भी विद्यार्थी के द्वारा अन्तिम परीक्षा उत्तीर्ण कर लिए जाने के उपरान्त अनिवार्य तौर पर एक इंटर्नशिप होगी, जिसका विवरण निम्नलिखित है :-

अनिवार्य इंटर्नशिप

1. इंटर्नशिप कॉलेज के साथ गठबन्धित अस्पताल में होगी तथा जिन मामलों में ऐसे अस्पताल में सभी विद्यार्थियों को समा पाना सम्भव न हो पाए, उस दशा में केन्द्र सरकार या राज्य सरकार या स्थानीय निकायों के द्वारा चलाए जाने वाले दवाखानों में यह इंटर्नशिप की जा सकती है।

2. एक निर्दिष्ट समय तक इंटर्नशिप के पूरा कर लिए जाने, तथा जहाँ यह इंटर्नशिप की गई है, उस संस्था के अध्यक्ष के द्वारा संस्तुति किए जाने पर, सम्बद्ध विश्वविद्यालय की राज्य परिषद्, यथास्थिति रूप में, उत्तीर्ण विद्यार्थी को उपाधि प्रदान करेगी।

3. इस पाठ्यक्रम के प्रथम वर्ष में वही विद्यार्थी प्रवेश पा सकता है, जिसने प्रवेश के वर्ष में 31 दिसम्बर की तिथि तक 17 वर्ष की आयु प्राप्त कर लेने के बाद, किसी मान्यता प्राप्त परिषद् निकाय, समिति की या पंजाब विश्वविद्यालय के द्वारा 10+2 परीक्षा के समकक्ष मान्य किसी अन्य परीक्षा को भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान तथा जीव विज्ञान के साथ उत्तीर्ण करने के बाद, प्रवेश-परीक्षा को भी उत्तीर्ण कर लिया हो।

4. इस पाठ्यक्रम में प्रवेश की पद्धति वही होगी, जिसे विश्वविद्यालय समय-समय पर तय करेगा।

5. पहले व्यावसायिक बी.एच.एम.एस. (1½ वर्ष के उपरान्त

होने वाली) परीक्षा की पद्धति:—

- (i) किसी भी गैर-स्नातक को बी.एच.एम.एस. की पहली परीक्षा तभी देने की अनुमति मिलेगी, जब वह परीक्षा के लिए निर्धारित विषयों की कक्षाओं सैद्धान्तिक और प्रायोगिक दोनों में नियमित रूप से अध्ययन करने के लिए कम से कम 1½ वर्ष तक किसी होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज में उपस्थित रहा हो और उस संस्था का अध्यक्ष इस बात से संतुष्ट हो।
- (ii) पहला व्यावसायिक कालखंड (प्रोफेशनल पीरियड) सामान्यतः एक सितम्बर से आगामी वर्ष के फरवरी महीने के अन्त तक चलेगा। इसकी परीक्षा सामान्यतः मार्च के अन्त तक समाप्त होगी पहले व्यावसायिक कालखंड की पूरक परीक्षा, मुख्य परीक्षा के परिणाम की घोषणा के छः सप्ताहों के भीतर ही आयोजित होगी। पहली प्रोफेशनल परीक्षा के उपरान्त किसी भी परीक्षार्थी को तीन और अवसर (नियमतः कुल चार अवसर) परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए दिए जाएंगे।
- (iii) तथापि, यदि कोई विद्यार्थी पहली प्रोफेशनल परीक्षा में, किसी एक विषय में, या एक से अधिक विषयों में अनुत्तीर्ण रहता है, तो भी उसे दूसरे प्रोफेशनल में पढ़ने की अनुमति दी जा सकती है।
- (iv) यदि कोई परीक्षार्थी पहले प्रोफेशनल बी.एच.एम.एस. की परीक्षा को उत्तीर्ण नहीं कर पाता है, तो उसे आगामी उच्चतर कक्षा में पढ़ने की अनुमति मिल सकती है, लेकिन वह दूसरे प्रोफेशनल की परीक्षा तब तक नहीं दे सकेगा, जब तक कि वह पिछली कक्षा के सभी प्रश्नपत्रों (विषयों) में उत्तीर्ण नहीं हो जाता।
- (v) पहली प्रोफेशनल परीक्षा उन्ही विषयों की होगी, जिसको पाठ्यक्रम में निर्धारित किया गया है। सभी परीक्षार्थियों के लिए इन सब विषयों में उत्तीर्ण होना अनिवार्य है।
- (vi) होम्योपैथी के तथा सम्बद्ध औषधीय विषयों में उत्तीर्णांक, प्रत्येक भाग में (लिखित, मौखिक तथा प्रायोगिक), 50% होंगे।
- (vii) किसी भी विषय में 75% या इससे अधिक अंक पाने वाले किसी भी परीक्षार्थी को प्रतिष्ठांक (आनर्स) दिए जाएंगे, यदि उनसे पहले ही प्रयास में परीक्षा उत्तीर्ण कर ली हो।
- (viii) परीक्षा देने से पूर्व, सभी परीक्षार्थियों को कॉलेज के प्राचार्य से इस बात का प्रमाण-पत्र लेना होगा कि उन्होंने पहले प्रोफेशनल की परीक्षा के लिए निर्धारित सभी सैद्धान्तिक तथा प्रायोगिक पाठ्यक्रम का सभी विषयों में विधिवत् अध्ययन कर लिया है।
- (ix) किसी एक या एक से अधिक विषयों में उत्तीर्ण न हो पाने वाला परीक्षार्थी पूरक परीक्षा दे सकता है।
पहले प्रोफेशनल की परीक्षा में सभी स्वीकार्य अवसरों, जिनका उल्लेख ऊपर हो चुका है, का प्रयोग कर लेने के बावजूद यदि कोई परीक्षार्थी उत्तीर्ण नहीं हो पाता है, तो उसे पढ़ाई आगे जारी रखने की अनुमति नहीं होगी। फिर भी, यदि किसी परीक्षार्थी की निजी बीमारी/कोई गम्भीर बीमारी दुर्घटना/या कोई अपरिहार्य स्थिति/या दशा का मामला हो, तो कुलपति

उन अवसरों के बदले में एक या एक से अधिक अवसर पहले प्रोफेशनल कोर्स को उत्तीर्ण करने के लिए दे सकता है।

- (x) दूसरी प्रोफेशनल बी.एच.एम.एस. परीक्षा 2½ वर्ष की समाप्ति पर होगी।
- (xi) दूसरे प्रोफेशनल कोर्स का सत्र सामान्यतः अप्रैल के महीने से, पहले प्रोफेशनल की परीक्षा की समाप्ति के बाद, शुरू होगा, और इसकी परीक्षा अगले वर्ष, 2½ वर्ष व्यतीत हो जाने के बाद, मार्च के महीने में होगी।
- (xii) दूसरे प्रोफेशनल कोर्स की परीक्षा, पहले प्रोफेशनल की परीक्षा के एक वर्ष बाद, पाठ्यक्रम में निर्धारित सभी विषयों में होगी। परीक्षार्थी से इन सब विषयों में उत्तीर्ण होना अपेक्षित है।
- (xiii) सामान्यतः दूसरे प्रोफेशनल की पूरक परीक्षा सितम्बर के महीने में होगी। जो विद्यार्थी पूरक परीक्षा में एक या एक से अधिक विषयों में उत्तीर्ण नहीं हो पाते हों, वे आगामी दूसरे प्रोफेशनल की परीक्षा देने के योग्य होंगे।
- (xiv) होम्योपैथी तथा सम्बद्ध आयुर्विज्ञान के सभी विषयों के प्रत्येक भाग (लिखित, मौखिक तथा प्रायोगिक) में उत्तीर्णांक 50% होंगे।
- (xv) किसी भी विषय में 75% या इससे अधिक अंक पाने वाले किसी भी विद्यार्थी को उस विषय में [प्रतिष्ठापूर्ण उत्तीर्णता (आनर्स)] दी जाएगी, यदि उसने परीक्षा पहले ही प्रयास में उत्तीर्ण कर ली हो।

चौथे प्रोफेशनल की परीक्षा (4½ वर्ष के उपरान्त होने वाली)

- (i) किसी भी विद्यार्थी को बी.एच.एम.एस. की चौथी परीक्षा तब तक देने की अनुमति नहीं होगी, जब तक कि :
(अ) उसने बी.एच.एम.एस. की तीसरी परीक्षा कम से कम एक वर्ष पहले उत्तीर्ण न कर ली हो।
(आ) वह बी.एच.एम.एस. के पाठ्यक्रम में निर्धारित सभी विषय नियमित विद्यार्थी के रूप में पढ़ चुका हो। ये सभी विषय उसके लिए उत्तीर्ण करना अनिवार्य है।
- (ii) यदि कोई विद्यार्थी चौथी प्रोफेशनल परीक्षा में एक विषय या एक से अधिक विषयों में अनुत्तीर्ण रहता है, तो वह चौथे प्रोफेशनल की आगामी परीक्षा दे सकता है, जो सामान्यतः प्रत्येक छः सप्ताहों के बाद या सुयोग्य अधिकारी के द्वारा समय-समय पर तय किए गए समय पर होगी।
- (iii) होम्योपैथी तथा सम्बद्ध आयुर्विज्ञान के विषयों के सभी भागों (लिखित, मौखिक तथा प्रायोगिक) में उत्तीर्णांक 50% होंगे।
- (iv) किसी भी विषय में 75% या इससे अधिक अंक पाने वाले विद्यार्थी को प्रतिष्ठापूर्ण उत्तीर्णता (आनर्स) दी जाएगी, यदि उसने पहले प्रयास ही में परीक्षा उत्तीर्ण कर ली हो।

6. परीक्षा-परिणाम तथा पुनर्प्रवेश

- (i) प्रत्येक आवेदक को, परीक्षा के लिए घोषित तिथि से कम से कम 21 दिन पहले, परीक्षा-शुल्क के साथ निर्धारित फार्म

पर, परीक्षा में सम्मिलित होने के लिए सम्बद्ध अधिकारी को आवेदन देना होगा।

- (ii) परीक्षा की समाप्ति पर, यथाशीघ्र रूप में, परीक्षा-निकाय निम्नलिखित क्रम में उत्तीर्ण विद्यार्थियों की सूची प्रकाशित करेगा :

(अ) वरीयता क्रम में पहले दस परीक्षार्थियों के नाम तथा उनके अनुक्रमांक।

(आ) अन्य परीक्षार्थियों के क्रमबद्ध रूप में अनुक्रमांक।

- (iii) प्रत्येक परीक्षार्थी को उत्तीर्ण हो जाने पर सम्बद्ध निकाय के द्वारा निर्धारित प्रारूप में एक प्रमाण पत्र प्रदान किया जाएगा।

- (iv) यदि कोई परीक्षार्थी परीक्षा देता है और किसी एक विषय या एकाधिक विषयों में अनुत्तीर्ण रहता है, तो उसे अनुत्तीर्णता वाले विषय के परीक्षा-भाग में पूरक परीक्षा देने की अनुमति होगी। इसके लिए उसे निर्धारित फार्म पर, निर्धारित शुल्क के साथ, प्रथम परीक्षा के परिणाम के प्रकाशन के छः सप्ताह के बाद आवेदन देना होगा।

- (v) यदि किसी परीक्षार्थी को एक विषय या एकाधिक विषयों में, पूरक परीक्षा में, उत्तीर्णक मिलते हैं, तो उसे सम्पूर्ण परीक्षा में उत्तीर्ण माना जाएगा।

- (vi) यदि कोई परीक्षार्थी पूरक परीक्षा में किसी एक विषय या एकाधिक विषयों में अनुत्तीर्ण रहता है, तो वह (विनियम के अधीन वांछित प्रमाण-पत्र के अतिरिक्त) इस आशय का प्रमाण पत्र, कि उसने अनुत्तीर्णता वाले विषय या विषयों में नियमित रूप से कक्षाओं में पढ़ाई की है और प्राचार्य इस बात से संतुष्ट है, प्रस्तुत करने के उपरान्त आगामी वार्षिक परीक्षा दे सकता है। शर्त यह है कि उसे प्रथम बार पाठ्यक्रम के आरम्भ होने की तिथि से सम्पूर्ण परीक्षा की तिथि से भीतर ही चार अवसरों (पूरक परीक्षा को सम्मिलित करते हुए) के प्रयोग में ही परीक्षा के सभी भागों को उत्तीर्ण करना होगा।

- (vii) यदि कोई विद्यार्थी निर्धारित चार अवसरों में भी सभी विषयों को उत्तीर्ण नहीं कर पाता है, तो उसे फिर से सभी विषयों को, सभी भागों सहित कॉलेज एक वर्ष तक प्राचार्य के संतोष तक, पढ़ना होगा और सभी विषयों में परीक्षा देनी होगी।

यह भी प्रावधान किया जाता है कि यदि बी.एच.एम.एस. के चौथे प्रोफेशनल में निर्धारित अवसरों के अन्त तक किसी एक विषय को उत्तीर्ण नहीं कर पाता है, तो उसे आगामी परीक्षा में उस एक विषय को उत्तीर्ण करने की अनुमति होगी और उसे इस विशेष अवसर से परीक्षा को पूरा करना होगा।

- (viii) परीक्षा लेने वाला निकाय, अपवाद-स्वरूप परिस्थितियों में, सेंट्रल कौंसिल ऑफ होम्योपैथी को सूचित करते हुए, आंशिक रूप से या सम्पूर्णता में किसी परीक्षा को निरस्त कर सकता है और परीक्षा निरस्त होने के 30 दिनों के भीतर ही उन विषयों में दोबारा परीक्षा आयोजित करेगा।

7. वे ही विद्यार्थी बी.एच.एम.एस. की पहली, दूसरी, तीसरी तथा चौथी परीक्षा दे सकते हैं, जिनके पास निम्नलिखित योग्यताएं हों :

- (अ) जो कॉलेज में निरन्तर और नियमित, बी.एच.एम.एस. के पहले प्रोफेशनल में 1½ वर्ष; दूसरे, तीसरे तथा चौथे प्रोफेशनल में एक-एक वर्ष, विद्यार्थी रहे हों।

(आ) जिनका चरित्र अच्छा हो।

- (इ) जो निम्नलिखित में अलग-अलग रूप में कम से कम 75% उपस्थित रहे हों :

(i) दिए गए व्याख्यानों में

तथा

(ii) प्रदर्शनों (डिमांस्ट्रेंस) तथा किए गए प्रयोगों में।

यह भी प्रावधान किया जाता है कि कॉलेज का प्राचार्य प्रत्येक सैद्धांतिक तथा प्रायोगिक विषय में अलग-अलग रूप में कुल दिए गए व्याख्यानों का 5% तक उपस्थिति की कमी को माफ कर सकता है, जिसमें सभी प्रकार के क्रियाकलाप का समय अर्थात् अवकाश, खेल-कूद, समारोह आदि सम्मिलित हैं।

35. एम.एस-सी. (शरीर विज्ञान) से सम्बन्धित सीनेट/भारत सरकार के अनुमोदन/भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशन की प्रत्याशा में (सन् 2003-2004 से प्रभावी) विनियम :

मास्टर ऑफ साइंस (शरीर विज्ञान) से सम्बन्धित विनियम

- एम.एस-सी. शरीर विज्ञान (फिजियोलोजी) के पाठ्यक्रम की अवधि दो शैक्षणिक वर्षों की होगी।
- परीक्षा की पद्धति अर्थात् वार्षिक पद्धति या समस्तर पद्धति नियमानुसार होगी।
- एम.एस-सी. शरीर विज्ञान में वही व्यक्ति प्रवेश का पात्र होगा, जिसने पंजाब विश्वविद्यालय की या अन्य किसी विश्वविद्यालय की सिडीकेट के द्वारा समकक्ष मान्यताप्राप्त निम्नलिखित परीक्षाओं में से किसी एक को उत्तीर्ण किया हो :
 - बी.एस-सी. [शरीर रचना (एनॉटॉमी), शरीर विज्ञान तथा जैव-रसायन विज्ञान के साथ]।
 - बी.एस-सी. मानव जीव विज्ञान [ह्यूमन बायोलोजी/जीवन विज्ञान (लाइफ साइंस)]।
 - बी.एस-सी. [आनर्स स्कूल : शरीर विज्ञान/प्राणिविज्ञान (जूआलोजी)/जैव-रसायन विज्ञान/जैव-भौतिकी/जैव-प्रौद्योगिकी के साथ]।
 - बी.एस-सी. प्राणि विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, रसायन विज्ञान/जैव-रसायन विज्ञान।

4. परीक्षा के लिए पात्रता-अंक

- (i) कोई भी विद्यार्थी तभी उत्तीर्ण घोषित किया जाएगा, यदि उसे अलग-अलग प्रथम वर्ष तथा द्वितीय वर्ष के प्रत्येक सैद्धांतिक

और प्रायोगिक प्रश्न-पत्र में कम से कम 50% अंक प्राप्त किए हैं।

- (ii) प्रत्येक सैद्धान्तिक और प्रायोगिक प्रश्न-पत्र (भाग-I तथा भाग-II) में आंतरिक मूल्यांकन में कुल निर्धारित अंकों के दस प्रतिशत अंक निर्धारित अंक हैं। सैद्धान्तिक प्रश्न-पत्र में आंतरिक मूल्यांकन के अंक, विभाग द्वारा समय-समय ली गई विभिन्न परीक्षाओं में समवेत रूप में निष्पादन क्षमता के आधार पर किए जाएंगे। प्रयोगों के लिए आंतरिक मूल्यांकन का आधार विभाग द्वारा समय-समय पर प्रायोगिक परीक्षाओं में निष्पादन क्षमता को माना जाएगा।

- (iii) शोध-प्रबंध को 'संतोषजनक' या 'असंतोषजनक' के रूप में मूल्यांकित किया जाएगा तथा 'संतोषजनक' को ही उत्तीर्ण घोषित किया जाएगा।

- (iv) यदि कोई विद्यार्थी पढ़ाई पूरी करने के बाद परीक्षा (भाग-I या भाग-II) में अनुत्तीर्ण रह जाता है या परीक्षा को वैध कारणों से नहीं दे पाता तो वह पूरक परीक्षा दे सकता है। उसे वर्ष की पढ़ाई के पूरे किए जाने पर आंतरिक मूल्यांकन के लिए दिए गए अंक पूरक परीक्षा में जोड़ दिए जाएंगे।

- (v) यदि कोई विद्यार्थी तीन प्रयासों में भी उत्तीर्ण नहीं हो पाता तो उसे शरीर विज्ञान में एम.एससी. की परीक्षा के लिए पढ़ाई जारी रखने की अनुमति नहीं होगी। ध्यान रहे, इसके लिए अधिकतम अवधि तीन वर्ष की होगी जो, इस पाठ्यक्रम में उसके प्रवेश लेने की तिथि से गिनी जाएगी। विद्यार्थी को भाग-I की परीक्षा में सम्मिलित होने की पात्रता तभी मिलेगी जब उसने भाग-एक की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली हो। यदि किसी विद्यार्थी का शोध प्रबन्ध संतोषजनक स्वीकृत हो गया हो लेकिन वह भाग-II की परीक्षा में अनुत्तीर्ण रह गया/गई हो तो उसे दोबारा शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं है।

5. शरीर विज्ञान में एम.एससी. भाग-I की परीक्षा के लिए प्रत्येक विद्यार्थी को निम्नलिखित शर्तें पूरी करनी होंगी और इन्हें अपने कालेज के प्रधानाचार्य द्वारा सूचित करना होगा कि वह कक्षा में दिए गए सैद्धान्तिक व्याख्यानों और किए गए प्रयोगों में अलग-अलग रूप में कम से कम 75% उपस्थित रहा/रही है। (यह गणना परीक्षा आरंभ होने की तिथि से एक महीने पहले तक लागू होगी)।

भाग-II की परीक्षा में वही विद्यार्थी सम्मिलित हो सकेगा जो संस्था के अध्यक्ष द्वारा हस्ताक्षरित निम्नलिखित प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करेगा।

- (अ) शरीर विज्ञान में एम.एससी. भाग-I परीक्षा उत्तीर्ण करने का।
(आ) उसकी उपस्थिति (i) पूरे पाठ्यक्रम में कक्षा में दिए गए प्रत्येक प्रश्न-पत्र में कुल व्याख्यानों में 75% (यह गणना परीक्षा आरम्भ होने की तिथि से एक महीना पहले तक की होगी। (ii) पाठ्यक्रम में निर्धारित प्रायोगिक कक्षाओं में 75% उपस्थिति।
(इ) अपने निर्देशक के निर्देशानुसार उसने अपना शोध-प्रबंध प्रस्तुत कर दिया हो।

- (ई) यदि कोई विद्यार्थी भाग-I की परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो पाता है तो उसे भाग-II की पढ़ाई जारी रखने की अनुमति होगी, लेकिन उसे भाग-II की परीक्षा देने की अनुमति तभी मिलेगी, जब वह भाग-I की परीक्षा उत्तीर्ण कर लेगा/लेगी।

6. प्रवेश के फार्म स्वीकार करने की, बिना विलम्ब-शुल्क और विलम्ब-शुल्क के साथ, सिडीकेट के द्वारा तय की जाएगी तथा इसकी अधिसूचना परीक्षा-नियंत्रक जारी करेगा।

7. उत्तीर्ण परीक्षार्थियों का श्रेणी-विभाजन

परीक्षा-नियंत्रक परीक्षा समाप्त होने के बाद यथाशीघ्र उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के सूची प्रकाशित करेगा। भाग-I तथा भाग-II की परीक्षा देने वाले प्रत्येक परीक्षार्थी को एक विस्तृत अंक-पत्र दिया जाएगा।

8. सभी उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को निम्नलिखित श्रेणियों में रखा जाएगा, जो भाग-I तथा भाग-II की परीक्षाओं में संयुक्त रूप से उनके प्राप्तांकों पर आधारित होंगी :

- (i) पहले ही प्रयास में परीक्षा को प्रथम श्रेणी प्रतिष्ठा के साथ उत्तीर्ण कर लेने वाले तथा 75% या इससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले। : प्रथम श्रेणी प्रतिष्ठा के साथ
(ii) कुल अंकों में से 60% या इससे अधिक तथा 75% से कम अंक प्राप्त करने वाले। : प्रथम श्रेणी
(iii) कुल अंकों में से 50% या इससे अधिक तथा 60% से कम अंक प्राप्त करने वाले। : द्वितीय श्रेणी

36. नारी-विषयक अध्ययन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (द्वि-समस्तर पाठ्यक्रम) तथा नारी-विषयक/लिंग-परक अध्ययन में एम.फिल. की परीक्षा, सन् 2002 से सम्बन्धित, विश्वविद्यालय के विभिन्न निकायों/भारत सरकार के अनुमोदन तथा भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशन की प्रत्याशा में विनियम :

- (i) नारी-विषयक अध्ययन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (द्वि-समस्तर पाठ्यक्रम);
(ii) नारी-विषयक अध्ययन में एम. फिल.
तथा
(iii) नारी-विषयक अध्ययन में पी-एच.डी।

नारी-विषयक अध्ययन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा

- नारी-विषयक अध्ययन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा के पाठ्यक्रम की अवधि दो समस्तरों में विभाजित एक वर्ष की होगी।
- पहले और दूसरे समस्तर में वे अनिवार्य/ऐच्छिक प्रश्न-पत्र होंगे, जिनका प्रावधान नियमों/पाठ्यक्रम में होगा।
- इस पाठ्यक्रम में वही विद्यार्थी प्रवेश ले सकेगा, जिसने इस विश्वविद्यालय की निम्नलिखित परीक्षाओं में से किसी एक परीक्षा को, या पंजाब विश्वविद्यालय के द्वारा निम्नलिखित परीक्षाओं के समकक्ष मानी गई अन्य किसी विश्वविद्यालय की किसी परीक्षा को उत्तीर्ण कर लिया हो।

- (i) किसी भी संकाय की स्नातक उपाधि, कुल 50% प्राप्ताओं के साथ।
- (ii) बी.ए. (उत्तीर्ण), नारी विषयक/लिंग-विषयक अध्ययन या लोक प्रशासन, राजनीति विज्ञान या इतिहास या अर्थशास्त्र या समाजशास्त्र या मनोविज्ञान या गांधी साहित्य या भूगोल या मनोविज्ञान के साथ, कम से कम 45% प्राप्तांक सहित।

4. नारी विषयक अध्ययन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा की सामान्यतः पहले समस्तर की परीक्षा दिसम्बर के महीने में तथा दूसरे समस्तर की परीक्षा अप्रैल/मई के महीने में या विश्वविद्यालय के द्वारा तय की गई तिथियों पर होगी।

5. परीक्षा को उत्तीर्ण करने के लिए प्रत्येक प्रश्न-पत्र जिसमें परियोजना कार्य, क्षेत्र-भ्रमण, सेमिनार, कार्यशाला आदि सम्मिलित हैं, में न्यूनतम 40% अंक अपेक्षित हैं।

6. पहले समस्तर की परीक्षा वही परीक्षार्थी दे सकेगा :

- (i) जो पहले समस्तर की परीक्षा से ठीक पूर्व के समस्तर में विभाग का नियमित विद्यार्थी रहा हो।
- (ii) जो प्रत्येक प्रश्न-पत्र में कुल व्याख्यानों, परिसंवादों, क्षेत्र-भ्रमणों, कार्यशालाओं आदि में 60% से कम उपस्थित न रहा हो।

7. दूसरे समस्तर की परीक्षा वही परीक्षार्थी दे सकेगा :

- (i) जो दूसरे समस्तर की परीक्षा से ठीक पहले वाले समस्तर में विभाग का नियमित विद्यार्थी रहा हो।
- (ii) जो प्रत्येक प्रश्न-पत्र के कुल व्याख्यानों, परिसंवादों, क्षेत्र-भ्रमणों, कार्यशालाओं आदि में 60% से कम उपस्थित न रहा हो।
- (iii) जिसने पहले समस्तर की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली हो या जो विनियम सं. की शर्तों को पूरा करता हो।

8. यदि कोई परीक्षार्थी पहले समस्तर में उत्तीर्ण न हो सका हो, और उसने समस्तर में निर्धारित प्रश्न-पत्रों में कम से कम 35% अंक प्राप्त किए हों, तो उसे दूसरे समस्तर में पढ़ाई जारी रखने की अनुमति होगी, किन्तु उसे उन सभी प्रश्न-पत्रों की आगामी अप्रैल/मई के महीने में फिर से परीक्षा देनी होगी, जिनमें वह दिसम्बर में हुई परीक्षा में अनुत्तीर्ण रह गया/गई हो, साथ ही उसे दूसरे समस्तर की परीक्षा भी देनी होगी। यदि वह दूसरी बार भी अनुत्तीर्ण रह जाता/जाती है, तो उसका दूसरे समस्तर का परीक्षा-परिणाम निरस्त कर दिया जाएगा और उसे इस पाठ्यक्रम की पढ़ाई छोड़नी होगी।

यदि किसी परीक्षार्थी ने दूसरे समस्तर में निर्धारित प्रश्न-पत्रों में कम से कम 35% अंक प्राप्त किए हों, लेकिन वह अनुत्तीर्ण रह गया/गई हो, तो उसे व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में अनुत्तीर्णता वाले प्रश्न-पत्रों की फिर से परीक्षा देने की, बिना पुनः प्रवेश लिए, पाठ्यक्रम समाप्ति के एक वर्ष के भीतर ही, अनुमति होगी।

9. उत्तीर्ण हुए परीक्षार्थियों को निम्नलिखित तीन श्रेणियों में रखा जाएगा :

- (i) 60% या इससे अधिक अंक पाने वाले विद्यार्थियों को प्रथम श्रेणी मिलेगी।
- (ii) 50% या इससे अधिक, किन्तु 60% से कम अंक पाने वाले विद्यार्थियों को द्वितीय श्रेणी मिलेगी।
- (iii) 50% से कम अंक पाने वाले विद्यार्थियों को तृतीय श्रेणी मिलेगी।

10. किसी परीक्षार्थी को पुनः परीक्षा की देयता वाले प्रश्न-पत्रों की पुनः परीक्षा के प्रश्न-पत्रों के कुल अंकों के 1% कृपांक उस स्थिति में दिए जा सकते हैं, यदि इन कृपांकों से वह उन प्रश्न-पत्रों में उत्तीर्ण हो जाता/जाती है। पहले और दूसरे समस्तर की परीक्षाओं के कुल अंकों के 1% कृपांक पहले और दूसरे समस्तर दोनों के प्राप्तांकों में उच्चतर श्रेणी के हेतु, जोड़े जा सकते हैं। यदि उसे उत्तीर्ण होने के लिए कृपांक नहीं दिए गए हों, चाहे वह पहले समस्तर की परीक्षा हो या दूसरे समस्तर की परीक्षा हो।

11. यदि कोई परीक्षार्थी अपनी श्रेणी को उच्चतर बनाने के लिए फिर से परीक्षा देता है, तो उसे निम्नलिखित रूप में कुल अंकों के 1% कृपांक मिलेंगे :--

- (i) यदि कोई परीक्षार्थी किसी एक समस्तर की ही फिर से परीक्षा देता/देती है, उसे पुनः परीक्षा दिए जाने वाले प्रश्न-पत्र के कुल अंकों के 1% कृपांक दिए जाएंगे।
- (ii) यदि कोई परीक्षार्थी दोनों समस्तरों की परीक्षा फिर से देता है, तो उसे दोनों समस्तरों के अंकों के कुल योग के 1% कृपांक दिए जाएंगे।

शर्त यह है कि किसी भी परीक्षार्थी को उतने अंकों से अधिक कृपांक नहीं दिए जाएंगे, जितने न्यूनतम अंकों की उच्चतर श्रेणी पाने के लिए उसे आवश्यकता है। परीक्षा के समाप्त होने के बाद यथाशीघ्र परीक्षा-नियंत्रक उत्तीर्ण परीक्षार्थियों की सूची प्रकाशित करेगा।

नारी-विषयक अध्ययन में एम. फिल. से सम्बन्धी विनियम

1. एम. फिल. पाठ्यक्रम की अवधि अठ्ठारह महीनों की होगी, जो तीन समस्तरों में विभाजित रहेगी।
2. पहले दो समस्तरों की शर्तें वे ही होंगी, जो स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम की हैं।
3. तीसरे समस्तर में किसी भी विद्यार्थी को एक शोध प्रबंध लिखना और प्रस्तुत करना होगा, जिसके लिए 200 अंक निर्धारित रहेंगे और इसे पाठ्यक्रम की समाप्ति के बाद छः महीनों के अन्दर ही प्रस्तुत करना होगा।
4. इसमें वही व्यक्ति प्रवेश के लिए आवेदन दे सकेगा, जिसने इस विश्वविद्यालय की किसी भी संकाय की स्नातकोत्तर उपाधि, या किसी अन्य विश्वविद्यालय की, इस विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर उपाधि के समकक्ष घोषित की गई कोई उपाधि, प्राप्त की हो।
5. जिन विद्यार्थियों ने नारी-विषयक अध्ययन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम में प्रवेश प्राप्त कर लिया हो, वे चाहें तो

नारी-विषयक अध्ययन में एम. फिल. की पढ़ाई कर सकते हैं, बशर्ते उन्होंने किसी भी संकाय, इसी विश्वविद्यालय ने अपनी स्नातकोत्तर उपाधि के समकक्ष मान लिया हो, में कम से कम 50% अंक प्राप्त किए हों।

पी-एच. डी. कार्यक्रम

पी-एच. डी. के कार्यक्रम में किसी भी संकाय की स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने वाले किसी भी व्यक्ति को प्रवेश दिया जा सकता है। अन्य शर्तें विश्वविद्यालय के नियमों तथा विनियमों के अनुसार होंगी।

चंडीगढ़-160014

दिनांक

(आर. एल. धवन)

डिप्टी रजिस्ट्रार (जनरल)

21-4-2006 के दिन (शुक्रवार) मेरी उपस्थिति में पंजाब विश्वविद्यालय की समान्य मोहर लगाई गई।

एस. एस. बारी, कुलसचिव

[विज्ञापन III/IV/72/2006/असा.]

PANJAB UNIVERSITY

NOTIFICATION

Chandigarh, the 30th May, 2006

No. 2/2006/GR

The Central Government (Ministry of Human Resource Development, Department of Secondary & Higher Education) have accorded approval vide their letter No. F. No. 2-5/2005-U-II dated 13-9-2005 to the following Regulations :

1. Amendment of Regulations 1, 2.1, 2.2, 3, 4, 5, 6.1, 6.2, 6.3, 7, 8, 9, 10, 11, 12 and 13 for Master of Computer Applications (M.C.A.) (Semester System) examinations (effective from the session 2001) at pages 155-158 of P.U. Calendar, Volume II, 2000 and given effect to in anticipation of the approval of various University bodies/Government of India/publication in the Government of India Gazette.

1. The duration of the course leading to the degree of Master of Computer Applications shall be three academic years comprising of six semesters. The examination of various semesters will be held on such dates as may be fixed by the Syndicate from time to time.

2.1 The minimum qualification for admission to the First year of the course shall be :

- (i) Bachelor's degree in any discipline with at least 50 marks in aggregate under 10+2+3 system of examination of Panjab University.

- (ii) Any other examination recognized by the Panjab University as equivalent to the above examination with at least 50% marks in aggregate.

2.2 The admission will be only to First Semester of First Year of M.C.A. The admission will be governed by the rules framed by the Syndicate from time to time.

3. Every candidate admitted to the M.C.A. course shall pay admission and examination fee for each semester of an academic year to the University as prescribed by the Syndicate/Senate from time to time.

A candidate appearing in any paper(s) as reappear candidate in the examination shall pay examination admission fee per paper subject to the maximum fee for the full semester examination, in addition to the examination admission fee for the semester examination, if any, in which he appears as a regular candidate, as may be prescribed by the Syndicate/Senate from time to time.

4. Before the commencement of each semester examination, the Chairperson of the Department of Computer Science and Applications shall forward to the Controller of Examinations, a list of students who have satisfied the requirements of rules and regulations and are qualified to appear in the examination.

5. At the end of each semester, every candidate shall appear in the whole examination or in such subjects as may be prescribed by the Board of Studies from time to time keeping in view the course/objectives and approved by the appropriate University authorities. The medium of instruction and examination shall be English.

6.1 The First and Second semester examinations shall be open to a regular candidate who :

- (i) has been on the rolls of the Department of Computer Science and Applications during first and second semester respectively preceding the examination;
- (ii) has attended not less than 75 per cent of the lectures and practicals in each subject of the prescribed course for the First and Second semester examinations, a deficiency of up to 10 per cent of the lectures actually delivered and practicals conducted may be condoned by the Board of Studies on the recommendation of the Chairman of the Department;
- (iii) has obtained at least 40 per cent marks in the internal assessment of each such subject.

6.2 The Third and Fourth semester examinations shall be open to a regular candidate who :

- (i) has been on the rolls of the Department of Computer Science and Applications during Third and Fourth semester respectively preceding the examination;
- (ii) has passed the First and Second semester examinations or is eligible to appear in the Third and Fourth semester examination under Regulation 9;

- (iii) has attended not less than 75 per cent of the lectures and practicals in each subject of the prescribed course for the Third and Fourth semester examination, provided that deficiency of not more than 10 per cent of the lectures actually delivered and practicals conducted may be condoned by the Board of Studies on the recommendation of the Chairman of the Department;
- (iv) has obtained at least 40 per cent marks in the internal assessment of each such subject.

6.3 The Fifth and Sixth semester examinations shall be open to a candidate who :

- (i) has been on the rolls of the Department of Computer Science and Applications during Fifth and Sixth semester preceding the examination;
- (ii) has passed the First, Second, Third and Fourth Semester examinations or is eligible to appear in the Fifth and Sixth Semester examination under Regulation 9;
- (iii) has attended not less than 75 per cent of the lectures and practicals in each subject of the prescribed course of the Fifth and Sixth semesters of the Third year examination, provided that a deficiency of not more than 10 per cent of the lectures actually delivered and practicals conducted may be condoned by the Board of Studies on the recommendation of the Chairman of the Department;
- (iv) has obtained at least 40 per cent marks in the internal assessment of each such subject.

7. The minimum percentage of marks required to appear in and pass the First, Second, Third, Fourth, Fifth and Sixth Semester examinations shall be as follows in each case :

- (i) 40 per cent in the internal assessment part of every subject separately of the examination, whether theory or practical (including project work, etc.), as a prerequisite to appear in the First, Second, Third, Fourth, Fifth and Sixth Semester examinations; and
- (ii) 50 per cent in the total of the internal assessment part and the University examination part of every subject separately of the examination, whether theory or practical (including project work, etc.), for passing the First, Second, Third, Fourth, Fifth and Sixth semester examinations; and

A student who does not obtain 40 per cent marks in the internal assessment part of every subject separately of the First, Second, Third, Fourth, Fifth and Sixth semester shall be required to again study the subject, submit assignments, appear in class test and present Seminar prescribed for that semester in the next academic session before being

allowed to appear in the University examination as approved by the Board of Studies subject to the restriction that a student must complete all course requirements and pass all prescribed examinations within a maximum period of five academic sessions from the original date of joining the course in order to be eligible for the award of the Degree.

- (iii) If a student gets re-appear in a paper/s then the students have to appear as a re-appear candidate along with the regular students. There shall be no special re-appear examination.

8. Grace Marks shall be given at the rate of one per cent of the aggregate marks of all subjects of the First, Second, Third, Fourth, Fifth and Sixth semester examinations, as the case may be. A candidate may avail of the grace marks either in the aggregate or in one or more papers as may be his/her advantage. Grace marks, shall, however, be given only for passing the examination or for earning a higher division and not for improving internal assessment or for passing the examination with distinction.

9. The student must complete all course requirements and pass all prescribed examinations in maximum five academic sessions from the date of joining the course in order to be eligible for award of the Degree. Subject to the above, a student may be allowed to re-appear in one or more subjects as specified below :

- (i) A candidate who, having obtained the pre-requisite marks in the internal assessment part of every subject of the First and Second semester examination under Regulation 7(i), appears in the First and Second semester examination but fails to pass the examination under Regulation 7(ii), may be allowed to study in the third semester of the Second Year of the course and to re-appear in all or some of the subjects of the First and Second semester examination along with the subjects of the Third and Fourth semester examination. The subjects in which the candidate shall be eligible to re-appear shall be only those in which he/she has obtained less than 50 per cent marks in the total of the Internal Assessment part and the University examination part (Internal assessment marks shall not be reassessed, but shall be carried over). If he/she still fails to clear the First and Second semester examination, the candidate shall not be allowed to study for the fifth semester of the Third Year of the course, and his result of the third and fourth semester examination shall be withheld, till all subjects prescribed for the First and Second semester examination have cleared by him/her.
- (ii) A candidate who having obtained the pre-requisite marks in the internal assessment part of every subject of the 3rd and 4th Semester of Second Year examination under Regulation 7(i)

appears in the 3rd and 4th semester of Second Year examination under Regulation 7(ii) may be allowed to study in the fifth semester of the Third Year of the course and to re-appear in all or some of the subjects of the third and fourth semester examination along with the subjects examination along with the subjects of the fifth and sixth semester examination. The subjects in which the candidate shall be eligible to re-appear shall be only those in which he/she has obtained less than 50 per cent marks in the total of the Internal Assessment part and the University examination part (Internal Assessment marks shall not be re-assessed, but shall be carried over.) If he/she still fails to clear the third and fourth semester examination, the result of the candidate of the fifth and sixth semester examination shall be withheld, till all subjects prescribed for the third and fourth semester examination have been cleared by him/her.

- (iii) A candidate who having obtained the pre-requisite marks in the internal assessment part of every subject of the Fifth and Sixth semester of Third Year examination under Regulation 7(i), appears in the fifth and sixth semester examination but fails to pass the examination under Regulation 7(ii), may be allowed in re-appear in all or some of the subjects of the fifth and sixth semester examination. The subjects in which the candidate shall be eligible to re-appear shall be only those in which he/she has obtained less than 50 per cent marks in the total of the Internal Assessment part and the University examination part (Internal Assessment marks shall not be re-assessed, but shall be carried over).

10. The Vice-Chancellor shall appoint the paper setters on the recommendation of the Board of Studies for the setting of question papers in the subjects of M.C.A.

11. Examiners for all subjects, whether external or internal, shall be appointed by the Vice-Chancellor on the recommendation of the Board of Studies. The evaluation of the project work shall be done by a committee of three internal examiners appointed by the vice-Chancellor.

12. The result of the examinations shall be prepared and declared by the Controller of Examinations.

13. Successful candidates shall be classified as under :

- (i) Those who obtain 75 per cent or more of the total aggregate marks of all the First and Second, Third and Fourth, Fifth and Sixth Semester examinations taken together : First division with Distinction, provided that the candidate had passed all the examinations/subjects in the first attempt.

- (ii) Those who obtain 60 per cent or more, but less than 75 per cent of the total aggregate marks of all the First and Second, Third and Fourth, Fifth and Sixth semester examinations taken together : First division.

- (iii) Those who obtain less than 60 per cent of the total aggregate marks of all the First and Second, Third and Fourth, Fifth and Sixth Semester examinations taken together : Second division.

2. Change in nomenclature of M.B.A. (Part-time) as M.B.A. (Executive) from the session 2002-2003 and given effect to in anticipation of the approval of various University bodies/Government of India/publication in the Govt. of India Gazette.

3. Addition of Regulation 26 for Bachelor of Commerce (General and Honours) examination at page 306 of U.P. Calendar, Volume II, 2000 (effective from the session 2002) in anticipation of the approval of various bodies of University/Govt. of India/publication in the Govt. of India Gazette.

26. A regular candidate of an affiliated College may offer a subject, including Honours, in which his College is not affiliated, by attending the prescribed courses of instructions in that subject in another College affiliated in it; the Principal of the later College shall certify that the student has completed the prescribed number of lectures, etc. The Principal of the College in which the student is enrolled shall report the student's name to the Controller of Examinations of the University for confirmation.

4. Addition to Regulation 2 concerning admission to M.Sc. (2 year Course) (Semester System) at Pages 127-128 of U.P. Calendar, Volume II, 2000 (effective from the session 2001-2002) in anticipation of the approval of various University bodies/Govt. of India/publication in the Government of India Gazette.

2. A person who has passed one of the following examinations shall be eligible to join M.Sc. (Semester System)

× × ×

Zoology

B.Sc. with Zoology having at least 50 per cent marks in the aggregate from Panjab University or from any other University recognized by the Syndicate as equivalent thereto.

5. Amendment of Regulation 3.1 for the Master of Arts examination at pages 78-80 of U.P. Calendar, Volume II, 2000 and given effect to in anticipation of the approval of the various University bodies/Government of India/publication in the Government of India Gazette.

- 3.1. A person who has passed one of the following examinations from this University at Lahore before 1948, or from any other University whose examination has been recognized as equivalent to the corresponding examination of this University shall be eligible to join the first year (Part I) class of the M.A. Course :

× × ×

For M.A. Part-I (French), a person who has passed:

- (i) B.A./B.Sc./B.Com/B.B.A./B.C.A. or Honours (under 10+2+3) system of education, and Advanced Diploma Course in French with at least 45% marks from the Panjab University or any other University.

OR

- (ii) B.A./B.Sc./B.Com./B.B.A./B.C.A. (under 10+2+3 system of education) with at least 45% in French elective or honours (under 10+2+3 system of Education) from the Panjab University or any other University.

OR

- (iii) B.A./B.Sc./C.Com./B.B.A./B.C.A. or Honours (under 10+2+3 system of education) and Diploma Approfondi de La Langue francaise (DALF Advanced French Language Diploma) issued by the French National Ministry of Education.

In addition, this be also noted under 2.1 :

Provided that :

a candidate shall apply for M.A. in French only if he has the knowledge of the language as clarified in 3.1(i).

6. Addition to Regulation 2(ii) and Regulations for One-Year Diploma in Advanced Scientific Computing (DASC) (effective from the session 2002-2003), in anticipation of the approval of various University bodies/Government of India/publication in the Government of India Gazette.

2. The minimum qualification for admission to the Diploma shall be :

- (i) Master's degree in science subjects of Panjab University,

OR

- (ii) B.E./B.Tech.

OR

- (iii) Any other examination recognized by Panjab University as equivalent to the above examination.

Regulations for the One-Year Diploma in Advanced Scientific Computation (DASC) Semester System w.e.f. admission of July, 2002

DURATION:

1. The duration of course leading to Diploma in Advanced Scientific Computation (DASC) shall be one year comprising two semesters. The examination of first semester will be held in the month of December and that of the second semester will held in April/May or on such other dates as may be fixed by the appropriate University authorities.

ADMISSION:

2. The minimum qualification for admission to the diploma shall be—

- (i) Masters degree in Science subjects of Panjab University

Or

- (ii) Any other examination recognized by Panjab University equivalent to the above examination.

3. The admission will be to the First semester of the DASC. The admission will be governed by the rules approved by the University authorities from time to time.

4. Every candidate admitted to DASC course shall pay admission fee and tuition fees and examination fee for each semester of an academic year to the University as prescribed by the University from time to time.

EXAMINATION AND ASSESSMENT

5. The Board of Control in Physics will recommend a committee for two year with its Convener as the coordinator of the Diploma course for approval by the Vice-Chancellor.

The Chairman of Department Physics, on the recommendation of the Coordinator of the course, shall forward to the Controller of Examinations a list of students who have satisfied the requirements of the rules and regulations and are qualified to appear in the examination.

The Board of Control in Physics from time to time will revise the Syllabi.

6. The first and second semester examination shall be open to a regular candidate who:—

- (i) Has been on the rolls of the department of Physics during first/second semester for the diploma course respectively preceding the examination.

- (ii) Has attended not less than 75 per cent lectures and practicals in each subject of the prescribed course for the first and second semester examination a deficiency of attendance may be condoned as per University rules.

7. A student must pass all prescribed examinations in maximum two academic sessions from the date of admission in the course in order to be eligible for award of Diploma subject to the above a student who scores less than 40 per cent marks in any subject to the above may be allowed to reappear in one or more subjects as specified.

8. (i) All the assessment will be wholly internal for all theory papers. For laboratory courses, it may be wholly internal or there may be an external examiner. The Board of Control in Physics on the recommendation of Coordinator of the Course will appoint the external examiner.

(ii) The Coordinator/teacher for the course/paper is responsible for maintaining the desired standard of the course/paper and for evaluating students performance.

(iii) In a theory course/paper, 25 per cent of the total marks will be for in semester assessment and 75 per cent for end semester examination.

(iv) In a theory course/paper the answer books of end-semester examination will be available to students for perusal according to the schedule which will be announced by the department/teacher.

(v) In laboratory course 50 per cent marks will be meant for semester assessment which will depend on the following :

(a) The performance of student in achieving the desired result in practical.

(b) Viva Voce on the experiment.

(c) Written report on the experiment.

9. The evaluation of the project work shall be done by a committee of at least two internal examiners appointed by the Board of Control on the recommendation of the Coordinator of the diploma course. The student may be asked to present his/her project work in seminar.

10. The result of the examinations shall be prepared and declared by the Controller of Examinations.

11. The students of the Diploma course will be at par with the whole time students of the University for Hostel Facilities as per the University rules.

12. Successful candidates shall be classified as under :—

(i) Those who obtain 75 per cent or more of total aggregate marks of all the semester examinations: First division with distinction provided that the candidate has passed all the examinations/subjects in first attempt.

(ii) Those who obtain 60 per cent or more but less than 75 per cent of total aggregate marks of all the semesters taken together : First division.

(iii) Those who obtain less than 60 per cent of total aggregate marks of all the first and second semester taken together: Second division.

Re-Examination :

13. All the reappear examinations will be held along with the regular examinations in December/April or any other dates approved by the Board of Control as per the University rules.

7. Regulations for Post-graduate Diploma in Health, Family Welfare and Population Education for the Department of Correspondence Studies/affiliated Colleges (effective from the session 2002-2003) in anticipation of the approval of various University Bodies/Government of India/publication in the Government of India Gazette.

1. The duration of the course of instruction for the Postgraduate Diploma in Health, Family Welfare and Population Education shall be one academic year.

2. The examination shall ordinarily be held in the month of April/May on such dates as may be fixed by the Syndicate.

3. The date for the commencement of the examination and the last date of receipt of admission form and fee :—

(a) Without late fee and,

(b) With late fee to be fixed by the Syndicate from time to time shall be notified by the Controller of Examinations to the Chairman, Department of Correspondence Studies, Panjab University, Chandigarh/Principal of the affiliated Colleges.

4. The examination fee to be paid by the candidate shall be prescribed by the Syndicate from time to time.

5. The admission to the course shall be open to any person who has obtained the —

(i) Bachelor's degree of the Panjab University or any other qualification recognized as equivalent by the Syndicate, or

(ii) Para medical staff with five years, work experience.

6. Every student admitted to the Diploma course shall be on the rolls of the Department of Correspondence Studies/affiliated Colleges and shall pay admission fee and other charges to the University/College as the Syndicate may prescribe from time to time.

7. There shall be a Board of Studies for the course. The Chairman of the Department of Correspondence Studies will be the convener and the Vice-Chancellor will nominate 4-5 persons to the Board.

8. Every candidate shall be examined in the subject as laid down in the syllabus, prescribed from time to time by the Board.

9. The medium of examination shall be English or Punjabi or Hindi.

10. The examination shall be open to the student whose name has been sent by the Chairman of the Department of Correspondence Studies/Principal of affiliated colleges who :—

- (i) has been on the rolls of the Department of Correspondence Studies/affiliated colleges, during the academic year preceding the examination, and
- (ii) has attended prescribed class room lectures in affiliated colleges.
- (iii) Has sent at least 50 per cent of the response sheets to the Department of Correspondence Studies, (for Correspondence students only).
- (iv) A deficiency in the required number of the response sheets or lectures may be condoned by the Chairman, Department of Correspondence Studies/Principal of affiliated colleges as per rules framed by the Syndicate from time to time.

11. A candidate who has been on the rolls of the Department of Correspondence Studies/affiliated colleges and fails to appear or having appeared but fails in the examination, may be allowed to appear in the examination as an ex-student of the Department of Correspondence Studies/affiliated college after paying the prescribed fee to the University.

12. The minimum number of marks required to pass the examination shall be :—

- (i) 35 per cent in each paper,
- (ii) 40 per cent in the aggregate.

Successful candidate will be classified into three divisions as under:—

- (a) Those who obtain 60 per cent or more of the aggregate marks. : First Division
- (b) Those who obtain less than 60 per cent but not less than 50 per cent of the aggregate marks. : Second Division
- (c) Those who obtain less than 50 per cent of the aggregate marks. : Third Division

13. Grace marks shall be given by the University as per rules prescribed by the Syndicate/Senate from time to time.

14. (i) A candidate who obtains 40 per cent of the aggregate number of marks in all the papers but fails in one paper only, obtaining not less than 25 per cent of the marks in that paper, may be admitted to the

supplementary examination in that paper to be held in the month of September of the same year, or the date fixed by the Controller of Examinations. If he/she fails to pass the examination or absent from the examination then he/she can appear at the next examination. If he/she obtains 35 per cent marks in that paper in the University examination, he/she shall be declared to have passed the examination.

- (ii) Such a candidate shall be required to pay examination fee as prescribe by the Syndicate from time to time and shall not be eligible for a prize or a medal.

15. A candidate who fails to pass or to appear in the two chances allowed, shall be declared to have failed in the whole examination and must appear in all the papers if he/she desired to take examination again.

16. A candidate who fails to qualify this examination in three consecutive chances shall not be allowed to continue his/her studies in the course.

17. The Controller of Examinations shall publish a list of candidates who have passed the examination, showing the division four weeks after the termination of Examination or as soon as possible.

18. Each successful candidate shall be awarded a Post-Graduate Diploma in Health, Family Welfare and Population Education showing the division in which he has passed along with the marks obtained by him/her and the aggregate marks.

8. Change of nomenclature of Bachelor of Engineering (Agro Processing) to Bachelor of Engineering (Food Technology) (effective from the session 2002-2003) in anticipation of the approval of various University bodies/Government of India/Publication in the Government of India Gazette.

9. Amendment of Regulation 2.1 (a) and 5.1 for Bachelor of Education examination at pages 264-268 of P.U. Calendar, Volume II, 2000 (effective from the session 2002-2003) in anticipation of the approval of various University bodies/Government of India/Publication in the Government of India Gazette:

2.1 A person who possesses one of the following qualifications shall be eligible to join the course:—

- (a) B.A./B.Com./B.B.A./B.C.A./B.Sc./B.Sc. (Honours School) degree of the Panjab University of any other University recognized as equivalent thereto with not less than 45% marks in the aggregate provided the candidate has offered at least two school subjects at the first degree level.

5.1 B.Com./B.B.A./M.Com. students may opt two teaching subjects. One is teaching of Commerce and the other shall be out of the following:

Teaching of Economics or any of the languages i.e. English, Hindi, Punjabi and Sanskrit.

B.C.A. students may opt for teaching of Computer Science and Applications as one subject. The other subject shall be teaching of Mathematics or any of the languages i.e. English, Hindi, Punjabi and Sanskrit.

B.Sc. (Home Science) students may opt two teaching subjects. One is teaching of Home Science and the other shall be out of the following:

Teaching of Science or any one of the Languages i.e. English, Hindi, Punjabi and Sanskrit.

B.Sc. (Honours School)/B.Sc. (Medical) Graduates shall opt two teaching subjects out of the following:

1. Teaching of Science/Teaching of Physical Science.
2. Teaching of Life Sciences.
3. Teaching of any of the Languages i.e. English, Hindi, Punjabi and Sanskrit.

B.Sc. (Honours School)/B.Sc. (Non-Medical) Graduates shall opt two teaching subjects out of the following:

1. Teaching of Science/Teaching of Physical Science.
2. Teaching of Mathematics/Teaching of Computer Science.
3. Teaching of any of the Languages i.e. English, Hindi, Punjabi and Sanskrit.

Arts graduates may opt any one teaching subject out of the following:

Teaching of Social Studies.

Teaching of History, Teaching of Geography.

Teaching of Economics.

And/or teaching of any one of the languages i.e. English, Hindi, Punjabi, and Sanskrit, provided. The candidate has studied the subject at the graduation level.

× × ×

10. Amendment of Regulation 8 of Chapter II(A) (vi) at page 44 'Academic Council' and Regulation 2 of Chapter V (A) 'University Teacher' at page 111 of P.U. Calendar, Volume I, 2000 and given effect to in anticipation of the approval of various University bodies/Government of India/publication in the Government of India Gazette:

8. The functions of the Academic Council shall be—

- (a) to deal with University teaching and to make proposals for fresh development.
- (b) to recommend to Syndicate the creation of new or additional teaching post in the University and to advise upon all proposals for the abolition of such posts.

Deleted

× × ×

Amendment of Regulation 2 of the P.U. Calendar, Volume II, 2000.

2. The Senate shall have the power to determine from time, after considering the recommendations of the Board of Finance/Syndicate, the Departments of Study for which Professorships, Readerships and Lectureships shall be instituted.

11. Change of nomenclature of Faculty of Engineering & Technology to Faculty of Engineering & Technology and Architecture & Planning and given effect to in anticipation of the approval of various University bodies/Government of India/publication in the Government of India Gazette:

12. Amendment of Regulation 4.1 at pages 45-46 of the P.U. Calendar, Volume II, 2000.

4.1 A person who has passed one of the following examinations with pass in English as one of the subjects shall be eligible to join the First Year class of B.A. or B.Sc. (General and Honours) degree course in a College affiliated to this University, however, a person who has not qualified English as one of the subjects at the +2 examination, shall be eligible to join B.A./B.Sc. 1st Year class provisionally subject to his/her qualifying the deficient subject of English from the parent Board/Body/Council/University in two consecutive chances subsequent to his admission, failing which his/her admission to B.A./B.Sc., 1st year class and the result for the examination shall automatically stand cancelled.

× × ×

13. Amendment of Regulation 25 Chapter II(A)(i) 'The Senate' appearing at page 33 of the Panjab University Calendar, Volume I, 2000.

25. A regulation shall take effect from the date of its publication in the Gazette unless any other date is named therein as the date on which it is to come in force.

If no objection to the proposed regulations/amendments/additions/deletions is received from the Government of India within three months from the date of despatch from the office of the University in case of academic matters, it would be presumed that Government has no objection to the proposed regulations/amendments/additions/deletions and the same would be deemed as applicable from the date of approval by the Senate.

14. Amendment/addition in Regulation 8(h) of Chapter 2(A) (iv) 'Academic Council' appearing at pages 44-45 of the Panjab University Calendar, Volume I, 2000 relating to functions of the Academic Council effect from the Academic Session 2004-05 in anticipation of the approval of various University bodies/Government of India/publication in the Government of India Gazette:

8(h). To manage the University Library, subject to general and financial control of the Syndicate and, for this purpose, to-

- (i) appoint a Committee to **advise on policy matters concerning the Library under the general control of the academic Council. The Library Committee shall consist of the following :**

(1) to (5) *** *** ***

(6) A faculty member of the Department of Library & Information Science (of the rank of Reader and above).

- (ii) *** *** ***

15. Amendment of regulation 17 XVIII (c)(v) of Chapter 2(B) 'Election of Ordinary Fellows' appearing at pages 67-68 of the Panjab University Calendar, Volume I, 2000 and given effect to in anticipation of the approval of various University bodies/Government of India/publication in the Government of India Gazette :

No Ballot Paper shall be issued to a voter who is not present at the polling booth within the time fixed for polling and does not produce any of the following documents before the Presiding Officer at the time of polling for identification :

- (i) Own recent identity card with photograph of the voter, from the employer of a recognized institution i.e. Government, Semi-Government institution, statutory bodies, Autonomous bodies, Corporations, Boards.
- (ii) General Election identity card.
- (iii) A valid Driving Licence, with photograph.
- (iv) A valid passport.
- (v) (a) Certificate with photograph duly attested by 1st Class Magistrate/Subordinate Judge/Principal of College affiliated to Panjab University.
- (b) Permanent Account Number (PAN) issued by the Income-Tax Department.
- (c) Any original document, with holder's photograph, issued by the Panjab University establishing the identity of voter.
- (vi) Bank/Post Office recent passbook with photograph.
- (vii) Student identity card issued by recognized educational institution with photograph.
- (viii) Recent Ration Card with photograph.
- (ix) Pension documents of ex-servicemen's pension book/pension payment order, ex-servicemen's widows/dependent certificate, old age pension order, widow pension order with photograph.
- (x) Senior citizen card with photograph.
- (xi) Freedom fighter identity card with photograph.
- (xii) Recent Arms licence with photograph.
- (xiii) Recent certificate of physical handicap issued by competent authority with photograph.

- (xiv) Recent certificate issued by the Bar Council/Bar Association with Photograph.

16. Addition to Regulation 2 of Chapter IV (A)(ii), Dean of Student Welfare (Men)/Dean of Student Welfare (Women) appearing at page 107 of the Panjab University Calendar, Volume I, 2000 in anticipation of the approval of various University bodies/Government of India/publication in the Government of India Gazette:

- 2.1. The duties and functions of the Dean of Student Welfare shall be-

- (i) to make arrangement for the residence and to supervise discipline of students studying in the University classes at Chandigarh, and also to supervise and approve the lodging arrangements of the students living outside the campus;
- (ii) to supervise co-curricular and cultural activities of the students in the University campus;
- (iii) to look after the Physical Welfare and N.C.C. activities of the students in the University campus;
- (iv) to operate the accounts of the amalgamated Fund allocated to the students' welfare Department for co-curricular activities;
- (v) to deal with all matters pertaining to discipline among the University students on the campus and outside (excepting those relating to their academic work which will be dealt with by the Heads of the Departments and/or the D.U.I.) and to impose such penalties as may be deemed necessary, after due enquiry;
- (vi) to devise ways and means for promoting the well being of the University students, social, moral and emotional, and inculcating among them regard for great ideals like loyalty to the country, devotion to duty and pursuit of truth.

- 2.2 The Senate may also, on the recommendation of the Vice-Chancellor and the Syndicate, appoint a Dean of Student Welfare (Women) for such period and on such implementation and conditions as for the Dean of Student Welfare out of the Amalgamated Fund Account. The Dean of Student Welfare (Women) would also be the Chairperson of Grievance Committee for the code of conduct and discipline for avoidance of sexual harassment.

17. Regulation 7 for B.A./B.Sc. (General and Honours) examination appearing at page 48 of the Panjab University Calendar, Volume II, 2000 given effect to from the admissions of 2003-2004, in anticipation of the approval

of University bodies/Government of India/Publication in the Government of India Gazette:

7 The examination in First/Second/Third year shall be open to a student who-

- (a) has passed not less than one academic year previously the qualifying examination laid down in Regulation 4.1.

In the case of a compartment candidate who is eligible to join B.A./B.Sc. course, the period of one academic year shall be counted from the examination in which the candidate is placed under compartment. a candidate who is placed in compartment/fail in the subject in +2 examination may be allowed to join B.A./B.Sc. 1st Year class subject to the following conditions:

The admission of a candidate under Regulation 4.2 shall be provisional and shall be confirmed only after he has cleared the subject of compartment from the parent Board/Body/Council/University in the two consecutive chances subsequent to his admission. In case he does not clear the compartment in two consecutive chances afforded to him, his provisional admission to the 1st year B.A./B.Sc. shall stand cancelled.

If the candidates placed under compartment in +2 cleared their compartment examination by appearing in the Supplementary Examination of the Board before the last date of admission, they shall be considered for admission to the next higher class provided they were eligible and subject to availability of seats.

(b) *** **

18. Addition of clause (vi) to Regulation 12.2 for B.Sc. (Honours School) (Annual System) in regard to functions of the Undergraduate Academic Programme Monitoring and Executive Committee (UGAPMEC) (effective from the admissions of 2002-2003) in anticipation of the approval of University bodies/Government of India/publication in the Government of India Gazette :

12.2 The Board of Control would appoint Undergraduate Academic Programme Monitoring and Execution Committee (UGAPMEC) for monitoring an execution of the academic programmes in all the three years. The composition and functions of the UGAPMEC would be as under:

- (i) to (v) *** **
- (vi) UGAPMEC shall made recommendations regarding complaints and settle disputes, if any, against paper-setting and evaluation.

19. Addition to the Regulation for B.Sc. (Honours School) (Annual System) examination at page 69 of P.U. Calendar, Volume II, 2000 (effective from the examination of April, 2003) given effect to in anticipation of the approval of the Senate/Government of India/publication in the Government of India Gazette :

“A candidate who had passed B.Sc. (Honours School) examination from the Panjab University may reappear as a private candidate in a subject(s) in theory papers, in which he/she appeared earlier, with a view to improving his/her previous performance. He/She may reappear in the First, Second and Third Year examinations or any of the examinations simultaneously or separately.

For the purpose, a candidate be given two chances within a period of three years from the year of passing B.Sc. (Honours School) examination; He/she will appear in the Annual/Semester examination along with regular students.

The students for B.Sc. (Honours School) improvement examination will be examined only under the current syllabus as per the existing University rules.

No improvement shall be allowed in the internal assessment component.

EXPLANATORY NOTE:

Improvement of performance by a candidate shall not affect the inter-se merit position determined on the basis of original examination.”

20. Addition to Regulation 14 for B.Sc. (Honours School) (Annual System) examination regarding issue of certificate in respect of the Subsidiary subjects of, Vocational Biotechnology/Vocational Computer Science and Applications given effect to in anticipation of the approval of University bodies/Government of India/publication in the Government of India Gazette :

14. The students passing B.Sc. (Honours School) examination during 1999—2003 having studied Vocational Biotechnology/Vocational Computer Science and Applications as Subsidiary Subject for all the three years of the course will be given separate certificate under the seal/signature of the Controller of Examinations, indicating the marks obtained in the Subsidiary Subject in the B.Sc. (Honours School) Third Year.

21. Addition to Regulation 13 for M.Sc. (Honours School) Semester of P.U. Calendar, Volume II, 2000 w.e.f. April 2003 examinations given effect to in anticipation of the approval of the Senate/Government of India/publication in the Government of India Gazette :

"A candidate who had passed M.Sc. (Honours School) (Semester System) examination from the Panjab University under the semester system may reappear as a private candidate in a course/s, he/she wishes to, with a view to improving his/her performance. For this purpose, he/she may be given two chances within a period of 5 years from the date of his/her passing the degree course. The candidate in the first instance shall be required to intimate all the courses in which he/she would like to improve his/her performance. He/she will then appear in the respective course/s at the main semester examination, i.e. for the course(s) offered for First and Third semester in the November/December and for the Second and Fourth semesters in April/May examination. If he/she does not improve his performance in any course/s, he shall be eligible to do so the following year in the semester examination concerned which would be treated as a second chance. The candidate shall be charged fee as prescribed by the Syndicate from time to time for each course subject to the maximum admission fee prescribed for the semester concerned.

EXPLANATORY NOTE:

Improvement of performance by a candidate shall not affect the *inter-se* merit position determined on the basis of original examination."

22. Addition to Regulation 9.1 relating to M.A. Part I (Sociology) (Annual System) examination through Correspondence appearing at 85 of P.U. Calendar, Volume II, 2000 (effective from the examinations of 2002) given effect to in anticipation of the approval of the Government of India/publication the Government of India Gazette :

- (i) A candidate shall be deemed to have passed Paper II if he/she secures 33% marks in theory separately or jointly with research assignment;
- (ii) In case of PRE, a candidate can appear in Supplementary examinations in theory paper only and the internal assessment marks in such case would be carried forward from the previous main examinations. It will also be applicable to absent/failed candidates in this paper;
- (iii) No extra chance is given to the candidates to submit the assignments. These students who fail to submit assignments by due date be awarded zero marks in the internal assessments;
- (iv) In case of re-evaluation, it should be done only in the theory paper and not the assignments nor internal assessment. The original score of the

internal assessment in this paper obtained by a candidate will remain till he/she gets the chance to clear this paper by Supplementary Examination of Re-evaluation in theory part of it.

.....

23. Addition of clause (vii) to Regulation 10.2 for M.Sc. (Honours School) (Annual System) of P.U. Calendar, Volume II, 2000 in regard to the functions of Postgraduate Academic Programme Monitoring and Executive Committee (PGAPMEC) (effective from the admissions of 2002-2003) given effect to in anticipation of the approval of University bodies/Government of India/publication in the Government of India Gazette :

10.2. The Board of Control would appoint Postgraduate Academic Programme Monitoring and Execution Committee (PGAPMEC) for monitoring an execution of the academic programmes in all the three years. The composition and functions of the PGAPMEC would be as under :

(i) to (vi) *** *** ***

(vii) PGAPMEC shall makes recommendations regarding complaints and settle disputes, if any, against paper-setting and evaluation.

.....

24. Region 3.4 3.5, 4.2, 11.1 and 13.1 relating to Degree of Doctor of Philosophy in the Faculties of Arts, Languages, Education, Science and Design & Fine arts at Pages 175-183 of Punjab University calendar, Volume II, 2000 and be made applicable to the candidates enrolled after the date of the Senate decision dated 14-12-2003, in anticipation of the approval of Government of India/publication in the Government of India Gazette :

The students enrolled for Ph.D before the decision of the Senate dated 14-12-2003 will be governed by the old Regulations.

3.4. Within one years of the date of enrolment, the candidate shall apply through the Chairman/ Head of the University Department Concerned/ Principal, Home Science College for registration. Extension up to six months may be granted by the Dean of University Instruction on the recommendation of the Chairman/Head of the University Department concerned/Principal, Home Science College. The Application for registration shall contain—

- (a) tentative title of thesis or board area of work; and
- (b) a tentative design of research project (synopsis).

If a candidate fails to submit the registration form, including tentative title of the thesis and synopsis, within the prescribed period of one and a half years, the Chairperson/Head of the Department/Principal of Home Science College, may give specific reasons for consideration of the Joint Research Board which may grant six months' second extension beyond one and a half year (normal period of one year plus six months' extension) in the submission of registration form, tentative title of the thesis and synopsis, on payment of fee prescribed by the Syndicate/Senate from time to time.

3.5 (a) A candidate would be required to submit the registration form, tentative title of the thesis and synopsis to the Chairperson of the Department concerned, who, in turn, would forward the same to the University Office within a week of its receipt.

(b) In case a candidate does not submit the registration form, tentative title of the thesis and synopsis to the Chairperson of the Department within a period of two years, his/her enrolment be treated as cancelled automatically. No separate intimation would be sent to the candidate.

4.2 While forwarding the application, Head of the Department/Principal, Home Science College shall also recommend a suitable supervisor to guide the applicant in his research work. He may, if he considers necessary, recommend joint supervisors.

4.3 Joint supervisors may be appointed, on the request of the candidate and the Supervisor, from the Teaching Departments and Postgraduate Regional Centres of the Universities recognized by the U.G.C. and also from the national/autonomous institutions, national/autonomous organizations and national/autonomous laboratories to be certified by the Chairperson of the concerned Department, provided they fulfill the following conditions:

(a) hold the degree of Ph.D with published research work, such as books, articles or research papers in referred research journals; and

(b) evidence of having been engaged in research after Ph.D.

No fee shall be charged from the concerned institutions, etc. for the above purpose.

11.1 Every candidate shall report in writing, at the end of every six months, to the Supervisor the work done by him during the six months. The supervisor will take such action on his report as

he considers suitable depending on the nature of the report and other circumstances of the case. The progress report from the date enrolment, duly signed by at least one of the Supervisors(s)/proposed Supervisor(s)/Joint Supervisor(s), as the case may be, shall be submitted by the candidate to the Chairperson of the Department concerned and the same shall be placed before the Academic Committee of the Department. A copy of the proceedings of the Academic Council be sent to the University Office for record. The Chairperson of the Department shall ensure that the progress reports, the matter be placed before the Academic Council for consideration and recommendation to the Joint Research Board for cancellation of enrolment and registration of the candidate.

13.1 A candidate who is unable to complete research work and thesis within the time allowed by these Regulations may apply through his Supervisor and Head of the Department concerned for grant of extension.

Extension may be granted by the Joint Research Board up to a maximum of two years, i.e. every candidate must submit his thesis on the expiry of a total period of five years from the date of enrolment of application.

Provided that—

(i) extension shall not be granted for more than a year at a time ;

(ii) every application for grant of extension shall be accompanied by a fee prescribed by the Syndicate/Senate from time to time.

If the thesis is received after the prescribed period of five years, the delay may be condoned by the authorities named below;

(i) Up to 3 months— Dean of University Instruction.

(ii) Up to one year— Joint Research Board.

(iii) Beyond one year up to three years — Vice-Chancellor on the recommendation of the Joint Research Board, under special and exceptional circumstances to be recorded.

A fee of Rs. 2000 per year or an amount to be decided by the Syndicate/Senate from time to time, shall be charged for condonation of delay in the submission of Ph. D. thesis after expiry of the period of five years from the date of enrolment.

Provided that the maximum time limit for submission of Ph. D. thesis would be eight years from the date of enrolment, i.e. normal period : three years, extension period: three years, after which

enrolment and registration of the candidate shall be treated as cancelled automatically.

25. Regulations 3.1 and 3.3 of Diploma in Translation (English to Hindi/Punjabi) in the affiliated Colleges at page 233 of the Panjab University Calendar, Volume II, 2000 (effective from the session 2003-2004) given effect to in anticipation of the approval of University bodies/Government of India/Publication in the Government of India Gazette):

3.1. A person who possesses the qualification laid down in Regulation 2, and produces the following certificates signed by the Head of the Panjab University Hindi/Panjab Department as the case may be or by the Principal of a College affiliated to the Panjab University, shall be eligible to appear in the examination ;

- (a) of good character ;
- (b) of having been on the rolls of the Department/College concerned during the academic year preceding the examination; and
- (c) of having attended not less than 66 per cent of the lectures in each paper delivered to class;

3.3. A student who having completed the prescribed course, does not appear in the examinations, or having appeared has failed, may be permitted, on the recommendation of the Head of the Department/Principal of the College, as the case may be, to appear in the examination as private candidate, within a period of three years of completing the course concerned.

26. Addition to Regulation 4.1 (a) for B. Com. (General and Honours) examination at page 302 of the Panjab University Calendar, Volume II, 2000 (effective from the admissions of 2003-2004) given effect to in anticipation of the approval of University bodies/Government of India/Publication in the Government of India Gazette :

4.1. The examination in First/Second/Third year shall be open to a student who—

- (a) has passed not less than one academic year previously the qualifying examination laid down in Regulation 3.

If the candidates placed under compartment in +2 cleared their compartment examination by appearing in the Supplementary Examination of the Board before the last date of admission, they shall be considered for admission to the next class provided they were eligible and subject to availability of seats.

27. Addition of Regulation regarding improvement of performance in the regulations for LL.M. examination appearing at pages 360-364 of the Panjab University Calendar, Volume II, 2000 in anticipation of the approval of University bodies/Government of India/Publication in the Government of India Gazette :

“LL.M. students who got/get less than 55% marks in the aggregate shall be given chance for improvement from the date of passing the LL.M. degree examination.”

- Note:**
- 1. Improvement in performance by a candidate shall not affect the *interse* merit position determined on the basis of original examination.
 - 2. Those who have passed LL.M. would be allowed improvement chance within two years from the date this change comes into force.

28. Regulation 3 for Bachelor of Engineering examination at the University Institute of Engineering and Technology (effective from the admissions of 2003) given effect to in anticipation of the approval of Senate/Government of India/Publication in the Government of India Gazette :

3. The admission to the first semester course in any branch will be through an Entrance Test. It will be open to a candidate who has passed 10+2 examination of the Central Board of Secondary Education, New Delhi or its equivalent with Physics and Mathematics as compulsory subjects along with one of the following subjects:

- 1. Chemistry
- 2. Biotechnology
- 3. Computer Science
- 4. Biology

29. Regulation 3 at page 377 of the Panjab University Calendar, Volume II, 2000 for Bachelor of Engineering examination (effective from the admissions of 2003) given effect to in anticipation of the approval of Senate/Government of India/Publication in the Government of India Gazette :

3. The admission to the first semester course in any branch will be through an Entrance Test. It will be open to a candidate who has passed 10+2 examination of the Central Board of Secondary Education, New Delhi or its equivalent with Physics and Mathematics as compulsory subjects along with one of the following subjects:

- 1. Chemistry
- 2. Biotechnology
- 3. Computer Science
- 4. Biology

30. Regulations for M.Tech. (Energy Engineering & Management) effective from the admissions of 2002-2003 in anticipation of the approval of various University bodies/Government of India/Publication in Government of India Gazette :

1.1 The duration of course of the degree of M.Tech. (Energy Engineering & Management) for regular candidate shall be four year (2 years). The maximum period in which such a candidate must qualify for the degree shall be four academic years, failing which he shall not be allowed to continue his/her studies for the course.

2.1 A person holding the following qualifications shall be eligible for admission to M.Tech. (Energy Engineering & Management).

B.E. B.Tech. or equivalent degree in Chemical, Mechanical, Civil Production Engineering, Electrical Engineering, Agricultural Engineering, M.Sc. Physics, M.Sc. Energy, M.Sc. Chemistry with 55 per cent marks in aggregate.

2.2 Admission will be made as per procedure prescribed by the Syndicate from time to time.

2.3 A candidate who has passed A & B Sections of the Indian Institutions of Engineers (Calcutta) (AMIE) or Indian Institute of Chemical Engineers (Calcutta) (I.I.Ch.E) with at least 55 per cent marks may be admitted to M.Tech. (Energy Engineering & Management) course provided that he has passed the Entrance Test.

3.1 The examination for the degree of M.Tech. (Energy Engineering & Management) shall be held in December/January and May/June on dates fixed by the Syndicate.

3.2 The last date for receipt of examination admission forms and examination fees without and with late fee shall be fixed by the Syndicate.

3.3 The dates fixed by the Syndicate in accordance with Regulation 3.1 shall be notified by the Controller of Examination.

3.4 A student who has remained on the rolls of the University Department in M.Tech (Energy Technology) Semester concerned and produced following certificate signed by the Director Energy Research Centre shall be eligible to appear in the examination in that semester:

- (i) of good moral character;
- (ii) of having attended for each subject, not less than 75% of the lectures and 75% of the total sessional work, in tutorials design, laboratory work and seminars and of having acquitted himself creditably in all the exercises or periodicals examination conducted by the University Department from time to time.

4. A deficiency in the required number of lectures and practical may be condoned up to 10 per cent by the Director Energy Research Centre.

5. The amount of admission fee to be paid by the

candidates shall be prescribed by the Syndicate from time to time.

6.1 Every candidate shall be required to offer for examination:

(a) 10 theory papers out of the list approved by the Faculty of Engineering and Technology from time to time-selection be made on the advice of Director Energy Research Centre provided that no candidate shall be allowed to qualify in more than five papers at the end of the first semester of the first year of the course and not more the ten papers (including the papers passed in the first semester) at the end of the first year of the course.

(b) A thesis of which four neatly typed or printed copies properly bound shall be submitted to the University.

6.2 The medium of Instruction and examination shall be English.

7.1 The candidate shall prepare his/her thesis under the supervision of the teacher concerned in the University/ Department/Collaborating Institutions and a joint Supervisor from any other Institution, Industry/ Corporation/other Organization Engaged in the area of Energy. If, however, the Director Energy Research Centre is satisfied that facilities for preparing the thesis exist elsewhere, he may allow that candidate to prepare his/her thesis there and his period shall be counted towards the requirement for M.Tech. (Energy Technology) but the candidate shall spend for completing his thesis, a minimum period of four weeks under the direct supervision of his teacher or the Director Energy Research Centre.

7.2 The thesis shall present an orderly and critical exposition of the existing knowledge of the subject, shall embody result of the original investigations and shall demonstrate the capacity of the candidate to do independent research work while writing the thesis, the candidate shall lay out clearly the work done by him independently and the source from which he has obtained other information contained in the thesis.

7.3 The thesis shall be submitted by the candidate at the end of the third semester of the course provided that he has appeared in all the theory papers of 1st and 2nd semester examination. The result of the thesis shall be declared after the candidate passes in all the 10 theory papers. In case the candidate's thesis is rejected or he/she is unable to complete the thesis in the third semester he/she will be allowed two more years at the maximum for submission of thesis of its revision.

Provided further that the extension beyond the above limit but exceeding two years may be allowed by the Vice-Chancellor on the recommendation of the Director Energy Research Centre as the case may be.

7.4 There shall be viva voce test on the subject matter of the thesis. The examiners may, if they consider it

necessary also require the candidate to undergo a written and of a practical test.

8.1 The minimum number of marks required to pass the examination shall be :—

- (a) 40 per cent in each theory paper;
- (b) 50 per cent in the sessional part of each paper;

8.2 Subject to Regulation 8.1 a candidate who has failed in any paper/s may be allowed to reappear in any subsequent examination to pass the examination in that paper on the payment of requisite admission fee per paper in each semester examination subject to a maximum of amount prescribed by the Syndicate for the examination concerned and admission fee charged for other semester examination if any, in which he/she was appearing, provided that such a candidate shall not be placed in the category of pass with distinction.

9. Successful candidates shall be classified as under:

- (a) Those who obtain 75 per cent or more of the aggregate marks of all the theory papers and in the sessional at least fifty per cent marks in each theory papers and also if the thesis has been adjudged to merit distinction, provided that the candidate concerned has cleared the examination in each paper at the first attempt (i.e. first time when a candidate actually takes the University examination in the concerned paper).

: Pass with Distinction

- (c) Those who pass all the theory paper and the sessional but are not entitled to be classified as having been placed in Pass with distinction.

: First Division

10. Four weeks after the termination of each semester examination or as soon as possible, the Controller of Examinations shall publish the result. Every successful candidate shall receive a certificate of having passed that semester of the examination shall be awarded the degree in accordance with Regulation.

11. A person who has passed in all the theory papers but has not completed the thesis he/she shall be granted Post Graduate in Energy Technology.

31. Regulation 3.1 for Bachelor of Pharmacy examination (effective from the admissions of 2003) in anticipation of the approval of Senate/Government of India/ Publication in the Government of India Gazette :

3.1 The admission to the first semester course will be through an Entrance Test. It will be open to a candidate who has passed 10+2 examination with Physics and Chemistry as compulsory subjects along with one of the following subjects :

- 1. Mathematics
- 2. Biotechnology
- 3. Computer Science
- 4. Biology.

32. Regulation 2 for Bachelor of Architecture examination (effective from the admissions of 2003) in anticipation of the approval of Senate/Government of India/ Publication in the Government of India Gazette :

2. The admission to the first semester course will be through an Entrance Test. It will be open to a candidate who has passed 10+2 examination with Physics and Mathematics as compulsory subjects along with one of the following subjects :

- 1. Chemistry
- 2. Engineering Drawing
- 3. Computer Science
- 4. Biology.

33. Regulations for (i) Post-graduate Diploma in Marketing Management; (ii) Post-graduate Diploma in Personnel Management & Labour Welfare; (iii) Post-graduate Diploma in International Trade, (effective from the admissions of 2002-2003) in anticipation of the approval of various Bodies/Government of India/ Publication in the Government of India Gazette :

- (i) Post-graduate Diploma in Marketing Management
- (ii) Post-graduate Diploma in Personnel Management & Labour Welfare
- (iii) Postgraduate Diploma in International Trade.

1. The duration of the course leading to the Postgraduate Diplomas shall be one year. The examination shall be divided into two semesters. The examination for first semester and second semester shall ordinarily be held in the months of December and April/May respectively, or such dates as may be fixed by the Syndicate.

2. The Chairman of the concerned Department/the Principal of the College shall forward to the Controller of Examination, at least five weeks before the commencement of the examination for each semester, a list of the students along with their admission forms and fees who have satisfied the requirements of regulations and are qualified to appear in the examination.

3. The minimum qualification for admission to First Semester of the course shall be—

- (a) (i) A Bachelor's/Post-graduate degree in any discipline of the University or a degree of any other University which has been recognized by the Syndicate as equivalent thereto with not less than 45% marks in the aggregate :

Provided that in case of candidates having Bachelor's degree of the University through Modern Indian Languages [Hindi/Urdu/Punjabi (Gurmukhi Script) and/or in a

Classical Language Sanskrit/Persian/ Arabic] or a degree of any other University obtained in the same manner, recognized by the Syndicate, 45% marks in the aggregate shall be calculated by taking into account full percentage of marks in the all the papers in language excluding the additional optional paper, English and the elective subject taken together.

OR

(ii) A pass in the final examination conducted by the (a) Institute of Chartered Accountants of India or Institute of Chartered Accountants of England and Wales, or (b) Institute of Cost and Works Accountants of India or Institute of Cost & Management Accountants incorporated by Royal Charter, London, or (c) Institute of Company Secretaries of India.

OR

(iii) AMIE examination with at least 50% marks.

4. Every candidate shall be examined in the subjects as laid down in the syllabus prescribed from time to time.

30% marks in each paper excluding seminar, project and viva-voce shall be assigned for internal assessment.

Seminar, Projects and Workshop will be assessed on 100% basis. Viva-voce shall be conducted jointly by the internal and external examiners.

The Chairman of the concerned Department/the Principal of the College shall forward these marks on the basis of periodical tests, written assignments, case discussion, Syndicate sessions, field trips etc., to the Controller of Examinations, at least one week before the commencement of the examination.

5. The first semester examination shall be open to a regular student who :—

- (i) has been on the rolls of the Department/ the College during one semester preceding the first semester examination; and
- (ii) has attended not less than 75% of the lectures, seminars, case discussions, Syndicate session, field trips, project work, etc., for each paper.

6. The second semester examination shall be open to a regular student who :—

- (a) has been on the rolls of the Department/ the College during one semester preceding the second semester examination;
- (b) has attended not less than 75% of lectures, seminars, case discussions,

Syndicate session, field trips, project work, etc., for each paper.

(c) has passed the first semester examination or is covered under 'Reappear' Regulation—.

7. The minimum number of marks to pass the examination in each semester shall be—

- (i) 35% in each paper in the University examination, separately as well as jointly with internal assessment;
- (ii) 35% in seminar, project and viva-voce;
- (iii) 45% in the aggregate of each semester.

8. Grace marks shall be given @ one per cent of the aggregate marks of the University examination for each semester. A candidate may avail of the grace marks either in the aggregate or in one or more papers as may be to his advantage. Grace marks, shall however, be given only for passing the examination or for earning the higher division and not for passing the examination with distinction.

9. (a) A candidate who fails in the first semester but has secured at least 35 marks separately as well as jointly with internal assessment in not less than 50% of the papers prescribed for that semester shall be permitted to continue his studies in the second semester but he will be required to reappear in the next April/May examination in such papers in which he had failed in the December examination, simultaneously with the second semester examination.

(b) A candidate who fails in the second semester examination but had secured at least 35% marks separately as well as jointly with internal assessment in not less than 50% papers prescribed for that semester shall be allowed to reappear in such papers in which he had failed in April, in two consecutive examinations to be held with semester examinations.

Explanation : Fifty per cent of 5 papers will be taken as 2 and that of 7 papers as 3 for purpose of exemption under this Regulation.

(c) A candidate who is unable to clear the second semester examination even after availing of the chances as specified above shall be required to leave the course.

10. If a candidate is required to reappear in a paper, which is 100% internal assessment, he will be given one more opportunity to qualify in that paper without attending a fresh course of lectures. The work assignment may be determined by the Chairman of the concerned Department/ the Principal of the College.

11. A candidate who failed in the I or II semester examination and is not covered under the 'Reappear' Regulations may be given one more chance and allowed to

appear in the next regular examination without attending a fresh course of lectures but he will have to repeat the entire examination.

If a candidate fails to pass in a semester examination even after the second attempt he will be required to leave the course.

12. The internal assessment awards of a candidate who fails in the examination shall be carried forward to the next examination.

13. Successful candidates shall be classified as under :—

- (i) Those who obtain 75% or more of the total aggregate marks in all the semester Examinations taken together.

.....First Division with distinction.

- (ii) Those who obtain 60% or more of the aggregate marks but less than 75% marks in all the semester examinations taken together.

.....First Division

- (iii) Those who obtain 50% of the aggregate marks but less than 60% in all the semester examinations taken together.

.....Second Division

- (iv) Those who obtain below 50% of the aggregate marks in all the semester examinations taken together.

.....Third Division

As soon as possible after the termination of the examination, the Controller of examinations shall publish a list of the candidates who have passed.

34. Regulations for Bachelor of Homeopathic Medicine and Surgery (B. H. M. S.) (effective from the session 2002-2003) in anticipation of the approval of Senate/Government of India/Publication in the Government of India Gazette.

- a. The duration of the course of instruction for the degree of Bachelor of Homeopathic Medicine & Surgery (B. H. M. S.) including one year compulsory internship shall be five and a half years.
- b. There shall be four examinations viz. First, Second, Third and Fourth. The First Examination will be held at the end of 18 months, the Second Examination at the end of 30 months, third examination at the end of 42 months and fourth examination at the end of 54 months.

After a candidate has passed the final examination, there shall be a compulsory internship as described below :—

COMPULSORY INTERNSHIP

1. The internship shall be undertaken at the Hospital attached to the College and in cases where such Hospital cannot accommodate all of its students for internship such students may undertake their internship in a Hospital or

dispensary run by the Central Government or State Government or local bodies.

2. At the completion of the internship of the specified period and on the recommendation of the head of the Institution where internship was undertaken, the concerned State Board of University, as the case may be, shall issue the Degree to the successful candidate.

3. A person who shall attain the age of 17 years as on 31st December in the year of admission and has passed 10+2 examination from the recognized Boards/Bodies/Councils or any other examination recognized as equivalent to 10+2 examinations by the Panjab University with Physics, Chemistry and Biology after qualifying the entrance test shall be eligible to join the first year class of the Course.

4. The mode of admission to the Course shall be as prescribed by the University from time to time.

5. First Professional B. H. M. S. examination (to be held at the end of 1½ Years) Scheme of Examination :—

- (i) Any undergraduate may be admitted to the First B. H. M. S. examination provided that he has regularly attended the following courses of instruction in the subjects of the examination, theoretical and Practical for not less than one and half years at a Homeopathic Medical College to the satisfaction of the head of such College.
- (ii) The first Professional period shall ordinarily start from 1st day of September and end of February next year. The examination shall ordinarily be completed by the end of March. The Supplementary examination of First Professional shall ordinarily be held within six weeks of declaration of result of main examination. The candidate be allowed three more chances (a total of four chances as per rules) after the First Professional Examination.
- (iii) However, a student failing in one or more subjects of First Professional Examination may be allowed to continue in Second Professional course.
- (iv) A candidate who has failed in B. H. M. S. 1st Professional Annual Examination shall be permitted to continue studies to the next higher class but shall not be allowed to sit for the examination of the next professional till he has cleared all the subjects of the lower class.
- (v) The First Professional B. H. M. S. examination shall be held in the subjects prescribed in the syllabus and the candidates shall be required to pass all subjects.
- (vi) Pass marks in all subjects both Homeopathic and allied medical subjects shall be 50% in each part (written, oral and practical).
- (vii) A candidate securing 75% or above marks in any of the subjects shall be declared to

- receive honours in that subject provided he has passed the examination in the first attempt.
- (viii) The candidates, before presenting themselves for this examination shall obtain a certificate from the Principal of his/her college for having completed the prescribed course of theory and practicals in the prescribed subjects of the first professional examination.
- (ix) A candidate failing in one or more subjects in examination shall be eligible to appear in Supplementary examination. Candidates who fail to pass the First Professional Examination in the admissible chances as mentioned above shall not be allowed to continue their studies. However, in the case of personal illness/accident of a serious nature of a candidate or other unavoidable condition/circumstances, the Vice/Chancellor may permit them one or more chances only in lieu of the chances missed by them for passing the first professional course.
- (x) Second Professional B. H. M. S. Examination (to be held at the end of 2½ Years).
- (xi) The Second Professional Course shall ordinarily start in April following the First Professional Examination and the examination shall be held ordinarily in March of next year after completion of 2½ years.
- (xii) The Second Professional examination shall be held after one year after First Professional Examination in the subjects prescribed in the syllabus and the candidate shall be required to pass all subjects.
- (xiii) The supplementary examination to Second Professional shall be held ordinarily in September and those who remain failed in one or more subjects in Supplementary examination shall be eligible to appear in the subsequent Second Professional Examination.
- (xiv) Pass Marks in all subjects Homeopathic and allied Medical subjects shall be 50% in each part (written, oral and practical).
- (xv) A candidate securing 75% or above marks in any of the subjects shall be declared to receive honours in that subject provided he has passed the examination in first attempt.
- (b) has regularly attended B. H. M. S. 4th Prof. Subjects prescribed in the syllabus and the candidate shall be required to pass all the subjects.
- (ii) If a candidate remains failed in one or more subjects in 4th Professional examination, he/she shall be eligible to appear in those subjects in subsequent 4th Professional Examination which may be held ordinarily after every six weeks or at such time as the competent authority may determine from time to time.
- (iii) Pass marks in all subjects both Homeopathic and allied Medical subjects shall be 50% in each part (written, oral/practical).
- (iv) A candidate securing 75% or above marks in any of the subjects shall be declared to receive honours in that subject provided he has passed the examination in first attempt.

6. Results and readmission to examination.

- (i) Every candidate for admission to an examination shall 21 days before the date fixed for the commencement of the examination send to the authority concerned his application in the prescribed form along with the examination fee.
- (ii) As soon as possible after the examination the examining body shall publish a list of successful candidates arranged in the following manner :—
- (a) The names and roll numbers of the first ten candidates in order of merit and
- (b) The roll numbers of others arranged serially.
- (iii) Every candidate on passing shall receive a certificate in the form prescribed by the examining body concerned.
- (iv) A candidate who appears at the examination but fails to pass in subject or subjects may be admitted to a supplementary examination in the subject or subjects of that part of the examination in which he has failed after six weeks from the publication of result of the first examination on payment of the prescribed fee along with an application in the prescribed form.
- (v) If a candidate obtains pass marks in the subject or subjects at the supplementary examination he shall be declared to have passed at the examination as a whole.
- (vi) If such a candidate fails to pass in the subject or subjects at the supplementary examination he may appear in that subject or subjects again at the next annual examination on production of a certificate (in addition to the certificate required under regulations) to the effect that he had attended to the satisfaction of the principal, a further course of study during the next academic

Fourth Professional B. H. M. S. Examination (to be held at the end of 4½ Years)

- (i) No candidate shall be admitted to the Fourth B. H. M. S. Examination unless :
- (a) he has passed the 3rd B. H. M. S. Examination atleast one year previously.

year in the subject or subjects in which he had failed, provided that all the parts of the examination shall be completed within four chances (including the supplementary one) from the date when the complete examination came into force for the first time.

- (vii) If a candidate fails to pass in all the subjects within the prescribed four chances, he shall be required to prosecute a further course of study in all the subjects and in all parts for one year to the satisfaction of the head of the college and appear for examination in all the subjects.

Provided that if a student appearing for the IV B.H.M.S. examination has only one subject to pass at the end of prescribed chances, he shall be allowed to appear at the next examination in that particular subject and shall complete the examination with this special chance.

- (viii) the examining body may, under exceptional circumstances, partially or wholly cancel any examination conducted by it under intimation to the Central Council of Homeopathy and arrange for conducting re-examinations in these subjects within a period of thirty days from the date of such cancellation.

7. Only those students who fulfill the following requirements shall be allowed to appear in the B.H.M.s. first, second, third & fourth Examinations :—

- (a) of having been on the rolls of the College throughout the period of 1 ½ Years of B.H.M.S. 1st Prof. & one year each of B.H.M.S. 2nd, 3rd & 4th Prof. Examinations.
- (b) of having good character
- (c) of having attended not less than 75% of the full course of :—
 - (i) Lectures delivered ; and
 - (ii) Demonstration and practicals held separately in each subject :

Provided that the Principal of the College shall be empowered to condone shortage up to 5% of the total lectures delivered in each subject in theory & practicals separately which includes all kinds of period i.e. leave, sports, functions etc.

35. Regulations for M. Sc. (Physiology) (effective from the session 2003-2004) in anticipation of the approval of the Senate/Government of India/publication in the Government of India Gazette.

1. The duration of the course for M. Sc. in Physiology shall be two academic years.
2. The system of examination i.e. whether annual or semester, will be adopted as prescribed in the rules.

3. A candidate who has passed one of the following examinations of Panjab University or any other university recognized by the Syndicate as equivalent thereto, shall be eligible for admission to M. Sc. Physiology:—

1. B. Sc. (With Anatomy, Physiology and Biochemistry)
2. B. Sc. Human Biology/Life Science
3. B. Sc. (Honours School in Physiology/ Zoology/Biochemistry/Biophysics/ Biotechnology).
4. B. Sc. with Zoology, Botany, Chemistry/Biochemistry.

4. Qualifying marks for examination

- (i) A candidate shall be declared to have passed the examination if he/she obtains 50% marks in each theory paper and 50% marks in practicals in the 1st year and 2nd year separately.
- (ii) the weightage given towards internal assessment for each theory paper and practical (Part I and Part II) shall be 10% of the total marks allocated. The marks for internal assessment for theory are derived from the cumulative performance in various theory tests conducted from time to time, by the department. The marks for internal assessment for practicals are given based on performance in practical tests conducted by the department from time to time.
- (iii) Thesis would be adjudged as 'Satisfactory' or 'Unsatisfactory' and 'Satisfactory' should be taken as pass.
- (iv) A candidate who fails in the examination (Part I or Part II) after having completed the prescribed courses or fails to appear in the examination for valid reasons can appear in the supplementary examination. The marks for the internal assessment for the completed year will be credited for the said examination.
- (v) If a candidate does not pass in 3 attempts, he/she will not be allowed to continue his studies for the M.Sc. examination in Physiology. However, the maximum duration of the course shall not exceed 3 years from his/her date of admission to the course, The candidate has to pass the Part I examination for being eligible to appear for Part II examination. If the candidate has the thesis accepted but fails in Part II examination, he/ she is not required to submit thesis again.

5. Every candidate for the M. Sc. Physiology Part I examination shall complete the following requirements and intimate the same through Principal of the college;

Of having attended not less than 75% of all the lectures delivered and practicals conducted separately (the course to be counted up to one month before the date of commencement of the examination). The examination in Part II shall be open to a student of the University who produces the following certificates signed by the Head of the Institution :

- (a) Of having passed M.Sc. Part I examination in Physiology;
 - (b) Of having attended not less than (i) 75% of the full course of lectures delivered to his class in each of the prescribed papers (the course to be counted up to one month before the date of commencement of the examination and (ii) 75% of the practical classes prescribed in the syllabus.
 - (c) He/she should have submitted his/her thesis as directed by the Supervisor.
 - (d) A candidate who fails in Part I examination will be allowed to continue his studies in Part II but will be allowed to appear in Part II examination subject to the condition that he/she clears Part I examination.
6. The last date for receipt of admission form and fee with and without late fee as fixed by the Syndicate shall be notified by the Controller of Examinations.
7. Classification of successful candidates :
As soon as possible after the completion of the examination, the Controller of Examinations shall publish a list of successful candidates. Each candidate who appears in Part I or II examination will receive a detailed marks card.
8. The successful candidates shall be classified into divisions as under on the basis of total aggregate marks of Part I and Part II examination taken together :
- (i) Those who obtained : First Division 75% or more having with Distinction passed the examination in first attempt.
 - (ii) Those who obtained : First Division 60% or more of the total aggregate marks but less than 75% marks

- (iii) Those who obtain : Second Division 50% or more of the total aggregate marks but less than 60% marks

.....

36. Regulations for Postgraduate Diploma in Women's Studies (Two-Semester Course) and M.Phil. in Women's/Gender Studies for the examinations of 2002 in anticipation of the approval of various University bodies/Government of India/Publication in the Government of India Gazette.

- (i) POSTGRADUATE DIPLOMA IN WOMEN'S STUDIES TWO SEMESTER COURSE;
- (ii) M.PHIL. IN WOMEN'S STUDIES; AND
- (iii) PH. D. IN WOMEN'S STUDIES

POSTGRADUATE DIPLOMA IN WOMEN'S STUDIES

1. The duration of Postgraduate Diploma in Women's Studies shall be one year divided into two semesters.
2. The first and second semesters shall consist of compulsory/optional papers as prescribed in the Rules/Syllabus.
3. A person who has passed one of the following examinations from this University or from any other University whose examination has been recognized as equivalent to the corresponding examination of this University shall be eligible to join the course :—
 - (i) Bachelor's degree in any faculty with at least 50% marks in the aggregate;
 - (ii) B.A. (pass) with at least 45% marks in Women/Gender Studies or Public Administration or Political Science or History or Economics or Sociology or Psychology or Gandhian Studies or Geography or Philosophy.
4. The Examination for first semester and second semester for Postgraduate Diploma in Women's Studies shall ordinary be held in the months of December, April or May on the dates fixed by the University.
5. The minimum number of marks required to pass the examination shall be 40% in each paper, including project work, field trips, seminars, workshops etc.
6. The first semester examination shall be open to the student who :
 - (i) has been on the rolls of the department during one Semester preceding the first Semester examination;
 - (ii) has attended not less than 66% of the total lectures, seminars, field trips, projects, workshops, etc. in each paper.
7. The Second Semester examination shall be open to the student who :

- (i) has been on the rolls of the Centre during one Semester preceding the second Semester examination;
 - (ii) has attended not less than 66% of the total lectures, seminars, field trips, projects, workshops, etc. in each paper.
 - (iii) has passed the first Semester examination or has fulfilled the conditions of Regulation—.
8. A candidate who fails in the first Semester but has secured at least 35% marks in the paper prescribed for that Semester shall be permitted to continue her/his studies in the second Semester but she/he shall be required to re-appear in the next April/May examination in such papers/examinations in which she/he had failed in the December, simultaneously with the second Semester examination. If she/he fails to pass the first Semester examination even after the second attempt, her/his result for the second Semester examination shall be cancelled and she/he shall be required to leave the course.
- A candidate who fails in the second Semester examination but has secured at least 35% marks in the papers prescribed for that Semester shall be allowed to reappear in such papers she/he failed as a private candidate within one year after completing the course without re-admission.
9. Successful candidates shall be classified into three divisions as under :—
- (i) Those who obtain 60 per cent or more of the aggregate marks will receive a First Division.
 - (ii) Those who obtain less than 60 per cent but not less than 50 per cent of the aggregate marks will receive a Second Division.
 - (iii) Those who obtain less than 50% (per cent) of the aggregate marks will receive a Third Division.
10. A candidate who reappears to clear the paper/s in which she/he has been declared to reappear shall be awarded grace marks, up to 15% of the total marks of the paper/s in which she/he reappears if by such addition the candidate can pass in that paper/s. grace marks upto 1 per cent of the total marks of first Semester and Second Semester examinations shall be added to the aggregate of both first Semester and Second semester examinations for the award of a higher class to a candidate, provided that no grace marks have already been given for passing the examinations either in first Semester or in the Second Semester.
11. A candidate who reappears in the examination

for the purpose of improving the division may be given grace marks up to 1 per cent of the total marks as follows :—

- (i) A candidate who reappears in one Semester only will get 1 per cent of the marks in the paper in which she/he reappears.
- (ii) A candidate who reappears in both the Semester will get 1 per cent of the marks in the papers of both the Semesters taken together :

Provided that no candidate shall be given more than the minimum that may be required for securing the higher division. As soon as possible after the termination of the examination, the Controller of Examinations shall publish a list of the candidates who have passed.

REGULATIONS FOR M.PHIL IN WOMEN'S STUDIES

1. The duration of M.Phil in Women's studies shall be eighteen months divided into three Semesters.
2. The requirements for the first two semesters shall be the same as those for Postgraduate Diploma course.
3. In the third Semester, the student will have to write and present a Dissertation worth two hundred marks within a period of six months after completion of the course work.
4. A candidate who has obtained a Master's Degree in any Faculty with at least 50% marks from this University or from any other University, whose examination has been recognized as equivalent to the corresponding examination of this University, shall be eligible to apply for admission.
5. The students admitted to Postgraduate Diploma in Women's Studies may opt for the Degree of Master of Philosophy in Women's studies provided they have obtained a Master's degree in any faculty with at least 50% marks from this University or from any other University whose examination has been recognized as equivalent to the corresponding examination of this University.

PH.D. PROGRAMME

Ph.D. Programme will be open to Post-graduate students from any faculty. Other requirements will be as per University rules and regulations.

CHANDIGARH - 160014

DATED: 21-4-2006

R.L. DHAWAN, Dy. Registrar (General)

Sealed in my presence with the Common Seal of Panjab University this day Friday 21st April, 2006.

S.S. BARI, Registrar

[ADVT III/TV/72/2006/Exty.]